बढ़ती जनसंख्या के खिलाफ एक और लड़ाई की आवश्यकता: गिरीराज सिंह

वर्ष 9, अंक: 3-4

मूल्य: 30 रुपये

सूर्या बुलेटिन

UPHIN40005

सितम्बर, अक्टूबर-2018

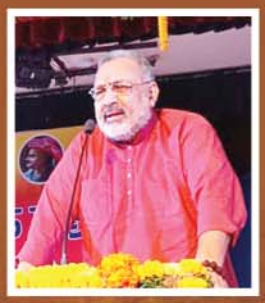

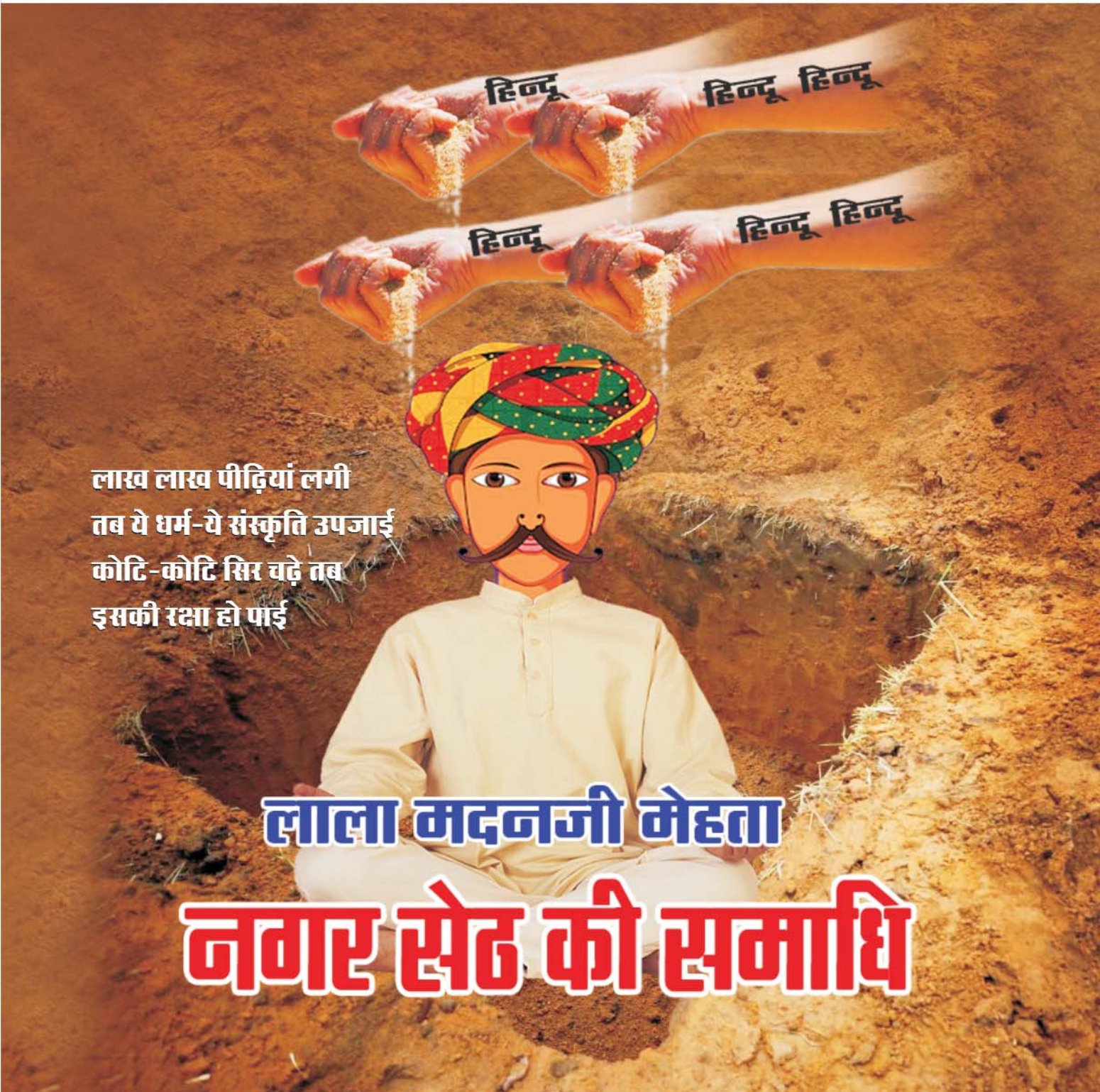

श्री विक्रम यादव

को हिन्दू स्वाभिमान का राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं हरियाणा प्रदेश का अध्यक्ष नियुक्त किये जाने पर

हार्दिक बधाई

एवं

शुभकामनाएं

www.hinduswabhiman.com

सूर्या बुलेटिन

वर्ष: 9, अंक: 3-4
सितम्बर-अक्टूबर 2018

मुख्य मार्गदर्शक
यति मां चेतनानन्द सरस्वती जी

मुख्य संरक्षक मंडल
डॉ. आर.के. तोमर
श्री विनोद सर्वोदय
श्री हरिनारायण सारस्वत
श्री राजेश यादव
श्री नीरज त्यागी

सम्पादक
अनिल यादव

प्रबन्ध सम्पादक
शुभम मंगला

उप-सम्पादक
पृथ्वीराज चौहान (एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट)

सम्पादकीय मंडल
श्री संदीप वशिष्ठ
श्री प्रमोद शर्मा
श्री अक्षय त्यागी
श्री मुकेश त्यागी
श्री दिव्य अग्रवाल
श्री जतिन गोयल

कानूनी सलाहकार
श्री आरपी सिसौदिया (एडवोकेट)
श्री राजकुमार शर्मा (एडवोकेट)

स्वत्वाधिकारी, स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक सीमा यादव द्वारा मै0 सुभाषिनी ऑफसैट प्रिन्टर्स एप-10 पटेल नगर तृतीय, गाजियाबाद से मुद्रित करवाकर प्राचीन देवी मंदिर डासना, गाजियाबाद उ.प्र. से प्रकाशित किया।
टाइटल कोड: UPHIN40005
सम्पादक: अनिल यादव
मो. 9311139274
suryabulletin@gmail.com

नोट: किसी भी लेख की जिम्मेदारी लेखक की खुद की रहेगी। किसी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा गाजियाबाद न्यायालय में ही होगा।

कवर स्टोरी

नगर सेठ की समाधि...

पेज-24

विनाश काले विपरीत बुद्धि

–यति माँ चेतनानंद सरस्वती

पेज-04

हिन्दुओं की 36 बिरादरियों की महापंचायत को दिया समर्थन

पेज-06

वीर बैरागी बन्दा सिंह बहादुर

पेज-10

इकबाल ने एक कलाम लिखा जो बहुत प्रसिद्ध हुआ, जिसका शीर्षक है ''नया शिवालय''

पेज-18

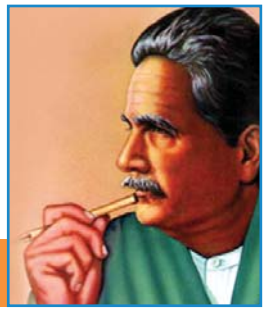

दरबार में जब ओहदों के लिए...

दरबार में जब ओहदों के लिए,
कदमों पे अना गिर जाती है।
कौमों के सर झुक जाते हैं,
चकराकर हया गिर जाती है।

अना उर्दू का शब्द है जिसका अर्थ है स्वाभिमान और हया का अर्थ है लोकलाज। किसी शायर का ये शेर हम हिन्दुओं की आज की स्थिति पर एकदम सटीक बैठता है। अभी देश की संसद ने सर्वोच्च न्यायालय के बहुत ही महत्वपूर्ण और उचित निर्णय को पलटते हुए एससी/एसटी एक्ट को लेकर संशोधित अध्यादेश पारित कर दिया। जब भी जातिवाद की खाईं भरने लगती है, तभी हिन्दुओं के नेता जख्मों को कुरेद कर,उनमें नमक भर देते हैं। ताकि हम यूं ही विवेकहीन, जानवर बनकर उनके पीछे चलते रहें। आज मुझे ब्रिटेन के प्रधानमंत्री रहे विंस्टन चर्चिल के वो शब्द याद आते हैं, जो उन्होंने ब्रिटेन की संसद में भारत की आजादी पर हो रही बहस में कहे थे। उन्होंने कहा था कि Power will go to the hands of rascals rogues and freebooters. All Indian leaders will be of low calibre and men of straw.They will have sweet tongues and silly hearts. They will fight amongst themselves for power and India will be lost in political squabbles, अर्थात् धूर्त,बदमाश एवं लुटेरे हाथों में सत्ता चली जाएगी। सभी भारतीय नेता सामर्थ्य में कमजोर और महत्वहीन व्यक्ति होंगे। वे जुबान से मीठे और दिल से मूर्ख होंगे। सत्ता के लिए वे आपस में ही लड़ मरेंगे और भारत राजनैतिक षड्यंत्रों में गर्क हो जाएगा। आप विंस्टन चर्चिल के ये शब्द उनकी पुस्तकों में और ब्रिटेन संसद के अभिलेखागार में आज भी पढ़ सकते हैं। मेरा दिल बहुत रोता है जब मैं आज विंस्टन चर्चिल की इस भविष्यवाणी को कहीं भी बताता हूं। आखिर क्यों हमने अपने शत्रु की बात को, उसकी भविष्यवाणी को सच हो जाने दिया? आज हमारे बहुत सारे बुजुर्ग जिन्होंने अंग्रेजों की गुलामी देखी थी, वो कहते हैं कि इस आजादी से वो गुलामी लाख गुनी अच्छी थी। अंग्रेजों का एक चरित्र था। वो हमारे शत्रु थे परन्तु बेईमान और भ्रष्ट नहीं थे। उन्होंने इस देश में किसी भी परिपाटी को यूं ही अकारण बरबाद नहीं किया परन्तु हमारे आज के नेताओं ने तो मूर्खता, कायरता, अकर्मण्यता,स्वार्थ,लालच और चाटुकारिता की सभी सीमाओं को तोड़ते हुए सम्पूर्ण कौम के भविष्य को ही बरबाद कर दिया। आज मुझे दुख इस बात का नहीं है कि संसद ने एससी/एसटी एक्ट पर संशोधित अध्यादेश पारित कर दिया। मुझे दुख इस बात का है कि यह अध्यादेश बिना किसी सार्थक चर्चा और विरोध के पारित हो गया। सौ करोड़ लोगों के जीवन से जुड़ा इतना महत्वपूर्ण अध्यादेश यूं ही पारित हो गया। वोट बैंक की राजनीति ने देश की नीति-नियन्ताओं के दिमाग को इस तरह से जकड़ लिया है कि वो अब देश, धर्म और मानवता को अपने चिंतन से बहुत दूर कर चुके हैं। अब उनके पास हमें देने के लिए केवल खोखले शब्द हैं औरआने वाली पीढ़ियों का महाविनाश है। किसी एक भी नेता ने यह कहने का भी साहस नहीं किया कि सर्वोच्च न्यायालय के फैसले का समाज पर जो प्रभाव पड़ेगा, उसका कोई अध्ययन या सर्वेक्षण होना चाहिए। एक भी नेता ने इस अध्यादेश के विरोध में कोई बात संसद में नहीं रखी। मेरी समझ में नहीं आया कि हम सांसद चुनते ही क्यों हैं? यदि हमारे हितों को प्रभावित करने वाले इतने महत्वपूर्ण मुद्दों पर उनकी कोई राय ही नंहीं है, तो लोकतंत्र में उनकी आवश्यकता क्या है और क्यों है। आशा करता हूं कि मेरे ये प्रश्न हर भारतवासी को एक क्षण के लिए सोचने के लिए अवश्य ही विवश करेंगे।

अनिल यादव

कठोर जनसंख्या नियंत्रण कानून के लिये यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज ने लिया

प्रयागराज कुम्भ में प्राणदान का संकल्प

अखिल भारतीय संत परिषद के राष्ट्रीय संयोजक यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज ने एक प्रेस वार्ता में माध्यम से 1 नवम्बर 2018 से चीन जैसे कठोर जनसँख्या नियंत्रण कानून की मांग को लेकर शिवशक्ति धाम डासना में आमरण अनशन की घोषणा की। उन्होंने प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि देश में बढ़ती हुई मुस्लिम जनसँख्या ने सारे राजनैतिक दलों और दलालों को भयभीत कर दिया है। अब भारतवर्ष में कोई भी ऐसा राजनैतिक दल नहीं है, जो हिन्दुओं के हित में कुछ भी करना चाहता हो। अब सब राजनैतिक दल हिन्दुओं को जातियों में बाँट कर और मुस्लिमों के लिये खजाने खोल कर अपनी सत्ता को बनाये रखना चाहते हैं। आज ऐसा लगता है कि सारे राजनैतिक दलों की कोई सांठ-गांठ अरब के राजाओं और मुसलमानों के रहनुमाओं से हो चुकी है और ये हिन्दुओं को भावनात्मक मुद्दों जैसे रामजन्म भूमि आदि में उलझा कर उन्हें उन मुद्दों से दूर रखना चाहते हैं, जो उनके अस्तित्व के लिये जरूरी हैं जिनसे सबसे पहला मुद्दा जनसंख्या नियंत्रण कानून का है। यदि भारतवर्ष में मुस्लिम जनसंख्या यूँ ही बढ़ती रही तो केवल 10 साल में भारत लोकतंत्र के माध्यम से ही इस्लामिक गुलामी में हमेशा के लिये गर्क हो जायेगा और हर हिन्दू का अस्तित्व और सर्वस्व हमेशा के लिये नष्ट हो जायेगा।

उन्होंने कहा कि सबसे दुखद बात ये है कि भारत का हर हिन्दू नेता इस बात को अच्छी तरह से जानते हुए भी अपने स्वार्थ और भय के कारण मौन है और हिन्दू आंख मूंदकर इन नेताओं के भरोसे मस्त बैठा हुआ है।आज हिन्दू को जगाने के लिये किसी दधीचि को अपनी हड्डी दान करनी ही पड़ेगी।हमने साढ़े बारह हजार से अधिक पत्र वरिष्ठ संन्यासियों और कार्यकर्ताओं के रक्त से लिखवा कर नरेंद्र मोदी जी को भेजे तथा पचास हजार से अधिक रक्त पत्र उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायधीश को भेजे परन्तु हमारी आवाज कहीं भी नहीं सुनी गई। हमारे शिष्य पृथ्वीराज चौहान ने इसके लिये सर्वोच्च न्यायालय में जनहित याचिका भी डाली, जो निरस्त कर दी गयी। अब हमारे पास कोई उपाय शेष नहीं बचा है और हम ये अच्छी तरह जानते हैं कि कुछ लोग इस कानून को चुनावी मुद्दा बनाना चाहते हैं। यदि ये चुनावी मुद्दा बना तो ये कानून कभी नहीं बनेगा और हिन्दू हमेशा के लिये खत्म हो जायेगा। अब समय है कि हिन्दू के अस्तित्व को बचाने के लिये कोई दधीचि अपनी हड्डी दान करें। मैं माँ और भोले बाबा से प्रार्थना करता हूँ कि वो इस महान कार्य के लिये मुझे चुने और मेरी बलि को स्वीकार करें।

उन्होंने बताया कि वो एक नवम्बर 2018 से शिव शक्ति धाम डासना में रहकर ही अनशन करेंगे जिसमे वो जल लेते रहेंगे। 13 जनवरी 2019 को वो प्रयागराज कुम्भ में अनशन करेंगे, जिसमे पहले दिन से ही जल का परित्याग करके प्राणदान का संकल्प लेंगे। उन्होंने बताया कि उन्हें इसकी प्रेरणा स्वामी सानन्द से मिली। यदि स्वामी सानन्द एक छोटे से मुद्दे पर अपने प्राण न्यौछावर कर सकते हैं तो मैं संपूर्ण सनातन धर्म के अस्तित्व और मानवता की रक्षा के लिये ऐसा क्यों नही कर सकता?

उन्होंने बताया कि उनके शिष्य पूरी दुनिया के सभी धर्मों के धमार्चार्यो से मिलकर या पत्र लिखकर उनसे अनशन के लक्ष्य के लिये समर्थन मांगेंगे और हिन्दू की पीड़ा को पूरी दुनिया के सामने लाएंगे। प्रेस वार्ता में प्रसिद्ध समाजसेवी डॉ आर के तोमर, ज्योतिषाचार्य दीपक तेजस्वी, अनिल यादव, सतेंद्र त्यागी तथा अन्य उपस्थित थे।

विनाश काले विपरीत बुद्धि

''गर हवाओं से लड़ना इन्हें नहीं आता,
तो लड़ाई चिरागों में होने लगती है।''

ये पंक्तियां किसी मुस्लिम शायर की हैं। पर आज हमारी स्थिति पर बिलकुल ठीक लगतीं हैं। हम सनातन धर्म को मानने वालों की सबसे बड़ी त्रासदी ये है कि हम जिसे अपना रहनुमा समझते हैं, वह सत्ता मिलने के बाद हमें मिटाने के लिए कटिबद्ध हो जाता है। हमारे नेताओं के सत्ता से प्रेम ने आज हमारी यह हालत कर दी है कि अब प्रतिदिन हमारी बेटियों के साथ सामूहिक बलात्कार और उनकी हत्यायें हो रहीं हैं। जगह-जगह पूरे देश में साधु-संतों और पुजारियों की हत्या हो रही है। खुलेआम देश के हर कोने में मुस्लिम बाहुल्य बस्तियों से हिन्दुओं का पलायन हो रहा है। नमाज पढ़ने के नाम पर, खुलेआम सड़कों पर लाखों लोग एकत्रित हो कर हमें भयाक्रांत कर रहे हैं। हर जगह सनातन धर्म की सर्वोच्च धार्मिक आस्था गौमाता की खुलेआम हत्या हो रही है। सौ करोड़ लोगों का यह समाज अब अपने प्रभाव और प्रतिरोधक क्षमता को खो चुका है।

आज एक भी ऐसा नेता नहीं है ,जो इस समाज की रक्षा के लिए कुछ करना चाहता हो, सब केवल और केवल अपनी सत्ता के लिए इस समाज का प्रयोग कर रहे हैं। ये कोई आज की बीमारी नहीं है। ये बीमारी सनातन धर्म में बहुत पुरानी हो चकी है। जब ये देश आजाद होना था, तब सारे हिन्दुओं ने कांग्रेस पर मतलब गांधी और नेहरू पर भरोसा किया और सारे मुसलमानों ने मोहम्मद अली जिन्ना और मुस्लिम लीग पर भरोसा किया। जिन्ना और मुस्लिम लीग ने इस्लाम और मुसलमानों को पाकिस्तान का तोहफा दिया, जो आज धीरे-धीरे सभी तरह से अल्पसंख्यकों विशेषकर हिन्दुओं का कत्लगाह बन चुका है। हमने जिस कांग्रेस और उसके नेताओं गांधी और नेहरू पर भरोसा किया जिन्होंने हमें ये भारतवर्ष दिया, जहां हमारी बहन,बेटी सुरक्षित नहीं। हमारे मंदिर सुरक्षित नहीं, हमारी धार्मिक आस्थाएं

यति माँ चेतनानंद सरस्वती
(श्रीमहंत, सिद्धपीठ प्रचण्ड चण्डी देवी व महादेव मंदिर, डासना)

और मान्यताएं सुरक्षित नहीं हैं। ये गांधी, नेहरू और उनके चाटुकारों का कारनामा है कि आज सौ करोड़ के धार्मिक समुदाय के पास अपना देश कहने के लिए इस पूरी दुनियां में एक इंच की जमीन नहीं है। क्या किसी ने सोचा कि ये कैसे हो गया? हम सबके बाप-दादा इसे देखते रहे और गांधी-नेहरू की असीम महानता का गुणगान करेते रहे। चाटुकारिता की सारी सीमाओं को तोड़ते हुए यहां तक हुआ कि शिव, राम,कृष्ण,और परशुराम के देश में गांधी को राष्ट्रपिता और नेहरू को चाचा घोषित कर दिया गया और हिन्दू समाज इन हिन्दू हंताओं के यशोगान को गाता रहा। जितने भारतवासी अंग्रेजों की गुलामी के सम्पूर्ण समय में मारे गये थे , उससे कई गुना ज्यादा सनातन धर्म के मानने वालों को बंटवारे के नाम पर कत्ल कर दिया गया। लाखों हिन्दू औरतों को लूट लिया गया,उनकी इज्जत-आबरू को बर्बाद कर दिया गया। कितने ही पिताओं ने,कितने ही अपनी बेटियों को,भाइयों ने अपनी बहनों को, अपने ही हाथों से गला घोंट कर,कुओं में धक्का देकर मारा। कितनी ही मांओं ने अपनी बेटियों को अपने हाथ से जहर दिया। और ये कोई केवल एक दिन की या एक समय की कहानी नहीं है बल्कि कभी कम और कभी ज्यादा करके पूरे 1300 से ज्यादा वर्षों से हम हिन्दुओं के साथ यही हो रहा है।

चलिये ये पुरानी बात हो चुकी है। अब कुछ नई बात कर लेते हैं क्योंकि हिन्दू को भूलने की बहुत बुरी बीमारी है। हम कोई भी दुख दर्द बहुत समय तक दिल में नहीं रखते,विशेष रूप से यदि वो व्यक्तिगत हमारा अपना न हो। अब आज की ही बात करते हैं। लाखों हिनदुओं के खून पसीने से एक संगठन तैयार किया गया जिसके आधार में वर्तमान युग के सबसे

बड़े योद्धा और वीर युगदृष्टा वीर सावरकर की तपस्या और उनके विचार थे तथा डॉ हेडगेवार जैसे महान कर्मयोगी का विकट पुरुषार्थ था। लाखों हिन्दुओं ने अपना सर्वस्व इस संगठन को समर्पित किया। जब भी शीर्ष नेतृत्व का आह्वान हुआ, संघ के स्वयंसेवकों ने अपना तन,मन और धन समर्पित किया। केवल और केवल हिन्दू राष्ट्र की स्थापना के स्वप्न को साकार करने के लिए। स्वयंसेवकों की हत्याएं होतीं रहीं और संघ का वर्चस्व बढ़ता रहा। जब भी शीर्ष नेतृत्व ने आह्वान किया तो स्वयं सेवकों ने न रात देखी, न दिन देखा, न सर्दी देखी, न गर्मी देखी, न भूकम्प देखा और ही काल की तरह प्रचण्ड बाढ़ देखी। हर जगह स्वयंसेवकों ने भगवा ध्वज के सम्मान में हर संभव बलिदान दिया। स्वयंसेवकों की घोर तपस्या और अदम्य साहस के चलते संघ एक संगठन से बढ़कर एक परिवार बना और पूरे विश्व में छा गया। आज संघ का प्रचारक भारत का प्रधानमंत्री है।

आज संघ का स्वयंसेवक भारत का राष्ट्रपति है। आज देश की सम्पूर्ण राजनीति पर संघ का वर्चस्व है, परन्तु बह हिन्दू राष्ट्र का पवित्र संकल्प कहां है? अब धर्म लिए लड़ने और मर मिटने का भाव कहां है? जिहादियों और विदेशी षड्यंत्रकारियों को मिटाकर मातृभूमि को पवित्र कर देने का भाव कहां है? वो सब संकल्प कहां हैं,जो भारतवर्ष को जगद्गुरु बनाकर पूरी दुनिया में भगवा पताका फहराना चाहते थे? वो हौसले कहां हैं जो बहन-बेटियों को बलात्कार करके मण्डियों में बेचने वाली घृणित मजहबी विचारधारा को धरा से समाप्त करना चाहते थे? सम्पूर्ण भारतवर्ष को इस्लाम मुक्त अखण्ड भारत बनाने का विचार कहां है?अब यदि कुछ बचा है तो केवल सत्ता में बने रहने की अदम्य लालसा। अब यदि कुछ बचा रह गया है वो है मुस्लिमों की हर तरह से चाटुकारिता और सनातन धर्म से हर तरह का विश्वासघात। यदि कुछ बचा रह गया है तो वह है हिन्दुओं के लिए झूठा अहंकार। आज बचे रह गये हैं, सनातन धर्म को समाप्त करने के षड्यन्त्र। जिनका प्रचण्ड प्रहार हमने अभी भाजपा नीत गठबंधन द्वारा एससी/एसटी एक्ट पर सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध अध्यादेश के रूप में देखा है। इस अध्यादेश ने हिन्दू एकता के स्वप्न को चूर-चूर करके रख दिया है और हिन्दुओं के बीच जातिवाद की खाईं को बहुत बड़ी और मारक

कर दिया है। आज जब हिन्दुओं को एक होकर अपने घर,अपने परिवार,अपनी बेटी और अपने अस्तित्व के लिए लड़ना था, उस समय हमें आपस में लड़ा दिया गया और उन लोगों के रास्तों को जो हमें मिटाकर हमारा सबकुछ हमसे छीन लेना चाहते हैं, उनके रास्तों को आसान कर दिया। अब पता नहीं क्या होगा? कैसे होगा? नासमझ और अपरिपक्व लोग नेताओं के इस षडयंत्र को समझ नहीं सकेंगे और इस एससी/एसटी एक्ट का दुरुपयोग करके अपने स्वयं के लिए महाविनाश का रास्ता खोल देंगे।

मैं कोई बहुत बड़ी विचारक या बुद्धिजीवी नहीं हूं परन्तु मैंने अपने-जीवन के लगभग 20 वर्ष विभिन्न संगठनों के माध्यम से, जिनमें राष्ट्र सेविका समिति,दुर्गावाहिनी,अखण्ड हिन्दुस्थान मोर्चा व सांस्कृतिक गौरव संस्थान प्रमुख हैं, संघ परिवार को दिये हैं। मेरठ जैसे मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र में रहने के कारण मेरा स्वाभाविक लगाव सदैव ही हिन्दुत्व और हिन्दूवादियों के साथ रहा है। मैंने बचपन से यह सपना देखा कि एक दिन संघ के स्वयंसेवक इस देश को हिन्दू राष्ट्र बनायेंगे। मेरी यह आशा स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी के शासन में धूमिल पड़ी परन्तु आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी के शासन में यह आशा धूल धूसरित हो गई। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि हिन्दू एकता और हिन्दू राष्ट्र का स्वप्न इस तरह से मिट्टी में मिल जायेगा। आज पूरे देश के हिन्दुओं में एक अजीब सी निराशा का भाव आ चुका है। ऐसा लगता है कि सम्पूर्ण सनातन संस्कृति और सनातन धर्म अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा में समय व्यतीत कर रहा है।

मेरी समझं में नहीं आ रहा है कि भगवान हम सबकी कैसी परीक्षा ले रहे हैं? क्यों उन्होंने हम सबकी बुद्धि को इतना भ्रष्ट कर दिया है कि हम महाविनाश को सामने देखकर भी बहुत तेजी से उसकी तरफ जा रहे हैं। मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि जो बात मेरी साधारण बुद्धि में भी बैठ रही है, वो बात हमारे देश के कर्णधारों और नीति नियंताओं को कैसे समझ में नहीं आ रही है। सबसे बड़ी निराशा की बात तो ये है कि कैसे हम सब अपने विनाश को यूं स्वीकार कर लिया है। सौ करोड़ जीवित आदमियों का समूह महाविनाश के इन क्षणों में प्रतिरोध की बात तो छोड़ दीजिये, सामूहिक और सार्वजनिक रूप से चिंतन के लिए तैयार भी नहीं है। मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि अब मैं आशा रखूं तो किस तरह से रखूं और किस पर रखूं। शायद अब भगवान भी हमारे मालिक नहीं हैं।

भूमापीठाधीश्वर स्वामी अच्युतानंद तीर्थ जी महाराज ने

हिन्दुओं की 36 बिरादरियों की महापंचायत को दिया समर्थन

और कहा कि इस तरह तो न राममंदिर बनेगा और न ही हिन्दू बचेगा

अखिल भारतीय संत परिषद के राष्ट्रीय संयोजक यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी के आह्वान पर सनातन धर्म की आध्यात्मिक राजधानी हरिद्वार के गौतम फार्म में हिन्दुओं की सभी 36 बिरादरियों की महापंचायत आयोजित की गयी। इसमें पूरे देश से हजारों हिन्दुओं ने भाग लिया। महापंचायत में ब्राह्मण, राजपूत, भूमिहार, बनिया, जाट, गुर्जर, यादव, त्यागी, सैनी, कुम्हार, कायस्थ, कश्यप, गुसाईं, पासी, जाटव, खटीक, वाल्मीकि, लोध, कुर्मी, सुनार, लोहार, मीणा, कहार, महार, खत्री, मोहियाल, नामधारी, सिक्ख, धोबी, जोगी, नाई, जुलाहे, तेली, तम्बोली, भड़भूजे आदि सभी जातियों के हिन्दुओ ने भाग लिया और साथ बैठकर सहभोज के द्वारा छुआछूत की समाप्ति का संदेश दिया। महापंचायत का मुख्य मुद्दा इस्लामिक जिहादियों की बढ़ती हुई गतिविधियों के सामने संपूर्ण राजनैतिक व्यवस्था का दयनीय समर्पण था।

पंचायत का आयोजन जगदम्बा महाकाली डासना वाली के परिवार और श्रीब्राह्मण महासभा ने संयुक्त रूप से किया। महापंचायत की अध्यक्षता ठाकुर विक्रम सिंह जी तथा संचालन हिन्दू स्वाभिमान के राष्ट्रीय महामंत्री अनिल यादव ने किया। महापंचायत के मुख्य संयोजक विक्रम यादव और समन्वयक विजय यादव थे। महापंचायत की सबसे बड़ी बात ये रही कि भूमापीठाधीश्वर स्वामी अच्युतानंद तीर्थ जी महाराज ने महापंचायत को पूरा समर्थन दिया।

महापंचायत को संबोधित करते हुए स्वामी अच्युतानंद तीर्थ जी महाराज ने कहा कि वास्तव में

अब हिन्दू समाज की स्थिति बहुत दयनीय हो चुकी है। आजादी के 71 सालों में अब तक हिन्दू समाज को इस्लामिक जिहादियों से बचाने के लिये एक छोटा सा कदम भी किसी नेता ने नहीं उठाया है बल्कि हर वो काम किया गया है जिससे इस्लाम के जिहादी इस देश में मजबूत हुए हैं। आज पूरे देश का हिन्दू ये सोचने के लिये मजबूर है कि आखिर इस आजादी ने हमें जिहादी आतंकवाद, गौहत्या, धारा 370, लव जिहाद, रोज मरते हुए सैनिकों की लाशें, घटता हुआ हिन्दू और मिटते हुए भारतवर्ष के अलावा दिया क्या है ?

उन्होंने कहा कि जिस तरह से आज भारत में मुस्लिम तुष्टिकरण की पराकाष्ठा हो चुकी है, उससे तो ये लगता है कि अब न तो कभी राममंदिर बनेगा और न ही कभी हिन्दू बचेगा बल्कि बहुत जल्दी यह देश पूर्ण रूप से इस्लामिक हो जायेगा।

पंचायत के उद्देश्य के बारे में बताते हुए यति आयोजन समिति के अध्यक्ष पण्डित अधीर कौशिक जी ने कहा कि यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज के आह्वान पर आयोजित इस पंचायत को हरिद्वार में करने का उद्देश्य हिन्दू समाज की पीड़ा और बेचैनी को संत और धर्मगुरुओं के सामने लाना है। यदि आज भी हिन्दुओं के धर्मगुरु यूँ ही उदासीन बने रहे तो धर्म और इतिहास उन्हें कभी क्षमा नहीं करेगा। सनातन धर्म को छोड़कर बाकी सभी धर्मों के धर्मगुरु अपने धर्म के मानने वालों की रक्षा का प्रयास करते हैं जबकी हिन्दुओं के धर्मगुरु हिन्दुओं के लिये कुछ भी नहीं करते।आज हिन्दुओं के पास न तो राजनैतिक नेतृत्व है और न ही धार्मिक नेतृत्व। नेतृत्व विहीन हिन्दू बहुत तेजी से विनाश की ओर जा रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय इतिहासकार और योगाचार्य डॉ वरुणवीर जी ने महापंचायत को संबोधित करते हुए कहा कि घटती हुई हिन्दू जनसँख्या को अब राष्ट्रीय आपदा घोषित करने का समय आ चुका है। यदि इसी तरह हिन्दुओं की जनसँख्या घटती रही तो बहुत जल्दी हिन्दुओं की यह अंतिम शरणस्थली भी हिन्दुओं से छीन ली जायेगी।अगर ऐसा हुआ तो पूरी दुनिया से सनातन धर्म का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा।

महापंचायत की अध्यक्षता करते हुए ठाकुर विक्रम सिंह जी ने संपूर्ण हिन्दू समाज की तरफ से हिन्दू धर्माचार्यों का आह्वान करते हुए कहा कि अब धर्माचार्य अपने साधनों को धर्म को बचाने के लिये लगायें और इसके लिये वो सबसे ज्यादा बल ज्ञान विज्ञान और संस्कार युक्त गुरुकुल प्रणाली को पुनर्जीवित करें।धर्माचार्यों को अब नेताओ के षड्यंत्रों को विफल करने के लिये आगे बढ़कर समाज में जाना ही होगा।

महापंचायत में जे पी बडौनी, राजेश पहलवान का बहुत सहयोग रहा।

वीर गोकुला जाट

सन् 1666 का समय था और इस्लामिक राक्षस औरंगजेब के अत्याचारों से हिन्दू जनता त्राहि-त्राहि कर रही थी। मंदिरों को तोड़ा जा रहा था, हिंदू स्त्रियों की इज्जत लूटकर उन्हें मुसलमानी बना दिया जाता था। औरंगजेब और उसके सैनिक पागल हाथी की तरह हिन्दू जनता को मथते हुए बढ़ते जा रहे थे। हिन्दुओं पर सिर्फ इसलिए अत्याचार किए जाते थे क्योंकि वे सत्य सनातन वैदिक धर्म के सिद्धांतों को मानते थे।

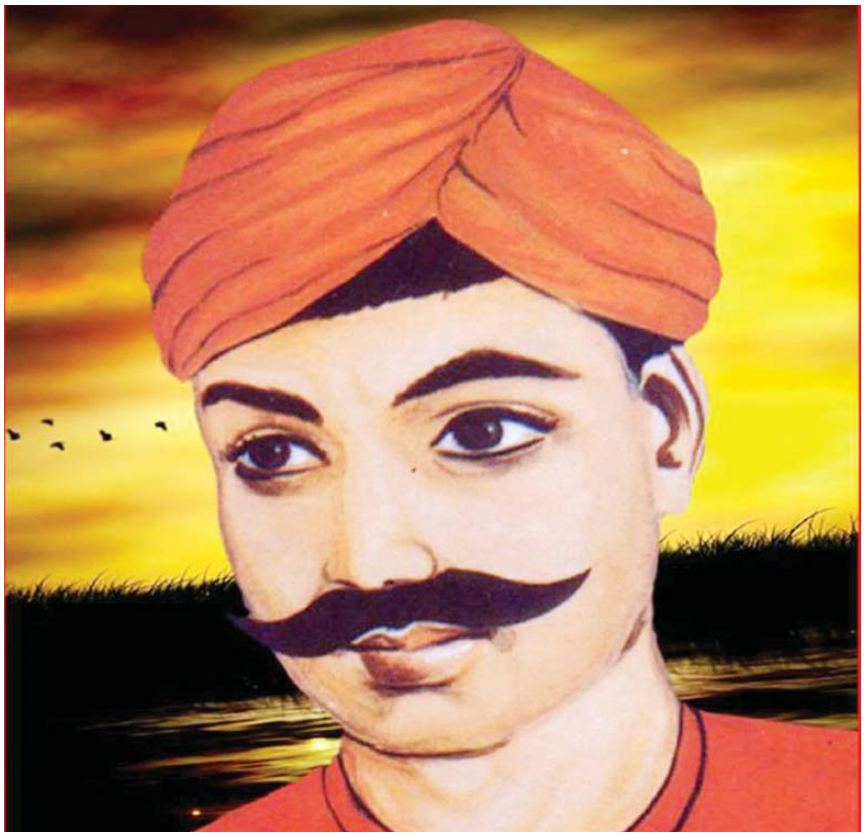

सन् 1666 का समय था और इस्लामिक राक्षस औरंगजेब के अत्याचारों से हिन्दू जनता त्राहि-त्राहि कर रही थी। मंदिरों को तोड़ा जा रहा था, हिँदू स्त्रियों की इज्जत लूटकर उन्हें मुसलमानी बना दिया जाता था। औरंगजेब और उसके सैनिक पागल हाथी की तरह हिन्दू जनता को मथते हुए बढ़ते जा रहे थे। हिन्दुओं पर सिर्फ इसलिए अत्याचार किए जाते थे क्योंकि वे सत्य सनातन वैदिक धर्म के सिद्धांतों को मानते थे।

औरंगजेब अपने ही जैसे क्रूर लोगों को अपनी सेना में उच्च पद देकर हिँदुस्तान को दारुल हरब से दारुल इस्लाम में तब्दील करने के अपने सपने की तरफ तेजी से बढ़ता जा रहा था। हिँदुओं को दबाने के लिए औरंगजेब ने अब्दुन्नवी नामक एक कट्टर मुसलमान को मथुरा का फौजदार नियुक्त किया। अब्दुन्नवी के सैनिकों का एक दस्ता मथुरा जनपद में चारों ओर लगान वसूली करने निकला। सिनसिनी गाँव के सरदार गोकुल सिंह के आह्वान पर किसानों ने लगान देने से इनकार कर दिया, मुगल सैनिकों ने लूटमार से लेकर किसानों के गाय बैल व अन्य पालतू पशुओं तक को खोलना शुरू कर दिया। इस कारण किसानों का मुंगल सैनिकों से संघर्ष शुरू हो गया। तभी औरंगजेब का मुगलिया शैतानी फरमान आया - 'काफिरों के मन्दिर गिरा दिए जाएं'। फलतः ब्रज क्षेत्र के कई अति प्राचीन मंदिरों और मठों का विनाश कर दिया गया। कुषाण और गुप्त कालीन निधि, इतिहास की अमूल्य धरोहरों को तहस-नहस कर दिया गया। अब्दुन्नवी और उसके सैनिक हिँदू वेश मे नगर में घूमते थे और मौका पाकर औरतों का अपहरण करके भाग जाते थे। अब जुल्म की इंतेहा हो चुकी थी। तभी दिल्ली के सिँहासन के नाक तले समरवीर धर्मपरायण जाट योद्धा गोकुला जाट और उसकी किसान सेना ने आततायी औरंगजेब को वैदिक धर्म की ताकत का अहसास दिलाया।

पिंकी चौधरी (भूपेन्द्र तोमर)
राष्ट्रीय अध्यक्ष हिन्दू रक्षा दल

मई 1669 में अब्दुन्नवी ने सिहोरा गाँव पर हमला किया और उस समय वीर गोकुला गाँव मे ही था। भयंकर युद्ध हुआ लेकिन इस्लामी शैतान अब्दुन्नवी और उसकी सेना सिहोरा के वीर जाटों के सामने टिक ना पाई और सारे मुगल अत्याचारी गाजर-मूली की तरह काट दिए गए, मुगलों की सदाबद छावनी जला दी गई। उस अत्याचारी अब्दुन्नवी की चीखें दिल्ली की आततायी औरंगजेब को भी सुनाई दी थी। मुगलों की जलती छावनी के धुँए ने औरंगजेब को अंदर तक हिलाकर

रख दिया। औरंगजेब इसलिए भी डर गया था क्योंकि गोकुला की सेना में जाटों के साथ गुर्जर, अहीर, ठाकुर, इत्यादि भी थे। इस विजय ने मृतप्राय हिंदू समाज में नए प्राण फूँक दिए। औरंगजेब ने सैफ शिकन खाँ को मथुरा का नया फौजदार नियुक्त किया और उसके साथ रदांदाज खान को गोकुल का सामना करने के लिए भेजा। लेकिन असफल रहने पर औरंगजेब ने महावीर गोकुला को संधि प्रस्ताव भेजा।

गोकुला ने औरंगजेब का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया क्योंकि वीर गोकुला कोई सत्ता या जागीरदारी के लिए नहीं बल्कि सत्य सनातन वैदिक धर्म की रक्षा के लिए लड़ रहा था और औरंगजेब के साथ संधि करने के बाद ये कार्य असंभव था। गोकुला ने औरंगजेब का उपहास उड़ाते हुए कहा कि 'अपनी लड़की दे जाओ हम तुम्हें माफ कर देंगे।' अब औरंगजेब दिल्ली से चलकर खुद आया गोकुल से लड़ने के लिए।

औरंगजेब ने मथुरा में अपनी छावनी बनाई और अपने सेनापति हसन अली खान को एक मजबूत एवं विशाल सेना के साथ मुरसान भेजा। ग्रामीण रबी की बुवाई में लगे थे तो हसन अली खाँ ने गोकुला की सेना की तीन गढ़ियों/गाँवों रेवाडा, चंद्ररख और सरकरु पर सुबह के वक्त अचानक धावा बोला। औरंगजेब की शाही तोपों के सामने किसान योद्धा अपने मामूली हथियारों के सहारे ज्यादा देर तक टिक ना पाए और जाटों की पराजय हुई। इस जीत से उत्साहित औरंगजेब ने अब सीधा गोकुला से टकराने का फैसला किया।

औरंगजेब के साथ उसके कई फौजदार और उसके गुलाम कुछ हिंदू राजा भी थे। वीर गोकुला के विरुद्ध औरंगजेब का ये अभियान शिवाजी जैसे महान राजाओ के विरुद्ध छेड़े गए अभियान से भी विशाल था। औरंगजेब की तोपों, धनुर्धरों, हाथियों से सुसज्जित विशाल सेना और गोकुला की किसानों की 20000 हजार की सेना में तिलपत का भयंकर युद्ध छिड़ गया। 4 दिन तक भयंकर युद्ध चलता रहा और गोकुला की छोटी सी अवैतनिक सेना अपने बेढंगे व घरेलू हथियारों के बल पर ही अत्याधुनिक हथियारों से सुसज्जित और प्रशिक्षित मुगल सेना पर भारी पड़ रही थी। इस लड़ाई में सिर्फ पुरुषों ने ही नहीं बल्कि उनकी चौधरानियों ने भी पराक्रम दिखाया था। मनूची नामक यूरोपीय इतिहासकार ने जाटों और उनकी चौधरानियों के पराक्रम का उल्लेख करते हुए लिखा है कि 'अपनी सुरक्षा के लिए ग्रामीण कंटीले झाड़ियों में छिप जाते या अपनी कमजोर गढ़ियों में शरण लेते, स्त्रियां भाले और तीर लेकर अपने पतियों के पीछे खड़ी हो जातीं। जब पति अपने बंदूक को दाग चुका होता, पत्नी उसके हाथ में भाला थमा देती और स्वयं बंदूक को भरने लगती थी। इस प्रकार वे उस समय तक रक्षा करते थे, जब तक कि वे युद्ध जारी रखने में बिल्कुल असमर्थ नहीं हो जाते थे।

जब वे बिल्कुल ही लाचार हो जाते, तो अपनी पत्नियों और पुत्रियों की गरदनें काटने के बाद भूखे शेरों की तरह शत्रु की पंक्तियों पर टूट पड़ते थे और अपनी निशंक वीरता के बल पर अनेक बार युद्ध जीतने में सफल होते थे'। मुगल सेना इतने अत्याधुनिक हथियारों, तोपखाने और विशाल प्रशिक्षित संख्या बल के बावजूद जाटों से पार पाने मे असफल हो रही थी। 4 दिन के युद्ध के बाद जब गोकुला की सेना युद्ध जीतती हुई प्रतीत हो रही थी तभी हसन अली खान के नेतृत्व में 1 नई विशाल मुगलिया टुकड़ी आ गई और इस टुकड़ी के आते ही गोकुला की सेना हारने लगी।

तिलपत की गढ़ी की दीवारें भी शाही तोपों के वारों को और अधिक देर तक सह ना पाई और भरभराकर गिरने लगी। युद्ध में अपनी सेना को हारता देख जाटों की औरतों, बहनों और बच्चियों ने भी अपने प्राण त्यागने शुरू कर दिए। हजारों नारियां जौहर की पवित्र अग्नि में खाक हो गईं। तिलपत के पतन के बाद गोकुला और उनके ताऊ उदय सिँह को 7 हजार साथियों सहित बंदी बना लिया गया। इन सभी को आगरा लाया गया। लोहे की बेड़ियों में जकड़ कर सभी बंदियों को औरंगजेब के सामने पेश किया गया तो औरंगजेब ने कहा 'जान की खैर चाहते हो तो इस्लाम कबूल कर लो और रसूल के बताए रास्ते पर चलो। बोलो क्या इरादा है इस्लाम या मौत?'

अधिसंख्य धर्म-परायण जाटों ने एक सुर में कहा- 'बादशाह, अगर तेरे खुदा और रसूल का रास्ता वही है जिस पर तू चल रहा है तो हमें तेरे रास्ते पर नहीं चलना'

गोकुला की बलशाली भुजा पर जल्लाद की कुल्हाड़ी चली तो हजारों लोगों की चीत्कारों ने एक साथ आसमान को कोलाहल से कंपा दिया। कुल्हाड़ी से कटकर चबूतरे पर गिरकर फड़कती हुई गोकुला की भुजा चीख-चीखकर अपने मे समाए हुए असीम पुरुषार्थ और बल की गवाही दे रही थी। लोग जहाँ इस अमानवीयता पर काँप उठे थे वहीं गोकुला का निडर और ओजपूर्ण चेहरे पर कोई भय नहीं दिखाई दे रहा था।। गोकुला ने एक नजर अपने भुजाविहीन रक्तरंजित कंधे पर डाली और फिर बड़े ही घमण्ड के साथ जल्लाद की ओर देखा कि दूसरा वार करो। दूसरी कुल्हाड़ी चलते ही वहाँ खड़ी जनता चीख पड़ी और फिर गोकुला के शरीर के एक-एक जोड़ काटे गए। और अन्त में गोकुला का सिर काट दिया। यही हाल उदय सिँह और बाकी बंदियों का भी किया गया।

इतिहासकारों ने लिखा है कि इस वीर के पास न तो बड़े-बड़े दुर्ग थे, न अरावली की पहाड़ियाँ और न ही महाराष्ट्र जैसा विविधतापूर्ण भौगोलिक प्रदेश, इन अलाभकारी स्थितियों के बावजूद, उन्होंने जिस धैर्य और रण-चातुर्य के साथ, एक शक्तिशाली साम्राज्य की केंद्रीय शक्ति का सामना करके, बराबरी के परिणाम प्राप्त किए, वह सब अभूतपूर्व व अतुलनीय है। इतिहासकारों ने लिखा है कि भारत के इतिहास में ऐसे युद्ध कम हुए हैं, जहाँ कई प्रकार से बाधित और कमजोर पक्ष, इतने शांत निश्चय और अडिग धैर्य के साथ लड़ा हो, हल्दी घाटी के युद्ध का निर्णय कुछ ही घंटों में हो गया था, पानीपत के तीनों युद्ध एक-एक दिन में ही समाप्त हो गए थे, परन्तु वीरवर गोकुलसिंह का युद्ध तीसरे दिन भी चला।'

गोकुला सिर्फ.जाटों के लिए वीरगति को प्राप्त नहीं हुए थे न उनका राज्य ही किसी ने छीन लिया था, न कोई पेंशन बंद कर दी थी, बल्कि उनके सामने तो अपूर्व शक्तिशाली मुगल-सत्ता, दीनतापूर्वक, सन्धि करने की तमन्ना लेकर गिड़-गिड़ाई थी। शर्म आती है कि हम ऐसे अप्रतिम वीर को कागज के ऊपर भी सम्मान नहीं दे सके। कितना अहसान फरामोश कितना कृतघ्न है हमारा हिंदू समाज !

मित्रो एक बार फिर वो समय आ गया है कि हम अपने पूर्वज वीर गोकुला के जैसा पराक्रम दिखाकर आततायी मलेक्षों व जेहादियों से अपने धर्म, कौम और स्वाभिमान की रक्षा के लिए धर्म युद्ध लड़ें।

वीर बैरागी बन्दा सिंह बहादुर

अपना सर्वस्व लुटा कर राष्ट्रधर्म
कैसे निभाया जाता है...
अपने गुरु के वचनों को सर्वोपरि
कैसे माना जाता है...
और अपने दुश्मन की आँखों में आंखें
डाल कर कैसे खड़ा हुआ जाता है...

कुणाल यादव

यह अगर किसी एक इंसान से सीखना हो तो केवल गुरु गोविंद सिंह जी के प्यारे शिष्य बंदा सिंह बहादुर का ही नाम जुबान पर आता है। कहते हैं कि योद्धा होने से पहले बंदा सिंह बहादुर एक वैरागी थे। तो आइये जानते हैं कि नियति ने माधो दास जैसे वैरागी को भाई बंदा सिंह बहादुर जैसा योद्धा कैसे बना दिया और उन्होंने किस तरह से मुगलों को नाकों चने चबवा दिये थेः

माधो दास से 'बंदा सिंह बहादुर'

माधो दास का जन्म 1670 ई. में कश्मीर स्थित पुंछ जिले के राजौरी क्षेत्र में हुआ। कहते हैं कि वह महज 15 वर्ष के थे, जब उन्होंने एक मृग को अपनी आँखों के सामने प्राण त्यागते हुए देखा। इस घटना ने उन्हें पूरी तरह से विचलित कर दिया। इतना बिचलित कि उन्होंने वैराग्य धारण कर जानकीदास नामक वैरागी को अपना गुरु मान लिया। आगे के कुछ वर्ष जानकीदास के साथ रहने के बाद माधोदास वैरागी रामदास के सम्पर्क में आए तथा उनसे भी आध्यात्म के बारे में बहुत कुछ सीखा।

इसके पश्चात माधो दास ने योगसाधना सीखी तथा नांदेड क्षेत्र में गोदावरी नदी के तट पर अपना आश्रम बनाकर रहने लगे। उधर दूसरी तरफ इस समयकाल में मुगलों के जुल्म बढ़ते जा रहे थे, किन्तु माधोदास को इसकी कोई खबर नहीं थी। वह तो ज्यादातर समय अपनी योगसाधना में लगे रहते थे। इसी बीच अपने दो पुत्रों की शहादत और सिख कौम की सुरक्षा की चिंता से विचलित गुरु गोविंद सिंह जी का नांदेड़ आना हुआ। स्थानीय लोगों द्वारा ने गुरु जी को माधो दास के बारे में बताया। चूंकि, स्थानीय लोग माधोदास से बहुत प्रभावित थे इसलिए गुरु जी ने उससे मिलने की इच्छा जताई। माधोदस को देखते ही गुरु जी समझ गए कि यह एक योद्धा है तथा इसका जन्म वैराग के लिए नहीं अपितु मजलूमों की रक्षा के लिए हुआ है। गुरु जी ने माधो दास को समझाते हुए कहा कि 'राजपूत अगर वैराग धारण कर लेंगे फिर असहाय लोगों की रक्षा कौन करेगा?'

गुरु जी के ज्ञान और उनके मासूम पुत्रों द्वारा जनहित में अपने प्राणों का बलिदान देने की कथा सुन कर माधोदास विचलित हो उठे तथा उन्होंने गुरु जी की बात मान कर शस्त्र उठाने का मन बना लिया। 3 सितंबर 1708 ई को गुरु गोविन्द सिंह जी ने माधोदास को अमृतपान कराने के बाद एक नया नाम दिया, जो था बंदा सिंह बहादुर।

जब रणभूमि में उठाये हथियार

गुरु जी का मार्गदर्शन मिलते ही बंदा सिंह की आँखें खुल गईं। उन्हें चारों ओर बेसहारा लोगों की चीख पुकारें सुनाई देने लगीं। दो मासूम साहिबजादों की शहादत से विचलित मन उन्हें चैन से सोने नहीं देता था। 1709 ई में गुरु गोविन्द सिंह जी के आदेश पर बंदा सिंह बहादुर मुगलों से सिखों की रक्षा करने हेतु पंजाब के लिए निकल पड़े। यहाँ बंदा सिंह ने सिख सेना, मुगलों के आतंक से परेशान हिन्दुओं तथा आम जनता की मदद से मुगलों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। समाना के युद्ध में बंदा सिंह के नेतृत्व में सिख सेना ने मुगलों के लगभग दस हजार सैनिकों

को मार कर यह युद्ध जीत लिया। इस जीत के बाद भले ही सिख सेना के हौंसले बुलंद थे मगर बंदा सिंह बहादुर का मन अभी तक विचलित था। उनके मन की आग अभी तक शांत नहीं हुई थी। इसका कारण था दो छोटे साहिबजादों के हत्यारे वजीर खान का अभी तक जीवित होना।

अपने प्रतिशोध के लिए बंदा सिंह को अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। 1710 ई में बंदा सिंह बहादुर के संरक्षण में सिख सेना ने सरहिंद पर चढ़ाई कर दी तथा चप्पर चिड़ी के युद्ध में बंदा सिंह बहादुर ने सरहिंद के फौजदार वजीर खान को मौत के घाट उतार दिया।

सिख साम्राज्य के विस्तार में भूमिका

वजीर खान की मृत्यु और सरहिंद पर कब्जा करने के साथ ही बंदा सिंह के संरक्षण में सिख साम्राज्य सतलुज से यमुना तक विस्तृत हो गया। बंदा सिंह ने मुखलिसगढ़ नामक एक गाँव बसाया और इसे अपनी राजधानी बना दिया। यहीं पर उन्होंने लोहगढ़ नामक किला भी बनवाया, जिसके कारण मुखलिसगढ़ को लौहगढ़ के नाम से जाना जाने लगा। बंदा सिंह ने मुगलों की मुद्रा के स्थान पर सिख धर्म के सिक्के जारी करवा दिए। बंदा सिंह द्वारा सिख धर्म के नाम से पहली बार सिक्के चलाए गए थे। देखते ही देखते कुछ ही समय में बंदा सिंह ने पंजाब में अपना राज्य स्थापित कर लिया। अगली कड़ी में उन्होंने अपने साथियों को उत्तर प्रदेश के लिए रवाना कर दिया। यहाँ सिखों ने सहारनपुर, जलालाबाद, मुजफ्फरनगर और अन्य आस-पास के इलाकों पर कब्जा करने के साथ मुगलों द्वारा पीड़ित जनता को राहत पहुंचाई। इधर जालंधर और अमृतसर में सिखों ने असहाय लोगों के अधिकारों के लिए युद्ध शुरू कर दिए।

'सुशासन' को रखा सबसे आगे

बंदा सिंह ने शासन सँभालते ही जमींदारी प्रथा को हटा कर किसानों को उनके हिस्से की जमीन लौटा दी। उनका मानना था कि इससे किसान सम्मान सहित अपना जीवन निर्वाह कर पायेंगे। यही नहीं बंदा सिंह के शासन से पूर्व सभी वर्गों के अधिकारी जबरन वसूली तथा घूसखोरी के आदी हो चुके थे, साथ ही व्यवस्था के नियम और तरीके भी पूरी तरह से टूट चुके थे।

सिखों ने अपनी ताकत का सही प्रयोग करते हुए सभी भ्रष्ट अधिकारीयों को हटा कर उनके स्थान पर ईमानदारों को पदभार सौंप दिया। इस शासन व्यवस्था से आम जनता को बहुत राहत मिली।

एक किंवदंति के अनुसार एक बार सदौरा से कुछ पीड़ित लोग अपने जमीदारों के खिलाफ शिकायत ले कर बंदा सिंह के पास आए। पीड़ितों से उनकी फरियाद सुनने के बाद बंदा सिंह ने अपने सैनिक बाज सिंह को उन पर गोली चलाने का आदेश दे दिया।

पीड़ित लोग अपनी फरियाद के बदले बंदा सिंह के ऐसे उत्तर से स्तब्ध रह गए, क्योंकि उन्होंने सुना था कि बंदा सिंह मजलूमों की रक्षा करते हैं। उन्होंने बंदा सिंह से ऐसी प्रतिक्रिया का कारण पूछा तब बंदा सिंह ने उत्तर दिया कि 'आप सब हजारों की संख्या में होकर भी उन मुट्ठी भर जमीदारों के जुल्मों से बचने का उपाय नहीं ढूँढ पाए।'

उसके बाद बंदा सिंह ने सदौरा के युद्ध में सैय्यदों और शेखों को पराजित किया तथा पीड़ितों को उनका अधिकार दिलवाया।

मुगलों की नींद हराम कर दी!

पूर्वी लाहौर से पूरे पंजाब पर सिखों के शासन ने मुगलों की राजधानी दिल्ली और लाहौर के बीच का संचार पूरी तरह बाधित कर दिया था। इस खबर ने मुगल बादशाह बहादुर शाह को पूरी तरह से विचलित कर दिया। उसने पंजाब की ओर कूच कर दिया। बहादुर शाह ने बंदा सिंह को झुकाने के लिए पूरी शाही सेना को लगा दिया। सभी सेनापतियों को ये आदेश दिया गया कि वह शाही सेना में शामिल होकर उसकी ताकत को बढ़ाएं।

बंदा बहादुर जिन दिनों उत्तर प्रदेश की यात्रा पर थे... उन्हीं दिनों मुनिम खान के संरक्षण में मुगल सेना ने सरहिंद पर हमला कर दिया तथा सरहिंद सहित आस पास के इलाकों पर भी अपना कब्जा जमा लिया। बंदा सिंह जब वापिस आये तब उन्होंने अपनी सेना को अंतिम युद्ध के लिए लोहगढ़ में इकठ्ठा किया।

इस युद्ध में सिख सेना ने मुगल सेना को हरा दिया किन्तु, उन्होंने और सेना मंगवाई तथा 60 हजार सैनिकों के साथ लौहगढ़ किले को घेर लिया। हालांकि बंदा सिंह यहाँ से बच निकलने में कामयाब रहे। बाद में मार्च 1715 ई में मुगलों ने गुरदासपुर में स्थित गुरदास नंगल गाँव को चारों तरफ से घेर लिया। यह वही जगह थी, जहां बंदा सिंह अपने साथियों के साथ रुके हुए थे। एक लंबे संघर्ष के बाद अंततः मुगल बंदा सिंह को पकड़ने में कामयाब रहे।

दुश्मनों के सामने नहीं झुकाया सिर और..

दिल्ली ले जाते समय बंदा सिंह को लोहे के पिंजरे में कैद किया गया. दूसरी तरफ बाकी सिखों को जंजीरों से बाँधा गया था। दोबारा कोई बंदा सिंह के रास्ते पर न चल सके। इसके लिए मुगलों ने सिखों को अमानवीय यातनाएं तक दीं। सभी सिखों के दिल्ली पहुँचने पर उन्हें प्राणदान देने के बदले अपना धर्म छोड़ने के लिए दबाब बनाया गया। यही नहीं बंदा सिंह बहादुर के सामने ही उनके सात वर्षीय पुत्र की हत्या कर दी गयी।

अंत में मुगलों ने सारी हदें पार कर दी और बंदा सिंह की आँखें फोड़ कर गर्म सलाखों द्वारा उनके शारीर की त्वचा खींच ली गयी। इतनी असहनीय पीड़ा के बाद भी बंदा सिंह ने दुश्मनों के आगे सिर नहीं झुकाया और मृत्यु को प्यारे हो गये।

असहाय लोगों के अधिकार तथा अपने लोगों की रक्षा के लिए अंतिम साँस तक सीना तान कर दुश्मनों के सामने खड़े रहने वाले बंदा सिंह बहादुर से आने वाली पीढ़ियां निश्चय ही प्रेरणा ग्रहण करेंगी।

धर्म पर बलिदान की सर्वोच्च गाथा

चार साहिब जादे

हम सब जानते हैं कि त्याग और बलिदान का सिख गुरु परंपरा का इतिहास रहा है। दुनिया के इतिहास में सिख गुरुओं के बलिदान का कोई मुकाबला नहीं है। साहस, त्याग और बलिदान का सबसे बड़ा उदाहरण कायम करते हुए एक पिता ने अपने धर्म और मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने दो अनमोल पुत्र रत्नों को हँसते-हँसते दीवार में चुनवा दिया! ऐसे वीर महापुरुष का नाम था, श्री गुरु गोविन्द सिंह जी! सिख समुदाय के दसवें धर्म-गुरु (सतगुरु) गोविंद सिंह जी का जन्म पौष शुदि सप्तमी संवत 1723 (22 दिसंबर, 1666) को हुआ था। उनका जन्म बिहार के पटना शहर में हुआ था।

22 दिसंबर सन् 1704 को सिरसा नदी के किनारे चमकौर नामक जगह पर सिक्खों और मुगलों के बीच एक ऐतिहासिक युद्ध लड़ा गया, जो इतिहास में 'चमकौर का युद्ध' नाम से प्रसिद्ध है। इस युद्ध में सिक्खों के दसवें गुरु गोविंद सिंह जी के नेतृत्व में 40 सिक्खों का सामना वजीर खान के नेतृत्व वाली 10 लाख मुगल सैनिकों की विशाल सेना से हुआ था। यह संसार की अदभुत जंग थी। यह युद्ध इतिहास में सिक्खों की वीरता और उनकी अपने धर्म के प्रति आस्था के लिए जाना जाता है। गुरु गोविंद सिंह ने इस युद्ध का वर्णन 'जफरनामा' में करते हुए लिखा है-' चिड़ियों से मैं बाज लड़ाऊ गीदड़ों को मैं शेर बनाऊं ,सवा लाख से एक लड़ाऊ तभी गोबिंद सिंह नाम कहऊं। यह वीर गाथा उन सुकुमारों की है जिनकी वीरगति को प्राप्त करने के समय (5 वर्ष और 7 वर्ष) अभी दूध के दाँत भी नहीं गिरे थे। जिनके लिए सरदार पांछी ने कहा है- 'यह गर्दन कट तो सकती है मगर झुक नहीं सकती। कभी चमकौर बोलेगा कभी सरहिन्द की दीवार बोलेगी। चमकौर के इस भयानक युद्ध में गुरुजी के

दो बड़े साहिबजादों ने वीरगति प्राप्त कीं। साहिबजादा अजीत सिंह को 17 वर्ष एवं साहिबजादा जुझार सिंह को 15 वर्ष की आयु में गुरुजी ने अपने हाथों से शस्त्र सजाकर धर्मयुद्ध भूमि में भेजा था। जहाँ गुरु गोविंद सिंह जी के दोनों बड़े साहिबजादों अजीत सिंह तथा जुझार सिंह ने अपने धर्म की आन, बान और शान के लिए शहादत प्राप्त की थी। 37 सिखों व गुरुजी और उनके दो बड़े साहिबजादों ने मोर्चा संभाला था। बड़े साहिबजादे भी लड़ाई में गुरु जी की आज्ञा लेकर शामिल हुए व 17 और 15 साल की छोटी उम्र में ही युद्ध में जौहर दिखा कर सदा-सदा के लिए बलिदान हो गए। राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त लिखा था। जिस कुल जाति कौम के बच्चे यूं करते हैं बलिदान। उस का वर्तमान कुछ भी हो परन्तु भविष्य है महान।

सरसा नदी पर बिछुड़े माता गुजरीजी एवं छोटे साहिबजादे जोरावर सिंह जी 7 वर्ष एवं साहिबजादा फतेह सिंह जी 5 वर्ष की आयु में गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हें सरहंद के नवाब वजीर खाँ के सामने पेश कर माताजी के साथ ठंडे बुर्ज में कैद कर दिया गया और फिर कई दिन तक नवाब और काजी उन्हें दरबार में बुलाकर धर्म परिवर्तन के लिए कई प्रकार के लालच एवं धमकियाँ देते रहे। दोनों साहिबजादे

साहस, त्याग और बलिदान का सबसे बड़ा उदाहरण कायम करते हुए एक पिता ने अपने धर्म और मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने दो अनमोल पुत्र रत्नों को हँसते-हँसते दीवार में चुनवा दिया! ऐसे वीर महापुरुष का नाम था, श्री गुरु गोविन्द सिंह जी!

गरज कर जवाब देते, ' हम अकाल पुर्ख (परमात्मा) और अपने गुरु पिताजी के आगे ही सिर झुकाते हैं, किसी ओर को सलाम नहीं करते। हमारी लड़ाई अन्याय, अधर्म एवं जुल्म के खिलाफ है। हम तुम्हारे इस जुल्म के खिलाफ प्राण दे देंगे लेकिन झुकेंगे नहीं। उन्होंने जवाब दिया था धरम न तजहें कभी तुर्क न बने हैं। शीश निज देहे जैसे बड़ों ने दिये हैं। अतः वजीर खाँ ने उन्हें जिंदा दीवारों में चिनवा दिया।

साहिबजादों के बलिदान के पश्चात बड़े धैर्य के साथ ईश्वर का धन्यवाद करते हुए माता गुजरीजी ने अरदास की एवं अपने प्राण त्याग दिए। तारीख 26 दिसंबर, पौष के माह में संवत् 1761 को गुरुजी के प्रेमी सिखों द्वारा माता गुजरीजी तथा दोनों छोटे साहिबजादों का सत्कारसहित अंतिम संस्कार कर दिया गया। छोटे भाई फतेह सिंह ने गुरूवाणी की पँक्ति कहकर दो वर्ष बड़े भाई को साँत्वना दी थी

चिंता ताकि कीजिए, जो अनहोनी होइ। इह मारगि सँसार में, नानक थिर नहि कोइ। जब गुरु गोविंद सिंह जी को यह खबर मिली तब आप के मुख से यह निकला :इन पुत्रन के शीश पर ,वार दिये सुत चार चार मुए तो क्या भया, जीवत कई हजार।

हमारा देश त्याग और बलिदान लिए जाना जाता है और यहां तक के हमारे गुरूओं ने भी देश कौम के लिए अपनी जानें न्यौछावर की हैं। यह कहानियां सिक्खों के बहादुरी के जौहर के हैं जो कौम और देश का निशान बनकर नाम रोशन करता रहेगा। मानवता के इतिहास में साहिबजादों का बलिदान बेमिसाल है और रहेगा। गुरु गोबिंद जी केवल 42 वर्ष जिए लेकिन इतनी छोटी उम्र में ही उन्होंने जातपात व ऊंच नीच का भेद मिटाया। तभी तो उन्होंने हर जाति वर्ग से चुनकर पांच प्यारे बनाए। उनकी सबसे बड़ी देन खालसा पंथ बनाना था। खालसा पंथ ने सबसे अधिक लड़ाई इस्लामिक जेहादियों से लड़ी। उन्होंने मां दुर्गा के सामने गौमाता की रक्षा के लिए प्रतिज्ञा की थी-'यदि देहु आज्ञा तुर्क गाहै खपाऊं,गऊ घात का दोष जग सिउ मिटाऊं।'

हर साल दिसंबर 25 से 27 दिसंबर तक बहुत भारी जोड़ मेला इस स्थान पर (फतेहगढ़ साहिब) लगता है जिसमें 15 लाख श्रद्धालु पहुंच कर साहिबजादों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। 6 व 8 साल के साहिबजादे बाबा फतेह सिंह और जोरावर सिंह जी दुनिया को बेमिसाल बलिदान का संदेश दे गए। वे दुनिया में अमर हो गए। सूरा सो पहचानिये, जो लड़े दीन के हेत। पुर्जा-पुर्जा कर मरे, कबहू ना छोड़े खेत। सवीर की पहचान है कि वह 'दीन' (कमजोर) का रक्षक है टुकड़े-टुकड़े होने पर भी वह कायरता नहीं दिखाता ! अर्थात अपने सिद्धांतों पर अडिग रहता है।

इतिहास की ये घटनाएं हमारी आने वाली पीढ़ी को, हमारी जड़ों से जोड़ेगी। जो इतिहास को भुला देते हैं वे कभी इतिहास रच नहीं सकते हैं। इतिहास वहीं रच सकते हैं जो इतिहास की जड़ों से जुड़े रहते हैं।

धर्मवीर हकीकत राय

वीर हकीकत राय का जन्म 1724 में सियालकोट में लाला बागमल पूरी के यहाँ हुआ। इनकी माता का नाम कोरा था। लाला बागमल सियालकोट के तब के प्रसिद्ध सम्पन हिन्दू व्यापारी थे। वीर हकीकत राय उनकी एकलौती सन्तान थी। उस समय देश में बाल विवाह प्रथा प्रचलित थी,क्योकि हिन्दुओं को भय रहता था कि कहीं मुसलमान उनकी बेटियों को उठा कर न ले जायें। जैसे आज भी पाकिस्तान और बांग्लादेश से समाचार आते रहते हैं। इसी कारण से वीर हकीकत राय का विवाह बटाला के निवासी कृष्ण सिंह की बेटी लक्ष्मी देवी से बारह वर्ष की आयु में कर दिया गया था।

उस समय देश में मुसलमानों का राज था। जिन्होंने देश के सभी राजनितिक और प्रशासनिक कार्यो के लिये फारसी भाषा लागू कर रखी थे। देश में सभी काम फारसी में होते थे। इसी से यह कहावत भी बन गई कि , 'हाथ कंगन को आरसी क्या,और पढ़े लिखे को फारसी क्या'। इसी कारण से बागमल पूरी ने अपने पुत्र को फारसी सिखने के लिये मोलवी के पास उसके मदरसे में पढ़ने के लिये भेजा। वो पढ़ाई में अपने अन्य सहपाठियों से अधिक तेज था, जिससे वो मुसलमान बालक हकीकत राय से घृणा करने लगे।

एक बार हकीकत राय का अपने मुसलमान सहपाठियों के साथ झगड़ा हो गया। उन्होंने माता दुर्गा के प्रति अपशब्द कहे,जिसका हकीकत ने विरोध करते हुए कहा, 'क्या यह आप को अच्छा लगेगा यदि यही शब्द मै आपकी बीबी फातिमा (मोहम्मद की पुत्री) के सम्बन्ध में कहूं। इसलिये आप को भी अन्य के प्रति ऐसे शब्द नही कहने चाहिये। 'इस पर मुस्लिम बच्चों ने शोर मचा दिया कि इसने बीबी फातिमा को गालियां निकाल कर इस्लाम और मोहम्मद का अपमान किया है। साथ ही उन्होंने हकीकत को मारना पीटना शुरू कर दिया। मदरसे के मोलवी ने भी मुस्लिम बच्चों का ही पक्ष लिया। शीघ्र ही यह बात सारे सियालकोट में फैल गई। लोगो ने हकीकत को पकड़ कर मारते-पीटते स्थानीय हाकिम आदिल बेग के समक्ष पेश किया। वो समझ गया कि यह बच्चों का झगड़ा है,मगर मुस्लिम लोग उसे मृत्यु-दण्ड की मांग करने लगे। हकीकत राय के माता पिता ने भी दया की याचना की। तब आदिल

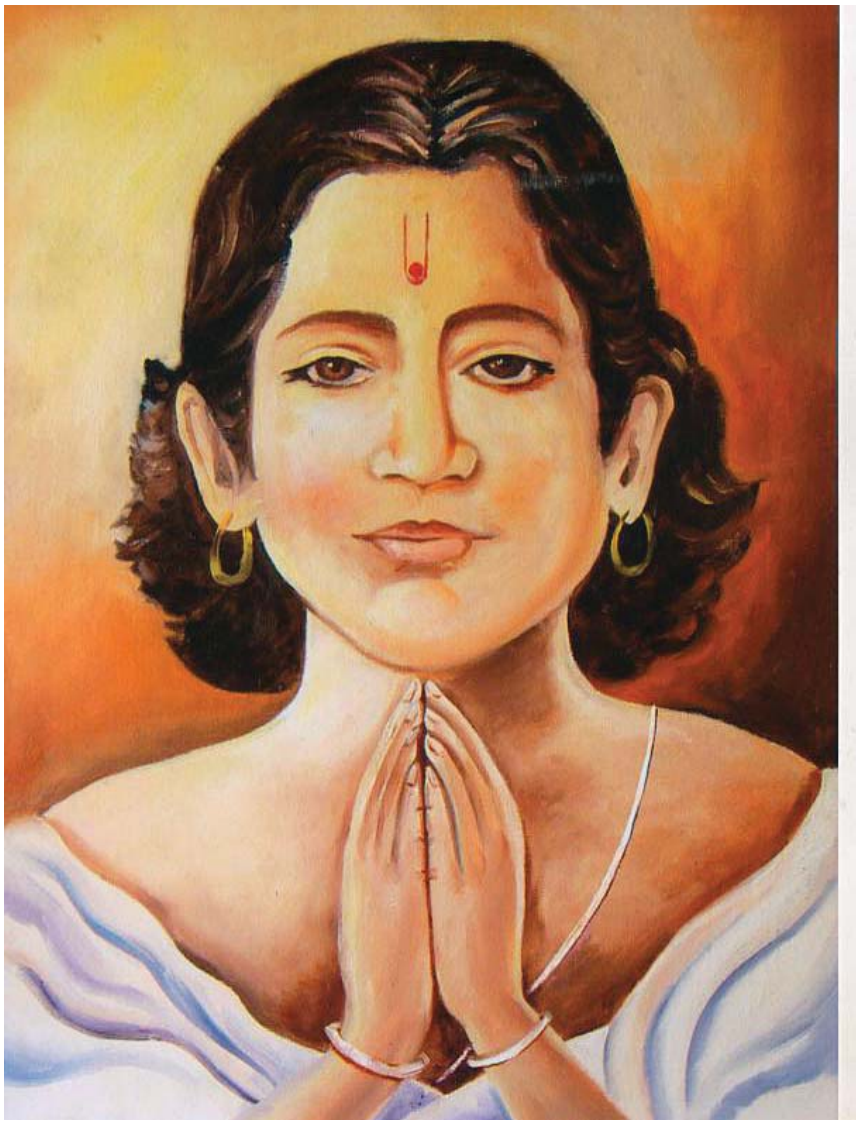

बेग ने कहा, 'मै मजबूर हूँ। परन्तु यदि हकीकत राय इस्लाम कबूल कर ले तो उसकी जान बख्श दी जायेगी।' किन्तु उस 14 वर्ष के बालक हकीकत राय ने धर्म परिवर्तन से इंकार कर दिया। अब तो काजी ,मौलवी और सारे मुसलमान उसे मारने को तैयार हो गए। ऐसे में बागमल के मित्रो ने कहा कि सियालकोट का वातावरण बहुत बिगड़ा हुआ है,यहाँ हकीकत के बचने की कोई आशा नही है। ऐसे में तुम्हे पंजाब के नवाब जकरिया खान के पास लाहौर में फरियाद करनी चाहिये। बागमल ने रिश्वत देकर अपने बेटे का मुकदमा लाहौर भेजने की फरियाद की जो मंजूर कर ली गई। सियालकोट से मुगल घुड़सवार हकीकत को लेकर लाहौर के लिये रवाना हो गये। हकीकत राय को यह सारी यात्रा पैदल चल कर पूरी करनी थी। उसके साथ बागमल अपनी पत्नी कोरा और अन्य मित्रो के संग पैदल चल पड़ा। उन्होंने हकीकत की पत्नी को बटाला उसके पिता के पास भिजवा दिया। कहते है कि लक्ष्मी से यह सारी बाते गुप्त रखी गई थी। परन्तु मार्ग में उसकी पालकी लेकर चल रहे काहरो से लक्ष्मी को सारे घटनाक्रम का पता चला। लक्ष्मी भी हकीकत राय के साथ लाहौर जाना चाहती थी। लेकिन कहार उसे समझा-बुझा कर बटाला ही ले गया।

दूसरी तरफ सियालकोट के मुसलमान भी स्थानीय मौलवियो और काजियों को लेकर हकीकत को सजा दिलाने हेतु दल बना कर पीछे पीछे चल पड़े।सारे रास्ते वो हकीकत राय को डराते धमकाते,तरह तरह के लालच देते और गालिया निकलते चलते रहे। अगर किसी हिन्दू ने उसे सवारी या घोड़े पर बिठाना चाहा भी तो साथ चल रहे सैनिको ने मना कर दिया। मार्ग में जहाँ से भी हकीकत राय गुजरा लोग साथ होते गये।

आखिर दो दिनों की यात्रा के बाद हकीकत राय को बन्दी बनाकर लानेवाले सैनिक लाहौर पहुंचे। अगले दिन उसे पंजाब के तत्कालिक सूबेदार जकरिया खान के समक्ष पेश किया गया। यहाँ भी हकीकत के सियालकोट से आये मुस्लिम सहपाठियों,मुल्लाओं और काजियों ने हकीकत राय को मौत की सजा देने की मांग की। उन्हें लाहौर के मुस्लिम उलमा कभी समर्थन मिल गया। नवाब जकरिया खान समझ तो गया की यह बच्चों का झगड़ा है, मगर मुस्लिम उलमा हकीकत को मृत्यु या

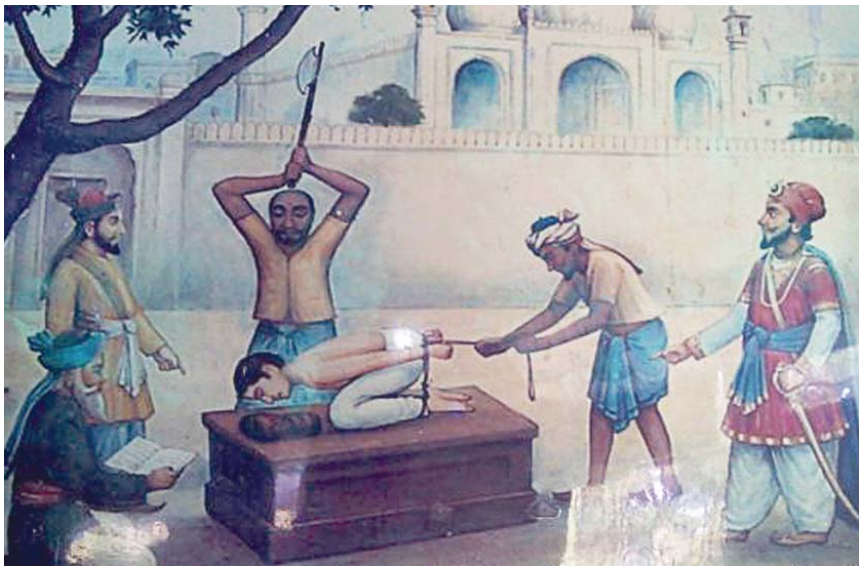

मुसलमान बनने से कम पर तैयार न थे। वास्तव में यह इस्लाम फैलाने का एक ढंग था। सिक्खों के पांचवे गुरु श्री गुरु अर्जुनदेव और नोवै गुरु श्री गुरु तेगबहादुर जी को भी इस्लाम कबूलने अथवा मृत्यु की शर्त रखी गयी थी।

परन्तु यहाँ भी हकीकत राय ने अपना धर्म छोड़ने से मना कर दिया। उसने पूछा,'क्या यदि मै मुसलमान बन जाऊ तो मुझे मौत नही आएगी? क्या मुसलमानो को मौत नही आती?' तो उलिमयो ने कहा, 'मौत तो सभी को आती है।' तब हकीकत राय ने कहा, 'तो फिर मै अपना धर्म क्यों छोडू , जो सभी को ईश्वर की सन्तान मानता है और क्यों इस्लाम कबूलूं जो मेरे मुसलमान सहपाठियों के मेरी माता भगवती को कहे अपशब्दों को सही ठहराता है ,मगर मेरे न कहने पर भी उन्ही शब्दों के लिये मुझसे जीवित रहने का भी अधिकार छीन लेता है।जो दीन दूसरे धर्म के लोगो को गालियां निकालना,उन्हें लूटना,उन्हें मारना और उन्हें पग पग पर अपमानित करना अल्ला का हुक्म मानता हो,मै ऐसे धर्म को दूर से ही सलाम करता हूं।'

इस प्रकार सारा दिन लाहौर दरबार में शास्त्रार्थ होता रहा,मगर हकीकत राय इसलाम कबूलने को तैयार ना हुआ। जैसे जैसे हकीकत की विद्वता, साहस और बुद्धिमता प्रगट होती रही,वैसे वैसे। मुसलमानो में उसे दीन मनाने का उतसाह भी बढ़ता रहा। परन्तु कोई स्वार्थ,कोई लालच और न ही कोई भय उस 14 वर्ष के बालक हकीकत को डिगाने में सफल नहीं हुए।

आखिरकार हकीकत राय के माता पिता ने एक रात का समय माँगा,जिससे वो हकीकत राय को समझा सके। उन्हें समय दे दिया गया। रात को हकीकत राय के माता पिता उसे जेल में मिलने गए। उन्होंने भी हकीकत राय को मुसलमान बन जाने के लिये तरह तरह से समझाया। माँ ने अपने बाल नोचे,रोई,दूध का वास्ता दिया। मगर हकीकत ने कहा, 'माँ! यह तुम क्या कर रही हो। तुम्हारी ही दी शिक्षाओं ने तो मुझे ये सब सहन करने की शक्ति दी है। मै कैसे तेरी दी शिक्षाओं का अपमान करूं। आप ही ने सिखाया था कि धर्म से बढ़ के इस संसार में कुछ भी नही है। आत्मा अमर है।'

अगले दिन वीर बालक हकीकत राय को दोबारा लाहौर के सूबेदार के समक्ष पेश किया गया।सभी को विश्वास था कि हकीकत आज अवश्य इस्लाम कबूल कर लेगा। उससे आखरी बार पूछा गया कि क्या वो मुसलमान बनने को तैयार है। परन्तु हकीकत ने तुरन्त इससे इंकार कर दिया। अब मुस्लिम उलमा हकीकत के लिये सजाये मौत मांगने लगे। जकरिया खान ने इस पर कहा, 'मै इसे मृत्यु दण्ड कैसे दे सकता हूं। यह राष्ट्रद्रोही नहीं है और ना ही इसने हकुमत का कोई कानून तोड़ा है?' तब लाहौर के काजियों ने कहा कि यह इस्लाम का मुजरिम है। इसे आप हमे सौंप दे। हम इसे इस्लामिक कानून(शरिया) के मुताबिक सजा देगें। दरबार में मौजूद दरबारियों ने भी काजी की हाँ में हाँ मिला दी। अतः नवाब ने हकीकत राय को काजियों को सौंप दिया कि उनका निर्णय ही आगे मान्य होगा।

अब लाहौर के उलमाओं ने मुस्लिम शरिया के मुताबिक हकीकत की सजा तय करने के लिये बैठक की। इस्लाम के मुताबिक कोई भी व्यक्ति इस्लाम ,उसके पैगम्बर और कुरान की सर्वोच्चता को चुनौती नही दे सकता और यदि कोई ऐसा करता है तो वो शैतान है। शैतान के लिये इस्लाम में एक ही सजा है कि उसे पत्थर मार मारकर मृत्यु दी जाये। आज भी जो मुसलमान हज पर जाते है,उनका हज तब तक पूरा नही माना जाता जब तक कि वो वहाँ शैतान के प्रतीकों को पत्थर नही मारते। कई मुस्लिम देशो में आज भी यह प्रथा प्रचलित है। लाहौर के मुस्लिम उलेमाओं ने हकीकत राय के लिये भी यही सजा घोषित कर दी।

गणेशदास रचित पुस्तक,चार-बागे पंजाब के मुताबिक लाहौर में बकायदा मुनादी करवाई गई कि अगले दिन हकीकत नाम के शैतान को (संग-सार) अर्थात पत्थरों से मारा जायेगा और जो जो मुसलमान इस मौके पर सबाब (पुण्य) कमाना चाहे आ जाये।

अगले दिन बसन्त पंचमी का दिन था जो तब भी और आज भी लाहौर में भी भरी धूमधाम से मनाया जाता है। वीर हकीकत राय को लाहौर की कोतवाली से निकल कर उसके सामने ही गड्ढा खोद कर कमर तक उसमे गाड़ दिया गया।लाहौर के मुसलमान शैतान को पत्थर मारने का पुण्य कमाने हेतु उसे चारो तरफ से घेर कर खड़े हो गए।हकीकत राय से अंतिम बार मुसलमान बनने के बारे में पूछा गया।हकीकत ने अपना निर्णय दोहरा दिया कि मुझे मरना कबूल है पर इस्लाम नही। इस पर लाहौर के काजियों ने हकीकत राय को संग-सार करने का आदेश सुना दिया। आदेश मिलते ही उस 14 वर्ष के बालक पर हर तरफ से पत्थरों की बारिश होने लगी। हजारो लोग उस बालक पर पत्थर बरसा रहे थे,जबकि हकीकत राम-राम का जाप कर रहा था।शीघ्र ही उसका सारा शरीर पत्थरों की मार से लहूलुहान हो गया और वो बेहोश हो गया। अब पास खड़े जल्लाद को उस बालक पर दया आ गयी की कब तक यह बालक यूं पत्थर खाता रहेगा। उसे उचित लगा की मै ही इसे मार दूं। इतना सोच कर उसने अपनी तलवार से हकीकत राय का सिर काट दिया। रक्त की धारायें बह निकलीं और वीर हकीकत राय बसन्त पंचमी के दिन अपने धर्म पर बलिदान हो गया।

दोपहर बाद हिन्दुओं को हकीकत राय के शव को वैदिक रीति-रिवाजों से संस्कार की अनुमति मिल गई। हकीकत राय के धड़ को गड्ढे से निकाला गया।उसके शव को गंगाजल से नहलाया गया। उसकी शव यात्रा में सारे लाहौर के हिन्दू आ जुटे। सारे रास्ते उस के शव पर फूलो की वर्ष होती रही। इतिहास की पुस्तको में दर्ज है कि लाहौर में ऐसा कोई फूल नही बचा था जो हिन्दुओं ने खरीद कर उस धर्म-वीर के शव पर न चढ़ाया हो। कहते है कि किसी माली की टोकरी में एक ही फूलों का हार बचा था जो वो स्वयं चढ़ाना चाहता था, मगर भीड़ में से एक औरत अपने कान का गहना नोच कर उसकी टोकरी में डाल के हार झपट कर ले गई। 1 पाई में बिकने वाला वो हार उस दिन 15 रुपये में बिका । यह उस आभूषण का मूल्य था। हकीकत राय का अंतिम संस्कार रावी नदी के तट पर कर दिया गया।

जब हकीकत के शव का लाहौर में संस्कार हो रहा था,ठीक उसी समय। बटाला में उसकी 12 वर्ष की पत्नी लक्ष्मी देवी अपने मायके बटाला (अमृतसर से 45 किलोमीटर दूर)में थी। हकीकत राय के बलिदान के पश्चात उसने अपने पति की याद में कुँआ खुदवाया और अपना समस्त जीवन इसी कुएं पर लोगों को जल पिलाते हुये गुजार दिया। बटाला में लक्ष्मी देवी की समाधि और कुँआ आज भी मौजूद है। यहाँ हर वर्ष बसन्त पंचमी को मेला लगता है और दोनों के बलिदान को नमन किया जाता है। लाहौर में हकीकत राय की दो समाधियां बनाई गई। पहली जहाँ उन्हें मारा गया था और दूसरी जहाँ उनका अंतिम संस्कार किया गया था। महाराजा रणजीत सिंह के समय से ही हकीकत राय की समाधियों पर बसन्त पंचमी पर मेले लगते रहे जो 1947 के विभाजन तक मनाया जाता रहा।1947 में हकीकत राय की मुख्य समाधि नष्ट कर दी गई।रावी नदी के तट पर जहाँ हकीकत राय का संस्कार हुआ था,वहाँ लाहौर निवासी कालूराम ने रणजीत सिंह के समय में पुनरूद्धार करवाया था। इससे वो कालूराम के मन्दिर से ही जाने जाना लगा। इसी कारण वो बच गया और आज भी लाहौर में वो समाधि मौजूद है।

हकीकत राय के गृहनगर स्यालकोट में उसके घर में भी उसकी याद में समाधि बनाई गई, वो भी 1947 में नष्ट कर दी गई।

इस धर्म वीर के माता पिता अपने पुत्र की अस्थियां लेकर हरिद्वार गए,मगर फिर कभी लौट के नही आये।

वीर हकीकत राय के बारे में पंजाब में वीर गाथायें लिखी और गायी जाती रहीं। सर्वप्रथम अगरे ने 1772 में हकीकत की गाथा काव्य शैली में लिखी। इसके अतिरिक्त सोहन लाल सूरी,गणेशदास वढेरा,गोकुलचन्द नारंग,स्वामी श्रदां नंद,गण्डा सिंह और अन्य सिख इतिहासकारो ने भी हकीकत राय पर लिखा है।

हकीकत राय के बलिदान का प्रभाव

हकीकत राय का बलिदान से पंजाब में एक नए युग का सूत्रपात हुया। इस बलिदान से हिन्दुओं और सिखों में रोष फैल गया। अहमदशाह अब्दाली के काल में सिखों ने सियालकोट पर आक्रमण कर इसके ईट से ईंट बजा दी। उन्होंने सारे सियालकोट को जला कर राख कर डाला।1748 में जम्मू के राजा रंजीतदेव ने इसे अपने अधिकार में ले लिया। परन्तु इसके बाद भी यह शहर न बस सका। 1849 में अंग्रेजी राज्य स्थापित होने पर ही सियालकोट पुन: बसना आरम्भ हुआ। पुराने समय की सियालकोट में केवल हकीकत राय की समाधि ही शेष थी। शेष सारा नगर दोबारा बसाया गया। वीर हकीकत राय ने भले ही लम्बी आयु न मिली हो। छोटी आयु में ही उसका बलिदान हो गया, परन्तु उसका बलिदानी रक्त आज तक भी प्रति वर्ष बसन्त के पवित्र पर्व पर हिंदू जाति में अमृत्व की भावना का संचार कर रही है और युगों युगों तक करती रहेगी। बसन्तपंचमी के शुभ अवसर पर इस धर्म वीर अमर बलिदानी वीर हकीकत राय और उनकी पत्नी श्री लक्ष्मी देवी को उनके बलिदान दिवस पर शत्-शत् नमन करते है। हमारा सभी का यह परम कर्तव्य है कि हम बाल हकीकत के जीवन चरित्र को अधिक से अधिक लोगो तक पहुंचाए,जिससे हम अभय होकर आगे बड़े।जीवन भले ही छोटा हो ,परन्तु हकीकत के जीवन सा यशस्वी हो।

रवि प्रभात
असिस्टेंट प्रोफेसर, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय ,रोहतक

गुरु तेग बहादुर

औरंगजेब ने इस्लाम स्वीकार न करने पर गुरु तेग बहादुर जी का शीश कटवा दिया था

गुरु तेग बहादुर का असली नाम त्याग मल था। उनकी बहादुरी को देखते हुए उनके पिता गुरु हर गोविंद और सिखों के आठवें गुरु ने उन्हें ये नाम दिया था।

गुरु तेगबहादुर सिखों के नौवें गुरु हैं। गुरु तेगबहादुर का जन्म अप्रैल 1621 में हुआ। सिखों के नौवें गुरु गुरु तेग बहादुर की पुण्यतिथि को शहीदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। गुरु तेग बहादुर 24 नवंबर 1675 को शहीद हुए थे। कुछ इतिहासकारों के अनुसार गुरु तेग बहादुर 11 नवंबर 1675 को शहीद हुए थे। मुगल बादशाह औरंगजेब ने गुरु तेग बहादुर को सिर कटवा दिया था। औरंगजेब चाहता था कि गुरु तेग बहादुर जी इस्लाम स्वीकार कर लें लेकिन गुरु तेग बहादुर ने इससे इनकार कर दिया था। गुरु तेग बहादुर के त्याग और बलिदान के लिए उन्हें 'हिंद दी चादर' कहा जाता है। मुगल बादशाह ने जिस जगह पर गुरु तेग बहादुर का सिर कटवाया था दिल्ली में उसी जगह पर आज शीशगंज गुरुद्वारा स्थित है।

गुरु तेग बहादुर का जन्म 01अप्रैल 1621 को अमृतसर में हुआ था। गुरु तेग बहादुर का असली नाम त्याग मल था। उन्हें 'करतारपुर की जंग' में मुगल सेना के खिलाफ अतुलनीय पराक्रम दिखाने के बाद तेग बहादुर नाम मिला। 16 अप्रैल 1664 को वो सिखों को नौवें गुरु बने थे।

गुरु तेग बहादुर की मुगल बादशाह औरंगजेब से अदावत की शुरूआत कश्मीरी पंडितों को लेकर हुई। कश्मीरी पंडित मुगल शासन द्वारा जबरदस्ती मुसलमान बनाए जाने का विरोध कर रहे थे। उन्होंने गुरु तेग बहादुर से अपनी रक्षा की गुहार की। गुरु तेग बहादुर ने उन्हें अपनी निगहबानी में ले लिया। मुगल बादशाह इससे बहुत नाराज हुआ। जुलाई 1675 में गुरु तेग बहादुर अपने तीन अन्य शिष्यों के साथ आनंदपुर से दिल्ली के लिए रवाना हुए थे। इतिहासकारों के अनुसार गुरु तेग बहादुर को मुगल फौज ने जुलाई 1875 में गिरफ्तार कर लिया था। उन्हें करीब तीन-चार महीने तक दूसरी जगहों पर कैद रखने के बाद पिंजड़े में बंद करके दिल्ली लाया गया जो मुगल सल्तनत की राजधानी थी।

माना जाता है कि चार नवंबर 1675 को गुरु तेग बहादुर को दिल्ली लाया गया था। मुगल बादशाह ने गुरु तेग बहादुर से मौत या इस्लाम स्वीकार करने में से एक चुनने के लिए कहा। उन्हें डराने के लिए उनके साथ गिरफ्तार किए गए उनके तीन ब्राह्मणों अनुयायियों का सिर कटवा दिया गया लेकिन गुरु तेग बहादुर नहीं डरे। उनके साथ गिरफ्तार हुए भाई मति दास के शरीर के दो टुकड़े कर दिए गये, भाई दयाल दास को तेल के खौलते कड़ाहे में फेंकवा दिया गया और भाई सति दास को जिंदा जलवा दिया गया। गुरु तेग बहादुर ने जब इस्लाम नहीं स्वीकार किया तो औरंगजेब ने उनकी भी हत्या करवा दी। अपनी शहादत से पहले गुरु तेग बहादुर ने आठ जुलाई 1975 को गुरु गोविंद सिंह को सिखों का दसवां गुरु नियक्त कर दिया था।

आंकलन इकबाल का-भाग दो

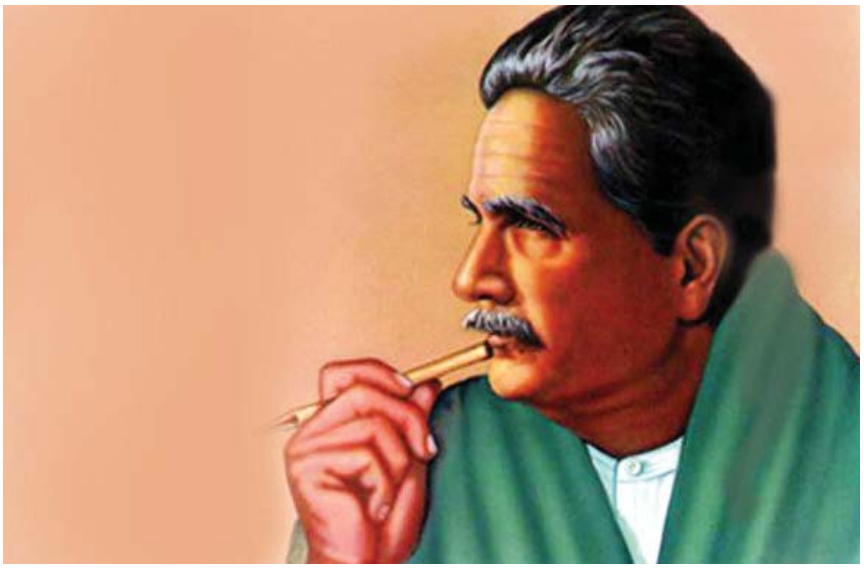

राजेश यादव
(महंत उत्तराधिकारी, डासना देवी मंदिर)

इकबाल ने एक कलाम लिखा जो बहुत प्रसिद्ध हुआ, जिसका शीर्षक है ''नया शिवाला''

सच कह दूं ऐ बिरहमन ! गर तू बुरा न माने
तेरे सरमकदों के बुत हो गए पुराने
अपनों से बैर रखना तूने बुतों से सीखा
जंगो जदल सिखाया वाइज को भी खुदा ने
तंग आके मैंने आखिर दैरो-हरम को छोड़ा
वाइज़ का वाज छोड़ा, छोड़े तेरे फ़साने
पत्थर की मूरतों में समझा है तू खुदा है
खाके-वतन का मुझको हर जर्रा देवता है
आ गैरियत के पर्दे इक बार फिर उठा दें
बिछड़ों को फिर मिला दें, नक्शे-दुई मिटा दें
सूनी पड़ी हुई है मुद्दत से दिल की बस्ती
आ इक नया शिवालय इस देस में बना दें
दुनिया के तीरथों से ऊंचा हो अपना तीरथ
दामाने-आस्मां से इसका कलश मिला दें
हर सुबह उठके गायें मंतर वो मीठे-मीठे
सारे पुजारियों को मय पीत की पिला दें
शक्ति भी शान्ति भी भक्ति के गीत में है
धरती के बासियों को मुक्ति परीत में है

ध्यान दीजिये कि हमें इकबाल बता रहा है कि ''खाके वतन का मुझको हर जर्रा देवता है।'' इस कलाम को भारत में बहुत कोट किया जाता है और इस कलाम के माध्यम से ये बताया जाता है कि इकबाल किस तरह से अमनपसंद और इन्साफ पसन्द व्यक्ति है। एक ऐसा व्यक्ति जो सभी धर्मों के कट्टरपंथियों को नकारने की क्षमता रखता है। इकबाल ने भगवान राम के लिए भी लिखा और उन्हें इमामे हिन्द घोषित किया

लबरेज़ है शराबे-हकीकत से जामे हिंद
सब फल्सफी हैं, खिज़्र-ए-मगरिब के रामे-हिंद
ये हिंदियों के फिक्रे-फलक उसका है असर
रिफअत में आस्मां से भी ऊंचा है बामे-हिन्द
इस देश में हुए हैं हजारां मलक सरिश्त
मशहूर जिनके दम से है दुनिया में नामे-हिंद
है राम के उजूद पे हिन्दोस्तां को नाज
अहले नजर समझते हैं उसको इमामे-हिंद
ऐजाज इस चिरागे-हिदायत का है यही
रौशनतराज सहर जमाने में शामे-हिन्द
तलवार का धनी था, शुजाअत में फर्द था
पाकीजगी में, जोशे मुहब्बत का फर्द था

अभी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघ चालक नेभी भगवान राम के लिए इमामे हिन्द शब्द का प्रयोग करके अपनी अज्ञानता की पराकाष्ठा का परिचय दिया और स्वयं को एक मजाक बना लिया। वैसे ये मोहन भागवत जी की गलती नहीं है जो भी व्यक्ति इस्लाम का उथला अध्ययन करेगा वो कभी भी इस्लाम की सच्चाई को समझ ही नहीं सकता। इसी तरह इकबाल को समझने के लिए इकबाल को समग्र में जानना पड़ेगा। उसके लिए इकबाल की एक गजल ''शिकवा'' को देखिये।

है बजा शेवा-ए-तस्लीम में मशहूर हैं हम
किस्सा-ए-दर्द सुनाते हैं कि मजबूर हैं हम
साजे-खामोश हैं, फरियाद से मामूर हैं हम
नाला आता है अगर लब पे, तो माजूर हैं हम
ऐ खुदा ! शिकवा-ए-अरबाबे-वफा भी सुन ले
खूगरे-हम्द से थोड़ा सा गिला भी सुन ले
हमसे पहले था हब रेतरे जहां का मंजर
कहीं मस्जूद थे पत्थर, कही माबूद शजर
खगरे-पैकरे- महसूस थी इन्सां की नजर
मानता फिर कोई अनदेखे खुदा को क्योंकर
तुझको मालूम है-लेता था कोई नाम तेरा
कुव्वते-बाजु-ए-मुस्लिम ने कियाकाम तेरा
बस रहे थे यहीं सलजूकभी तूरानी भी
अहले-चीं चीन में, ईरान में सासानी भी
इसी मामूरे में आबाद थे यूनानी भी
इसी दुनिया में यहूदी भी थे नसरानी भी

पर तेरे नाम पे तलवार उठाई किसने
बात जो बिगड़ी हुई थी वो बनाई किसने,
थे हमीं एक तेरे मार्का-आराओं में
खुश्कियों में कभी लड़ते, कभी दरियाओं में
दीं अजानें कभी यूरुप के खलीफाओं में
कभी अफरीका के तपते हुए सहाराओं में
शान आंखों में न जंचती थी जहांदारों की
कलमा पढ़ते थे हम छांव में तलवारों की
टल न सकते थे अगर जंग में अड़ जाते थे
पांव शेरों के भी मैदां से उखड़ जाते थे
तुझसे सरकश हुआ कोई भी तो बिगड़ जाते थे
तेग क्या चीज है? हम तोफ से लड़ जाते थे
नक्श तौहीद का हर दिल में बिठाया हमने
फरे-खंजर भी ये पैगाम सुनाया हमने
आ गया ऐन लड़ाई में अगर वक्ते-नमाज
किबला-रू होके जमीं-बोस हुई कौमें-हिजाज
एक ही सफ में खड़े हो गये महमूद-ओ-अयाज
न कोई बन्दा रहा और न कोई बन्दा-नवाज
बन्दाओ-साहिब-ओ-मोहताज-ओ-गनी एक हुए
तीरी सरकार में पहुंचे तो सभी एक हुए
सफा-ए-दहर से बातिल को मिटाया हमने
नौ-ए-इन्सां को गुलामी से छुड़ाया हमने
तेरे काबे को जबीनों से बसाया हमने
तेरे कुरआन को सीने से लगाया हमने
फिरभी हमसे यह गिला है कि वफादार नहीं
हम वफादार नहीं, तू भी तो दिलदार नहीं
उम्मतें और भी हैं, उनमें गुनहगार भी हैं
इज्ज वाले भी हैं, मस्ते-मै-पिन्दार भी हैं
उनमें काहिल भी हैं, गाफिल भी हैं, हुशियार भी हैं
सैकड़ों हैं कि तेरे नाम से बेजार भी हैं
रहमतें हैं तेरी अगियार के काशानों पर
बर्क गिरती है बेचारे मुसलमानों पर
यह शिकायत नहीं, हैं उनके खजाने मामूर
नहीं महफिल में जिनहें बात भी करने का शऊर
कहर तो यह है कि काफिर को मिले हूरो-कसूर
और बेचारे मुसलमां को फकत वादा-ए-हूर
अब तो अल्ताफ नहीं, हम पे इनायात नहीं
बात यह क्याहै कि पहली-सी मदारात नहीं
तेरी महफिल भी गई, चाहने वाले भी गये
शब की आहहें भी गईं, सुबह के नाले भी गये
दिल तुझे दे भी गये, अपना सिला ले भी गये
आ के बैठे भी न थे और निकाले भी गये
आये उश्शाक गयेवादा-ए-फर्दा लेकर
अब उन्हें ढूंए चिरागे-रुखे-जेबा लेकर

आप जब इस कविता को पढ़ेंगे तो आपको पता चलेगा कि इकबाल इस्लाम के जिहाद को कितना आदर, कितना सम्मान और कितना महत्व देते थे। उन्हें इस्लाम के नाम पर दुनिया में मुसलमानों के द्वारा किये गये कत्लो गारत और खून-खराबे पर कितना गर्व था? उन्हें इस बात का कितना दुख था कि अंग्रेज के आने के बादइस देश में काफिरों अर्थात गैर मुस्लिम केपास भी सुन्दर औरतें रहने लगीं। ये इकबाल की और इकबाल से ज्यादा इस्लाम की उस मानसिकता को दर्शाता है कि मुसलमान को कभी भी ये गवारा हो ही नहीं सकता कि काफिरों अर्थात गैर मुसलमानों के पास भी सुन्दर औरतें हों। इस्लाम की यही वो मानसिकता है जो जिहादी भेड़ियों को अपना घर छोड़कर पूरी दुनिया में जंग लड़ने और निर्दोषों को कत्ल करनेके लिए प्रेरित करती है। हम हिन्दुओं को सबसे बड़ा दुर्भाग्य हमारा अज्ञान है जो हमारे विनाश का सबसे बड़ा कारण है। इस अज्ञान से भी ज्यादा खतरनाक इस अज्ञान का अहंकार है, जो हमें किसी भी सही बात को स्वीकार करने नहीं देता। तेरह सौ से ज्यादा साल हो गये मुसलमान लुटेरों को भारतवर्ष पर आक्रमण करते हुए, हमारी बहन-बेटियों काबलात्कार करते हुए और उन्हें मण्डियों में बेचते हुए। मेरे मन में हमेशा यह प्रश्न रहता था कि इस्लाम में ऐसा क्या है जो इन्हें अपनी औरतों, बच्चों और परिवार से दूर करके निर्दोष और गैर मुस्लिमों के देश में जाकर उनका कत्लोगारत करके लूट-मार करने पर मजबूर करता है। जब मैंने इकबाल के साहित्य का गहन अध्ययन किया तो मुझे इसका जवाब मिला। दूसरों को लूटने,मिटाने और बरबाद करके उनकी औरतों को लूट लेने की नृशंसता को इस्लाम के मानने वाले कितना महानकार्य मानते हैं। हमें इकबाल को पढ़कर ही समझा जा सकता है। जरा '' शिकवा '' के जवाब भी पढ़िये...

जवाबे-शिकवा

दिल से जो बात निकलती है असर रखती है
पर नहीं, ताकते-परवाज मगर रखती है
जिनको आता नहीं दुनियां में कोई फन, तुम हो
नहीं जिस कोम को परवा-ए-नशेमन तुम हो
बिजलियां जिसमें हो आसूदा वो खिरमन तुम हो
बेच खाते हैं जो असलाफ के मदफन तुम हो
हो निको-नाम जो कब्रों की तिजारत करके
क्या न बेचोगे तो मिल जायें सनम पत्थर के
मुनफअत एक है इस कौम की, नुकसान भी एक
एक ही सबका नबी, दीन, भी, ईमान भी एक
हरम-ए-पाक भी, अल्लाह भी, कुरआन भी एक
कुछ बड़ी बात थी होते जो मुसलमान भी एक
फिर्काबंदी है कहीं, और कहीं जाते हैं
क्या जमाने में पनपने को यहीं बाते हैं।

ये इकबाल का शिकवा और जवाबे शिकवा उन लोगों को जरूर समझना और पढ़ना चाहिये जो अल्लाह और ईश्वर को एक ही बताते हैं। आइए अब कुछ बात इकबाल के राष्ट्रवाद की भी हो जाए। हमें ये समझना पड़ेगा कि यह इकबाल की नहीं बल्कि इस्लाम की विचारधारा है।

वतानियत

यानी वतन बहैसियत एक सियासी वसव्वुर के
इस दौर में मय और जाम और है जम और
साकी ने बना के रविशे लुत्फो सितम और
मुस्लिम ने तामीर किया अपना हरम और
तहजीब के आजर ने तरशवाए सनम और
उन ताजा खुदाओं में बड़ा सबसे वतन है
जो पैरहन उसका है वो मजहब का कफन है
ये बुत कि तराशीदए तहजीबे नवी है
गारत गरे काशानए दीने नबवी सलअम है
बाजू तिरा तौहीद की कुव्वत से कवी है
इस्लाम तिरा देश है तू मुस्तफवी है
नज्जारए देरीना जमाने को दिखा दे
ऐ मुस्तफवी खाक में उस बुत को मिला दे
हो कैदे मकामी तो नतीजा है तबाही
रह बहर में आजादे वतन सूरते माही
है तर्के वतन सुन्नते महबूबे इलाही
दो तू भी नबव्वत की सदाकत पे गवाही
गुफ्तारे सियासत में वतन और ही कुछ है
इरशादे नबव्वत में वतन और ही कुछ है
अकवाम में जहां में है रकाबत तो इसी से
तस्खीर है मक्सूदे तिजारत तो इसी से

हर हिन्दू को, हर राष्ट्रवादी भारतीय नागरिक को समझना चाहिये कि सार्वजनिक रूप से ''खाके वतन का मुझको हर जर्रा देवता है '' कहने वाला इकबाल जब मुसलमानों के बीच होता है तो वह वतनको सबसे बड़ा बुत बताकर उसे बर्बाद करने का आह्वान करता है। यदि हमने इकबाल को नहीं समझा तो हम इस्लाम को कैसे समझोंगे?

आस्था पर कानून का हमला: निशाने पर सबरीमाला

केरल की पृष्टभूमि को हम सब जानते हैं,सर्वप्रथम लव जिहाद को कानूनी मान्यता केरल उच्च न्यायालय द्वारा दी गयी।वहाँ इस्लामिक जिहादियों व वामपंथियों को एक खतरनाक गठजोड़ है जिसके चलते वहाँ लगातार अनुसूचित व आदिवासियों के धर्मपरिवर्तन व हिन्दू बेटियों को टारगेट करने का प्रयास लगातार चलता रहता है।सबरीमाला मन्दिर इस धर्म विरोधी कार्य में एक बहुत बड़ा रोड़ा है।

सत्य तो ये है कि सबरीमाला मन्दिर किसी भी जातीय परम्परा से बिल्कुल अलग है वहाँ किसी भी जाति का व्यक्ति दो मुट्ठी चावल दे कर नियम से व्रत रख कर रुद्राक्ष जैसी एक माला पर जप करता है, उसको इस नियम के पालन के समय नंगे पैर रहना होता है व जमीन पर सोना होता है। जो इस नियम को पूर्ण कर दीक्षित हो जाता है वह स्वामी कहलाता है।एक बार यदि किसी भी जाति का व्यक्ति दीक्षित होकर स्वामी बन जाता है तो हर जाति का व्यक्ति दीक्षित व्यक्ति को स्वामी ही कह कर बुलाता है।यदि कोई रिक्शाचालक भी दीक्षित हुआ तो उसको रिक्शावाला कहना घोर पाप माना जाता है।जिसकी वजह से हर जाति के व्यक्ति की भगवान अयप्पा में अटूट आस्था और पूर्ण विश्वास है।इसी कारण धर्मपरिवर्तन करवाने वालों की दाल वहाँ नही गल पा रही।

भगवान शिव व भगवान विष्णु के मोहिनी रूप से उत्पन्न सन्तान हैं भगवान अयप्पा जो सबरीमाला के मंदिर में ब्रह्चार्य अवस्था का पालन करते हैं।सामान्य जीवन मे भी जो व्यक्ति ब्रह्चार्य का पालन करता है उसको महिलाओ के संसर्ग का निषेध होता है।कानून की परिभाषा में देव प्रतिमा एक लीगल पर्सन है जिसके अधिकारों का हनन नही किया जा सकता।

उपरोक्त तथ्य इस बात से सत्य सिद्ध हो जाता है कि महिलाओं के प्रवेश को लेकर सबरीमाला मन्दिर को न्यायालय तक खींच कर लाने वाला मुख्य व्यक्ति इंडिया यंग लॉयर्स एसोसिएशन का अध्यक्ष नौशाद अहमद खान है। जो महिलाएं मन्दिर में प्रवेश का प्रयास कर रही हैं वो इस्लाम व ईसाई धर्म

श्रीमती परमोश यादव

की अनुयायी है। इसके ठीक विपरीत केरल की सड़कों पर हजारों हजार हिन्दू महिलाएं हैं जो सबरीमाला में महिलाओ के प्रवेश का विरोध कर रही हैं।

उच्चत्तम न्यायालय के 5 सदस्य बेंच में से 4:1 का निर्णय आया,साधुवाद की पात्र न्यायाधीश इंदु मल्होत्रा ने महिला होते हुए भी धर्म की मूल आत्मा को समझते हुए कहा कि 'धर्म को तर्क की कसौटी पर नही कसा जा सकता'

स्पष्ट है कि धर्म आस्था व विश्वास का विषय है। जहाँ आस्था और विश्वास कमजोर पड़ता है वहाँ धर्म का हनन होता है और जब किसी धर्म को कमजोर करना हो तो उसके आध्यात्मिक आस्थाओं पर प्रहार किया जाता है। सबरीमाला मन्दिर मे इस्लामिक जिहादी व वामपंथी यही करने का प्रयास कर रहे हैं। सत्य सनातन वैदिक संस्कृति में महिलाओं को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया है। हमने हमेशा गार्गी व अहिल्याबाई जैसी विदुषी महिलाओ को सम्मान दिया है।सनातन संस्कृति में स्त्री पूज्या है भोग्या नही वेदों में बहुत स्पष्ट है कि महिलाएं यज्ञ सम्पादित करा सकती हैं। वेदों का पठन व पाठन कर सकती हैं।

शस्त्र विद्या में महिलाओं को निपुण होना अनिवार्य बताया गया है।पुरुष शासक की तरह ही शासन करने का समान अधिकार महिलाओ को दिया गया है।सिर्फ सत्य सनातन वैदिक संस्कृति में महिलाओं को स्वमवर अर्थात अपना वर स्वमं चुनने का अधिकार दिया गया और जाति व्यवस्था इसमे कभी बाधक नही थी। माँ सीता के स्वमवर में रावण जो कि जाति से ब्राह्मण था भी आमन्त्रित था। सत्य सनातन वैदिक संस्कृति के मानने वाले माँ जगदम्बा के उपासक हैं हम ही है जो माँ कामख्या में माँ के रजस्वला रूप की उपासना करते हैं।

क्योकि वैज्ञानिक रूप से इस तथ्य को कोई भी अस्वीकार नही कर सकता कि जब कोई स्त्री रजस्वला होती है तो वह उस समय बहुत पवित्र और ऊजार्वान होती है इस लिए उसको विश्राम की अवस्था मे रहने के लिए बताया गया है।रजस्वला अवस्था में होने पर ही एक स्त्री माँ बनने की प्रक्रिया के लिए तैयार होती है।सनातन संस्कृति में माँ का स्थान भगवान के समक्ष ही बताया गया है।

सनातन संस्कृति के मानने वालों ने 1300 वर्षो की गुलामी झेली लगातार अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्ष रत रहे परन्तु आज यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि आज भी हम राजनैतिक गुलामी में ही जी रहे हैं।हमारे यहाँ न सती प्रथा थी न पर्दा प्रथा न बाल विवाह न रात्रि विवाह न भ्रूण हत्या हमे अपनी बेटियों को जन्म देते ही मार देना पड़ता था मात्र इस डर से की कही वो किसी मुगल लुटेरे के हाथ न लग जाये। आज भी धर्म को लेकर जो मिथ्या प्रचार किया जा रहा है वो मात्र आध्यात्मिक रूप से हमे कमजोर करके हमे गुलाम बनाने का प्रयास जोरो पर है।जिसका ज्वलन्त उदाहरण सबरीमाला मन्दिर है। परिवार की स्त्रियां का अपने ही परिवार के पुरषों के प्रति ही प्रतिद्वंदता का जो ये भाव उतपन्न किया जा रहा है यह एक घातक षडयंत्र मात्र है क्योकि स्त्रियां ही धर्म की वाहक हैं।

एक परवार तब धर्मपरायण बनता है जब उस परिवार की स्त्रियां धर्म परायण होती हैं।माँ ही अपनी संतानों को धर्म का पालन और संस्कार सीखा सकती है और एक धर्म का पालन करने वाला व्यक्ति ही धर्म, देश व समाज के प्रति अपने नैतिक कर्तव्यों को समझ सकता है। धर्म में आस्था व विश्वास विहीन व्यक्ति पशु समान है। इसलिए आस्था हर कानून से ऊपर है।

केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह जी को उनके आवास पर सूर्या बुलेटिन के संपादक अनिल यादव जी (छोटे नरसिंहानंद) व नीरज त्यागी जी ,हरिनारायण सारस्वत जी ने हिन्दुओं की एकमात्र आवाज सूर्या बुलेटिन पत्रिका भेंट की।

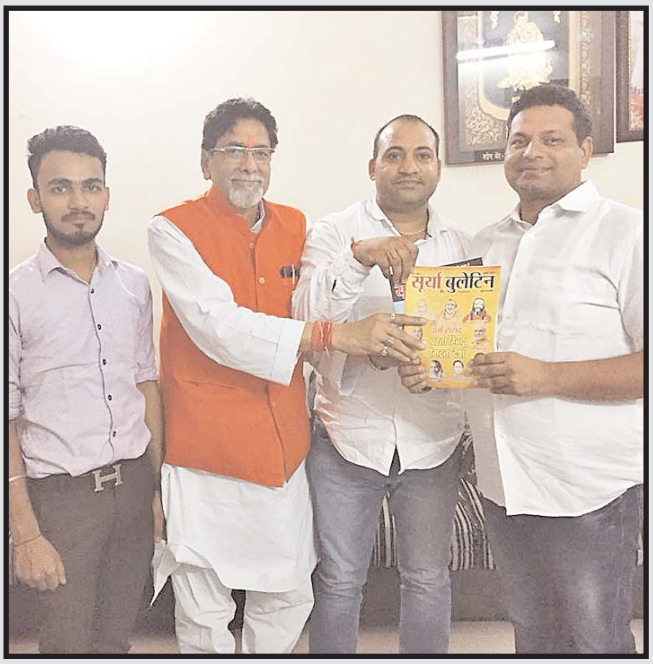

पूर्व एसएसपी गाजियाबाद दीपक कुमार जी को उनके आवास pac 41वी वाहनी गाजियाबाद पर सूर्या बुलेटिन के संपादक अनिल यादव जी (छोटे नरसिंहानंद) व संरक्षक डॉ आर के तोमर,अमन गोयल ने हिन्दुओ की एकमात्र आवाज सूर्या बुलेटिन पत्रिका भेंट की।

सूर्या बुलेटिन के मुख्य सम्पादक अनिल यादव जी व संरक्षक डॉ आर के तोमर जी ने नोएडा के एसएसपी अजय पाल शर्मा जी को डासना देवी मंदिर की पत्रिका सूर्या बुलेटिन भेंट की व पत्रिका के उद्देश्य बताये।

सूर्या बुलेटिन के मुख्य सम्पादक अनिल यादव व संरक्षक डॉ आर के तोमर जी ने एसपी सिटी गाजियाबाद श्लोक कुमार जी को डासना देवी मंदिर की मासिक पत्रिका भेंट की।

मीडिया व भारत सरकार द्वारा कश्मीर में सैनिकों के बलिदान पर मुस्लिम तुष्टिकरण करना बहुत ही दुखद

बाबा परमेन्द्र आर्य (पूर्व सैनिक)

हमारे सैनिक सन् 1990 से कश्मीर में इस्लामिक आतंकवाद व इस्लामिक जेहाद से लड़ रहे हैं। 1990 मे पाकिस्तान के पाले हुए इस्लामिक जेहादियों ने कश्मीरी पंडितों को निशाना बना कर उनके घरों पर हमले करने शुरू कर दिये। पंडितों को उस समय के अत्याधुनिक हथियार एके 47 से मारा जाने लगा पंडितों की बहन बेटियों के साथ सरेराह सामूहिक बलात्कार किये जाने लगे। पंडितों के गांवों को निशाना बना रहे आतंकवादियों को कश्मीर के मुस्लिमो ने अपना पूरा समर्थन दिया। किसी भी मुसलमान ने कश्मीर में पंडितो के साथ हो रही मार काट व लूट पाट का विरोध नहीं किया। कश्मीर में पुलिस प्रशासन फेल हो गया पंडितों को अपना घर-बार, सामान , जमीन जायदाद, सेब के बाग , व्यापार छोड़कर कश्मीर से अपनी जान बचाकर भागना पड़ा और कश्मीर पंडितों की सभी प्रापर्टी पर वहां के मुस्लिमों ने अपना कब्जा कर लिया। जब कश्मीर के हालात बेहद खराब हो गये तो केन्द्र सरकार ने राष्ट्रपति शासन लगा दिया और सेना को वहां शान्ति स्थापित करने के लिए भेज दिया। लेकिन आज 28 साल हो गये है कश्मीर में आजतक शांति स्थापित नहीं हो पायी और सेना आज भी आतंकवादियों को ढूंढ ढूंढ कर मार रही है। इस लड़ाई में भारतीय सेना , भारतीय सीमा सुरक्षाबल , केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल , इंडियन

तिब्बत बॉर्डर पुलिस व जम्मू कश्मीर पुलिस और अन्य अर्द्धसैनिक बलों के जवान अपना बलिदान देकर पाकिस्तान परस्त इस्लामिक जेहादियों को मुंह तोड़ जवाब दे रहे हैं और इन जेहदियों को प्रतिदिन हमारे सैनिक मौत के घाट उतार रहे हैं।

सेना के लेफ्टिनेंट उमर फैयाज जो कश्मीर मे पुलवामा के रहने वाले थे। अपने किसी नजदीकी रिश्तेदार के यहां शादी में शामिल होने छुट्टी पर गए थे। इस दौरान 10 मई 2017 को आतंकवादियों ने उनकी गोली मारकर हत्या कर दी। पूरे देशवासियों ने अपने एक युवा अधिकारी के शहीद होने पर दुख जताया। सभी टीवी चैनल पर लेफ्टिनेंट उमर फैयाज को दो दिन तक दिखाया गया और सभी समाचार पत्रों में भी इस खबर को प्रमुखता से प्रकाशित किया गया था। सभी को दिखाना भी चाहिए क्योंकि लेफ्टिनेंट उमर फैयाज भारत सेना के सदस्य थे। मुझे इसमें कोई आपत्ति नही है ।

लेकिन वर्ष 2017 में सेना के 83 जवानों ने इस्लामिक जेहादियों से लड़ते हुए अपने प्राणों की आहुति देकर देश की रक्षा की। लेकिन इन सभी चैनलों पर उन सैनिकों के बलिदान को नहीं दिखाया गया । सिर्फ बहुत छोटी सी खबर दिखाई जाती है कश्मीर में आतंकवादियों से लड़ते हुए दो जवान शहीद हो गए हैं या दिखाया जाता है आज आतंकवादियों से मुठभेड़ में तीन जवान शहीद ओर चार आतंकवादी ढेर। इसी तरह से समाचार पत्रों में भी बहुत छोटी सी खबर लिखी होती है । ये सब इसलिए होता है क्योंकि देश पर अपना सब कुछ बलिदान करने वाला हिन्दू धर्म या सिख धर्म का मानने वाला होता है।

इसी तरह की एक और घटना है । सेना का एक जवान औरंगजेब जो पुंछ का रहने वाला था छुट्टी लेकर ईद मनाने अपने घर जा रहा था। 14 जून 2018 को औरंगजेब का अपहरण कर आतंकवादी बर्बरतापूर्ण हत्या कर देते हैं। इस हत्या की पूरा देश निन्दा करता है। सभी समाचार चैनलों पर औरंगजेब की शहादत को दो दिन तक दिखाया जाता है। सभी समाचार पत्रों के मुख्य पृष्ठ पर औरंगजेब से संबंधित खबर छपती है। छपनी भी चाहिए क्योंकि ये सेना के सैनिक के सम्मान का प्रशन हैं।

जनवरी 2018 से जुलाई 2018 तक कश्मीर में आतंकवादियों से लड़ते हुए सेना के 43 जवान

वीरगति को प्राप्त हो जाते हैं। लेकिन इन जवानों के बारे में समाचार चैनलों पर कोई बड़ी खबर नहीं दिखाई जाती हैं और न ही उन जवानों के नाम लिए जातें हैं । हम सभी देशवासियों को उन जवानों के बारे में कुछ नहीं बताया जाता है वो कहां के रहने वाले हैं उनका परिवार क्या करता है। बस इन जवानों का इतना ही दोष होता है की वो हिन्दू धर्म के मानने वाले होते हैं। देश के ऊपर अपनी जान न्यौछावर करने वाले हिन्दू सिपाहियों के परिवार वालों से मिलने कोई एक दो टीवी चैनल वाले ही जाते हैं । यदि कोई मुस्लिम समुदाय का सिपाही शहीद होता है तो सभी चैनल वाले उनके घर के बहार खड़े रहते हैं।

मेरी शिकायत उन सभी चैनलों से और उन सभी समाचार पत्रों से है ,जो सिपाहियों के बलिदान को हिन्दू मुस्लिम में बांट रहे हैं । हिन्दू सैनिकों के शहीद होने पर उनको भी उतना ही कवरेज दो जितनी मुस्लिम सैनिकों को देते हो।

इस तरह से मेरी शिकायत भारत सरकार से भी है । जब औरंगजेब छुट्टी जाते समय आतंकवादियों के द्वारा मार जाता है । तो उनके परिवार वालों से मिलने स्वयां रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमन जाती हैं । भारतीय सेना के जनरल बिपिन रावत भी औरंगजेब के परिवार से मिलने जाते हैं ।

कश्मीर में आतंकवादियों से लड़ते हुए उनके ही कार्यकाल में सैकड़ों हिन्दू सिपाहियों ने अपना बलिदान दिया है। लेकिन रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमन व जनरल बिपिन रावत वीरगति को प्राप्त हिन्दू सैनिकों के घर परिवार वालों से मिलने नहीं गए । हिन्दू सिपाही का पार्थिव शरीर जब उनके गांव पहुंचता है तो उस जिले का जिलाधिकारी भी उनके अंतिम संस्कार में शामिल नहीं होता है और उस परिवार से मिलने भी नहीं जाता है । कभी-कभी तो क्षेत्र के विधायक व सांसद भी हिन्दू शहीद जवानों के घर पर मिलने नहीं जातें हैं । रक्षामंत्री जी व सेना के जनरल द्वारा इस तरह का भेद भाव बहुत ही दुखद व शर्मनाक है।

अब जल्द ही केन्द्र सरकार के लिए चुनाव भी होने वाले हैं । सैनिकों के परिवार भी इन सभी हरकतों को देख रहे हैं और पूरा देश इस तरह के तुष्टिकरण से क्षुब्ध है। अभी भी समय है सरकार व मीडिया हिन्दू सैनिकों के साथ सौतेला व्यवहार बंद करे ।

इतिहास के पन्नों से

लाख लाख पीढ़ियां लगी
तब ये धर्म-ये संस्कृति उपजाई
कोटि-कोटि सिर चढ़े तब
इसकी रक्षा हो पाई

लाला मदनजी मेहता

नगर सेठ की समाधि

नगर सेठ की समाधि

जब भी इतिहास के पन्नों में झांकने का प्रयास करता हूं तो एक से बढ़कर एक दर्दनाक कहानी सामने आती है। जब विदेशी मुस्लिम लुटेरे हमारे देश पर आक्रमण करते थे, तब राजाओं और उनके सैनिकों का जो होता था, वो होता ही था परन्तु आम जनता पर कितना क्रूर अत्याचार किया जाता था, उसके सहस्रांश की कल्पना भी हमारे देश के नीति नियंन्ताओं और बुद्धिजीवियों को नहीं है। आज मैं आपको सोमनाथ विध्वंस के समय की कुछ घटनाओं से परिचित करवाता हूं, जरा देखिये...

अनिल यादव
संपादक-सूर्या बुलेटिन

खम्भात नगर निर्जीव- सा हो गया था। बहुत लोग अमीर के सम्मुख युद्ध में कट मरे थे। बहुत नगर छोड़ कर भाग गये थे, बहुतों को अमीर बंदी बनाकर ले गया था। खम्भात में ऐसा एक भी घर न था जो इस समय श्मसान रूप न हो गया हो। कितने ही घर तो लुट-पिट कर बिलकुल बरबाद हो गए थे। आज उनमें दिया जलाने वाला ही कोई नहीं बचा था। बहुतों में से रोने-पीटने तथा हाय-हाय की आवाज आ रही थी। किसी का पुत्र,किसी का पति,किसी का भाई,किसी की पत्नी, किसी की पुत्री, किसी की पुत्रवधू महमूद बन्दी बना कर ले गया था। ऐसा प्रतीत होता था, मानो सारे नगर पर मृत्यु और अवसाद की काली छाया छा गई हो।

नगर-सेठ मदनजी महता एक प्रतिष्ठित और करोड़पति व्यापारी थे। उनकी युवती पुत्री कंचनलता को किस प्रकार अमीर के बर्बर सिपाही सेठानी की आंखों के सामने ही उठा ले गए थे।

आज प्रभात ही से लोगों की भीड़ नगर-सेठ की हवेली के सामने एकत्र होने लगी थी। जो लोग नगर छोड़कर भाग गए थे,उनमें से बहुत से लौटे आ रहे थे। नगर में बिजली की भांति यह खबर फैल रही थी कि नपगर सेट मदन जी महता अपनी प्रतिष्ठा और कुल मर्यादा भंग होने से खिन्न हो जीवित समाधि ले रहे हैं। जो लोग कभी घर से बाहर न निकलते थे, वे भी आज यह अतर्कित-अकल्पित बात सुनकर सेठ के घर की ओर दौड़े आ रहे थे। ठठ-के-ठठ लोग घर के सामने जुट गए थे। परन्तु सेठ की विशाल अट्टालिका में पूर्ण शान्ति और नीरवता विराज रही थी। आज वहां नित्य काम करने वाले दर्जनों मुनीम,गुमाश्ते,सिपाही,नौकर-चाकर और व्यापारियों की चहल-पहल न थी। न आज तराजू पर रुपये और अशरफियां ही तोली जाकर थैलियों में भरी रहीं थीं। न गुमाश्ते खोटे-खरे रुपये परख रहे थे। इस समय ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो घर में कोई जीवित पुरुष है ही नहीं।

सेठ के मकान का द्वार उन्मुक्त था। द्वार पर कोई द्वारपाल या मनुष्य न था। फिर भी उपस्थित जनों में से किसी का साहस भीतर जाने का नहीं होता था। द्वार पर लाल कुंकुम की थाप दी हुई थी। आंगन में एक गहरा गड्ढा खुदा हुआ था।

उपस्थित भीड़ में भी सन्नाटा था। सबकी आंखें आंसुओं से तर तथा जिह्वा जड़ थी। किसी को किसी बात की जिज्ञासा न थी। सब कोई सब-कुछ जानते थे। जैसे सबके हाथ किसी दैत्य ने सी दिये हों। जैसे सबको लकवा मार गया हो। प्रत्येक व्यक्ति की आंसुओं से भरी आंखें चौक में खुदे गड्ढे पर जमीं हुईं थीं। प्रतिकार, जिज्ञासा, और कौतूहल की भावना जैसे प्रथम ही उस गड्ढे में दफना दी गई थी।

धीरे-धीरे एक वृद्ध ब्राह्मण को आता देख सब लोग उत्सुकता से उधर ही देखने लगे। ब्राह्मण का सब शरीर उघाड़ा था, उसव पर साफ जनेऊ चमक रहा था,कमर में उज्ज्वल धोती थी। उनकी उम्र बहुत थी। आंखें धुधली हो गईं थी। सिर और मूंछों के बाल रुई के पहल की भांति सफेद थे। ब्राह्मण का सिर और पैर भी नंगे थे। पैर में जूता और सिर पर पगड़ी नहीं थी। शोक और वृद्धावस्था के बोझ को,मानो न सहकर ब्राह्मण सोमदेव लाठी टेकते हुए थकित भाव से चले आ रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था, मानो ब्राह्मण जिधर आ रहे हैं, उससे विपरीत दिशा की ओर उनका मन मचल रहा है। ब्राह्मण का मुख बर्फ के समान ठंडा और सफेद हो गया था। धीरे-धीरे लाठी टेकते हुए ब्राह्मण भीड़ के निकट आए। सबने उनको चुपचाप मार्ग दे दिया,किसी ने उनसे कुछ

कहने का साहस नहीं किया। वृद्ध ब्राह्मण ने पौर पर पहुंच द्वार पर लाल कुंकुम की थाप देखी, उनकी आंखों से आंसू बहने लगे। आंसू पोंछ वे कुछ देर द्वार पर खड़े रहे। उन्होंने अपने कांपते हुए दोनों हाथ आकाश की ओर उठाए, आंसुओं से धुंधली आंखों को सूर्य की ओर फिराया, और कुछ होंठों-ही-होंठों में कहा। उनका कंठ-स्वर फूटा नहीं, केवल होठ फड़ककर रह गए।

भीड़ में दो-चार गणमान्य नागरिक थे। उनमें कुछ सेठ के सम्बन्धी और मित्र भी थे। उन्होंने आगे बढ़कर ब्राह्मण से धीरे और अवरुद्ध स्वर से कहा, ''उन्हें रोकिए।''

ब्राह्मण ठिठक गए। उनकी आंखों के आंसू सूख गए। उन्होंने धीमे किन्तु स्थिर स्वर से कहा-

''नहीं''

और उन्होंने स्थिर कदम से घर में प्रवेश किया। कुछ देर तक सन्नाटा रहा। इस समय अनगिनत मनुष्य वहां एकत्रित हो सांस रोके खड़े थे।

सबने देखा, नगर सेठ धीरगति से बाहर आए। उन्होंने सफेद पोशाक धारण की थी। मस्तक पर केशर का तिलक था। उनका मुख भावहीन, दृष्टि पृथ्वी पर झुकी हुई और दोनों हाथ नीचे लटके हुए थे। आगे कुल-पुरोहित वृद्ध ब्राह्मण, पीछे सेठ क्रमबद्ध-सब नीरव, सब शान्त।

प्रमुख नागरिक, सेठ, सम्बन्धी सब पौर चढ़कर भीतर गए। नगर सेठ ने कहा-

''भाइयों , कहा-सुना माफ! अपनी लाज आंखो में लेकर आज मैं जा रहा हूं। ईश्वर आप लोगों को सुखी रखे।''

इतना कह कर सेठ गड्ढे में उतर गए। वह बीच में रखे एक आसन पर पलौथी मारकर बैठ गए। फिर उन्होंने उच्च स्वर में कहा,'' भाइयों, जो पुरुष अपनी पुत्री की रक्षा नहीं कर सका, उसके सिर पर एक-एक मुट्ठी धूल डालने की कृपा करो।''

सबसे प्रथम ब्राह्मण ने दोनों मुट्ठियों में मिट्टी उठा, मन्त्र-पाठ कर मिट्टी डाली, उन्होंने सब मनुष्यों को भी मिट्टी डालने के लिए प्रेरित किया। आंखों से चौधार आंसू बहाते और हे देव, हे प्रभु का अस्फुट उच्चारण करते सैकड़ों मनुष्यों ने मिट्टी भरनी प्रारम्भ कर दी। देखते-ही-देखते नगरसेठ मदनजी महता ने जीवित समाधि ले ली। इस भयानक कृत्य को देख उपस्थित जनता मूढ़ बनी एक दूसरे की ओर देखती रह गई।

इसी समय आग-आग का शोर उठा। लोगों ने देखा, नगर-सेठ की विशाल अट्टालिका भीतर-भीतर ही सुलग उठी है। उसमें से चारों ओर अग्नि की लपटें निकल रहीं हैं। लोग बाहर-भीतर दौड़ने लगे। इसी समय ऊपर खंड का द्वार खुला उसमें एक स्त्री-मूर्ति आ खड़ी हुई। उसके सम्पूर्ण वस्त्र घी में तर थे। और वस्त्रों से आग की लपटें निकल रहीं थीं। मानो उसने अग्नि का परिधान पहना हो। उसका मुख तेज से दैदीप्यमान था। लटें बिखरीं थी। अचल वाणी से उसने कहा-

'' जो कोई आग बुझाने का प्रयत्न करे, उसे भगवान सोमनाथ की आन है। मेरे पति ने अपना मार्ग चुना और मैंने अपना। अप्रतिष्ठा की असह्य ज्वाला में जलने की अपेक्षा इस आग में जीते जी जल मरना आज का सबसे बड़ा सुख है।''

एकाएक शत-सहस्त्र कंठ स्वर खुल गए। वज्र गर्जना की भांति एक स्वर से सब बोल उठे, '' जय अम्बे, जय सती मां, जय जय!'

आग की लपटों ने घर को चारों ओर से घेर लिया। लोग दूर हट कर खड़े हो यह अद्भुत अघटित दृश्य देखने लगे। केवल वृद्ध ब्राह्मण वहीं अडिग खड़े रहे। बहुत भारी कड़ाके के साथ छत गिरी और लोगों ने उसी के साथ एक स्वर सुना, 'जय देव!'

सारी हवेली धांय-धांय जल रही थी, उसी के साथ घर की गृहलक्ष्मी, वधुएं और बालाएं चुपचाप जल रहीं थीं। साथ में कुलगुरु भी। कहीं हाहाकार न था, कहीं रुदन न था।

एक धीमी आवाज बीच-बीच में कुछ देर सुनाई देती रही, 'जय देव, जय-जय देव!' और फिर वह भी बंद।

कैदियों का काफिला

खम्भात, प्रभास और सौराष्ट्र से एक लाख बीस हजार कैदियों के काफले को साथ लेकर महमूद पाटन की ओर लौटा था। इस काफले में सबसे आगे साहसिक और ऐसे कैदी थे, जिन्होंने जमकर अमीर की सेना का मुकाबला किया था या वे जो कोई खास विरोध करते हुए पकड़े गए थे, या जिन्होंने अमीर के बहुत से आदमियों को मार डाला था और उनके विरुद्ध खास रिपोर्ट दर्ज थी। इन सबकी कमर में एक लम्बी रस्सी बंधी हुई थी, और उस रस्सी से ये सब एक-दूसरे से जुड़े हुए थे। इनके पीछे हाथ बंधे साधारण सिपाही, नागरिक, धुना-जुलाहे, ऐरे-गैरे सब पचमेल कैदी थे, जो बहुत से हथियार बंद सिपाहियों से घिरे चल रहे थे। इनके पीछे रोगी, घायल और स्त्री कैदी थे, जो बांधे हुए तो न थे पर हथियारबंद पैद और घुड़सवार सिपाहियों से घिरे चल रहे थे।

सबके पीछे बड़े-बड़े प्रसिद्ध सेनापति, सरदार, धनी, सेठ-साहूकार और गिरासदार व्यक्ति थे। ऐसे दो-दो या तीन-तीन कैदी, एक-एक सवार के सुपुर्द थे। वे उनकी कमर में रस्सी बांध, उनको मजबूती से घोड़े की काठी में अटका, नंगी तलवार उनके सिर पर घुमाते हुए बढ़े चले जा रहे थे।

मीलों तक लम्बाई में इन अभागे कैदियों की कतार बनी हुई थी। उनमें बहुत से जार-जार रोते, आंसू बहाते, छाती कूटते, गिरते-पड़ते साथियों के साथ घिसटते बढ़े चले जा रहे थे। रोगी और घायलों की दशा और भी खराब थी। उनमें बहुत से चलने-फिरने के योग्य भी न थे। फिर भी उन्हें सवारों के साथ घिसटना पड़ता था। उनके घावों की मरहम-पट्टी भी नहीं की गई थी। बहुतों के घाव सड़ गए थे। बहुतों के घावों से लोहू बह रहा था। परन्तु वहां कोई किसी का मिजाजपुर्सा न था।

स्त्रियों की दशा और भी दर्दनाक थी। इनमें अनेक गर्भिणी, आसन्न-प्रसवा एवं प्रसूताएं थीं। बहुत सी स्त्रियों की गोद में बच्चों का बोझ था, जो भूख, प्यास और गर्द-गुबार से व्याकुल होकर रो-पीट रहे थे। उनकी अभागनी माताएं भी रोकर उनका साथ दे रहीं थीं। बहुत सी कुल वधुएं, नववधुएं और कुमारिकाएं ऐसी थीं, जिन्होंने घर की दहलीज से बाहर कभी पैर भी न रखा था, पर पुरुष की कभी सूरत भी न देखी थी। परन्तु दैव दुर्विपाक से उन्हें इन दुर्दान्त डाकुओं के साथ चलना पड़ रहा था। उनके पैर लोहू-लुहान हो गए थे और चलने की शक्ति न रही थी, परन्तु बिना चले कोई चारा न था।

कोई घायल, रोगी या स्त्री कैदी यदि चलते-चलते गिर जाता तो उसके लिए रुकने की किसी को आवश्यकता न थी। लाखों मनुष्य और उनके घोड़े उन्हें कुचलते-रौंदते उनके ऊपर से गुजर जाते और उन्हें वहीं मृत्यु उस वेदना से छुटकारा दे देती थी।

जो कोई चलने में ढील करता, अटकता, उस पर चाबुक बरसते थे। जो भागने की चेष्टा करता उसका तुरन्त सिर काट लिया जाता था। आसमान

धूल से भर गया था। आगे वाले कैदियों की धूल पीछे वालों के सिर पर पड़ती थी। दस मील चलने के बाद लश्कर कापड़ाव पड़ता। तब इन अभागे कैदियों को भी भोजन-विश्राम मिलता। विश्राम को न बिस्तरा न बिछौना न छाया। सारी ही सुविधा के सथान सिपाही घेर लेते-इन भाग्यहीनों को खुली धूप या खुले आकाश के नीचे नंगी जमीन पर कंकड़-पथरों पर पड़े रहना पड़ता था।

भोजन की दशा बहुत खराब थी। बहुत कम लोगों को भोजन मिलता था। वह भी कदन्न। बहुत से बिना भोजन के रह जाते। जो भोजन मिलता वह अति निकृष्ट होता था। यदि पास-पडोस में कोई गांव होता तो इन कैदियों को रस्सियों से बांधकर वहां सिपाही ले जाते-जहां वे गांववालों से भीख मांगते। गांववाले तो इस दल-बल से डरकर बहुधा भाग जाते थे। कुछ दृढ़ श्रद्धालु, सिपाहियों का भय त्याग अपने आंसुओं से अभिषिक्त अन्न जैसे बनता, इन्हें देते थे। कोई-कोई फटा पुराना वस्त्र देकर अबलाओं की लाज ढंकते थे।

बहुत कैदी राह में मर जाते। बहुत सी माताओं की गोद के बालक सिसकते,प्राण त्यागते रह जाते। उन्हें उसी हालत में छोड़कर आगे चल देना पड़ता। चलते-चलते अनेक स्त्रियों को प्रसव वेदना उठती,प्रसव हो जाता,पर उनके लिए कोई रुकता न था। या तो उस हतभागिनी को वहीं असहाय छोड़ सब चलते या वह रस्सियों से बंधी हाय-हाय कर घिसटती हुई गिर पड़ती और फिर घोड़ों,हाथियों-पदातिकों से रुंधी जाकर वहीं ढेर हो जाती थी।

भोजन बांटने के समय और भी हृदय-द्रावक दृश्य होता। विपत्ति और प्राणों के भार ने उन सबको मनुष्य ने भेड़िया बना दिया था। भोजन बंटने के समय वे हंटरों और डंडों की मार की तनिक भी परवा न कर एकबारगी टूट पड़ते। सबमें खूब गाली-गलौच और धक्का-मुक्की होती। वे प्रत्येक आपस में खून के प्यासे हो गए थे।

पड़ाव पर पहुंचते ही सब कोई अच्छी जगह पर आराम करने को कब्जा करने के लिए झपटते, इस समय भी उनमें लड़ाई होती। इससे भी अधिक दर्दनाक दृश्य यह होता कि वे रोटियों और मुट्ठी भर चावलों पर, जो उन्हें खाने को मिलता था,जुए का दांव लगाते। जो जीतते वे झपटकर साथी का हिस्सा छीन कर पशु की भांति बेसब्री से खा जाते। और उनका साथी भूखा-प्यासा टुकुर-टुकुर उनकी ओर देखता रह जाता।

शोर,हाहाकार,क्रन्दन और अव्यवस्था का अन्त न था। राह में और पड़ाव में भी बहुत स्त्री-पुरुष कैदी मर जाते थे। उन्हें यों ही शेष कैदियों को संग लेकर सिपाही चल देते थे। ऐसा प्रतीत होता था,मानवता पृथ्वी से उठ गई है और सारा संसार नरक की आग में जल रहा है।

विशिष्ट कैदियों को सबसे प्रथम ठहराया जाता था। पड़ाव पर पहुंचते ही उनका यह काम होता कि स्थान को झाड़ बुहार कर साफ करें। फिर उन्हें आगे रवाना कर दिया जाता था। वे बहुधा अपना भोजन रोगियों,स्त्रियों और घायलों को दे देते थे। तथा स्वयं अनाहार रह जाते थे। स्त्रियों पर अत्याचार रोकने में वे कभी-कभी जान पर खेलकर सिपाहियों से लड़ पड़ते थे। परन्तु सिपाहियों को दया-माया छू तक नहीं गई थी। मनुष्य के जीवन का उनके लिए कोई महत्व नही था। वे कठोरता और क्रूरता की साक्षात मूर्ति थे।

इस प्रकार ग्यारह दिन कूच करने के बाद जो कैदी जीवित पाटन पहुंचे,उनकी दश मृतकों से भी बढ़कर थी। जिस घर को बांसों और बल्लियों से घेर कर जेल बनाया गया था, वह यद्यपि बहुत बड़ा था परन्तु इतने कैदियों के रहने योग्य न था। कमरे अंधेरे,सील और गन्दगी से भरे थे। मुद्दत से उनकी सफाई नहीं हुई थी। जहां तक दृष्टि काम करती थी, वहां आदमी-ही-आदमी दीख पड़ते थे। कैदियों के पास ओढ़ने-बिछाने का कोई वस्त्र न था। वे वैसी ही नंगी और गीली भूमि पर रोग,भूख और थकान से अधमरे-से-होकर आ पड़े थे। प्रत्ये अपनी मृत्यु चाह रहा था। हाहाकार कराहना और रोने की आवाजों के मारे कानों के पर्दे फटे जाते थे। स्त्री-पुरुषों की कोई वहां मर्यादा न थी। वे सब नंगी जमीन पर ऐसे पड़े थे जैसे किसी ने मनुष्यों का फर्श बिछा दिया हो। पैर तो क्या तिल रखने की कहीं जगह न थी। यदि कोई टट्टी-पेशाब को जाना चाहता हो तो उसे मनुष्यों की छाती या पीठ पर पांव रखकर जाना होता था। ऐसा करने पर प्रतिरोध करने की किसी में ताब न रह गई थी। इस प्रकार पैरों से कुचले जाने पर वे किवल तिलमिलाकर कराह उठते थे।

लाखों मनुष्यों के मलमूत्र-त्याग के लिए कोई व्यवस्था न थी। जहां जिसे सुविधा होती, बैठ जाता। लज्जा और सभ्यता का कोई प्रश्न ही नहीं था। रोगी और अपाहिज जो अपने स्थान से हिल भी न सकते थे, वहीं पड़े-पड़े मलमूत्र त्यागकर गंदगी बढ़ा रहे थे। जिससे भयानक असह्य दुर्गन्ध और मृत्यु से भी अधिक दुखदायी हाहाकार की ध्वनि उस वातावरण में भरी हुई थी। प्रत्येक को अपने प्राण भारी थे। माताओं ने पुत्रों को फेंक दिया था। पतियों ने पत्नी से मुंह फेर लिया था और प्रत्येक व्यक्ति यह चाह रहा था कि उनका साथी उनका गला घोंटकर उन पर अनुग्रह करे।

मध्यानह में एक बार उन्हें नगर में भिक्षा मांगने को बाहर निकाला जाता और वे लम्बी-लम्बी रस्सियों से बंधे हुए,घुड़सवार बलोचियों से घिरे हुए नगर की गली-गली, हाट-बाजार में भीख मांगने निकले। इन कैदियों में लखपति,करोड़पति,सेठ-साहूकार,विद्वान,कवि,पंडित और व्यापारी, सिपाही,जगीदार-उमराव,सिपाही सभी थे। बहुतों के सगे सम्बन्धी पाटन में थे। वे अपने सम्बन्धियों को रस्सियों में बांधा हुआ देख, जार-जार आंसू बहाते, दौड़-दौड़ कर उन्हें भोजन-वस्त्र देते,तसल्ली देते। दैत्य के समान सिपाही किसी कैदी को नागरिको से बात करता देखते ही मार-पीट करने लगते। तनिक-तनिक सी बात के लिए, अपने सम्बन्धियों को कोई वस्तु देने के लिए नागरिकों को बड़ी-बड़ी रिश्वतें इन बर्बर सिपाहियों को देनी पड़तीं। उन्हें यह भी भय था कि जैसे ये निरपराध नागरिक आज इस दुर्दशा में पड़े हैं, वैसे ही कल हम भी पड़ सकते हैं। हमारी रक्षा करने वाला पृथ्वी पर कौन है?

बंदियों का सत्साहस

विपत्ति में सत्साहस की उत्पत्ति होती है। इस घोर विपत्ति से सबसे प्रथम स्त्रियों में सत्साहस का उदय हुआ। बर्बर सिपाही उनसे सब प्रकार का कुत्सित हंसी-मजाक और दुर्व्यवहार करते रहते थे। उन्होंने सबसे प्रथम उन सिपाहिहयों को डांट-डपट कर सीधा किया। एक स्त्री ने अवसर पाकर अपने भोजन करने का पात्र उठाकर एक सिपाही के सिर पर दे मारा। इससे प्रथम तो सिपाहियों में उत्तेजना फैल गई परन्तु तुरन्त ही एक भीति ने उनके मन में घर कर लिया। वे यह भली-भांति जानते थे कि यदि अमीर के कान में ऐसी बातें पहुंच गई तो फिर खैर नहीं।

इसके बाद कैदियों ने दूसरा कदम यह उठाया कि नगर में भीख मांगने से इनकार कर दिया। प्रथम स्त्रियों ने ही दृढ़तापूर्वक यह निश्चय किया, उसके

बाद ही पुरुष कैदियों ने भी इनकार कर दिया।अब जरा-जरा सी बात पर सारी स्त्रियां सामूहिक रूप से सिपाहियों का हिंसक विरोध करने लगीं। यह सब देखकर सिपाही डर गए। उन्होंने सालार महमूद से सब बातें कहीं, जो कैदियों का इंचार्ज आफिसर था।

सालार ने बंदीग़ह में आकर सब कैदियों का मुआइना किया। सिपाहियों ने बहुत सी शिकायतें कीं। इस समय सब स्त्री कैदियों का नेतृत्व कंचनलता कर रही थी और पुरुष कैदियों के नेता देवचन्द्र थे।

मसऊद ने कैदियों के बाड़े में जाकर कंचनलता को तलब किया। परन्तु मसऊद की आज्ञा पाकर भी वह उठकर उसके पास नहीं गई। जहां बैठी थी वहीं बैठी रही। क्रोध में भरा मसऊद स्वयं उसके निकट गया। वह चाहता था कि उसे दंड दे। परन्तु उसकी रूप-माधुरी, मृदुल देहयष्टि, बड़ी-बड़ी आंखों और उज्ज्वल मोती के समान रंग देखकर वह दंग रह गया। अपने जीवन में रूप-माधुर्य और सौकुमार्य का ऐसा मिश्रण उसने देखा न था। उसका सैनिक जीवन कठोर और बर्बर कृत्यों से भरपूर था। फिर भी वह एक उच्चवंशीय कुलीन तुर्क था।वह स्वयं एक सुन्दर सजीला जवान था और एक स्वस्थ युवक की भांति उसके मन में भी कोमल भावनाएं थीं, जो व्यस्त सैनिक जीवन में सुप्त हो गईं थीं। जब इस रूपसी बाला को देखते ही उसकी सब भावनाएं एकबारगी ही जाग्रत होकर भड़क उठीं।

वह देर तक एकटक प्यासी आंखों से उसे देखता रहा। फिर उसने उससे कहा, ''खड़ी हो जाओ।''

परन्तु कंचनलता खड़ी नहीं हुई। मसऊद ने कहा,''तुमने मेरा हुक्म नहीं सुना?''

कंचनलता ने इसका भी कुछ जवाब नहीं दिया। मसऊद क्रोध नहीं कर सका। वह उसके निकट धरती पर बैठक गया और मृदुल कंठ से कहा,''तुम्हारे खिलाफ बहुत बातें हैं। मैं सालार मसऊद अमीर का सिपहसालार हूं,सफाई में तुम्हें जो कहना हो ,कहो।''

मसऊद कंचनलता के बिलकुल सरक आया। वह मुंह उठाकर अपने प्रश्न के उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा।इसी समय अकस्मात अतर्कित रीति से कंचनलता ने तीन-चार तमाचे उसके मुंह पर कस कर जड़ दिये। फिर कहा,''यह मेरा तुझे और तेरे अमीर को जवाब है।''

देवचन्द्र खिलखिलाकर हस पड़ा और कैदी भी हंसने लगे।स्त्रियों ने जोश में आकर मसऊद को घेर लिया।क्रोध और अपमान से अन्धा होकर मसऊद ने आज्ञा दी, '' इस औरत को नंगा करके पचास कोड़े मारे जाएं।''

क्षण-भर के लिए सर्वत्र सन्नाटा छा गया। रस्सियों से जगड़े हुए कैदियों ने लानत और धिक्कार की बौछार मसऊद पर करके उसकी ओर थूका। स्त्रियों ने कंचनलता को चारों ओर से घेर लिया। मसऊद अब यहां अधिक न ठहर तेजी से बाहर चला गया।शीघ्र ही आठ हथियारबंद पठान सिपाही और दो कद्दावर जल्लाद हाथ में चमड़े के कोड़े लिए आ उपस्थित हुए। सब पुरुष कैदी क्रोध से थर-थर कांपने लगे।बहुतों ने रस्सियां तुड़ाने की चेष्टा की। स्त्री कैदियों ने कंचनलता पर अपने शरीर झुका दिए।

सिपाही आगे बढ़े। कंचनलता ने कहा, ''खबरदार,वहीं रहो। सिपाहियों की आवश्यकता नहीं है। जल्लाद ही काफी हैं। मैं कोड़े खाने को तैयार हूं। '' सिपाही ठिठक रहे। वह उठी और हंसिनी की चाल से चलकर जल्लादों के निकट आई और कहा, ''तुम अपना काम करो।''

जल्लाद,सिपाही और कैदी सब अवाक थे। जल्लादों ने दंड-स्थल पर जाने का संकेत किया। वहां जाने पर उन्होंने उसके हाथ बांधे। उसका वस्त्र फाड़ डाला। शुभ्र मर्मर की प्रतिमा-सा उसका वक्ष और पीठ नंगी हो गई। देवचन्द्र ने पत्थर पर सिर दे मारा, कैदियों ने लानतों और अपशब्दों की झड़ी लगा दी। सबने अपनी आंखें बंद कर लीं। स्त्रियां पछाड़ खाने लगीं। देखते ही देखते उस कुसुम कोमल अबला बाला का वक्ष और पीठ लोहू से भर गई। वह मूर्च्छित होकर दंड स्थल पर गिर गई।

जल्लाद और सिपाही अपना काम पूरा करके चले गए। स्त्री कैदियों ने उसके लोहू लुहान मूर्च्छित देह को हाथोहाथ उठा लिया। अभी उसके शरीर में प्राण था। उन्होंने उसे वस्त्र से ढंका। औषध उपचार और मरहम पट्टी का कोई प्रश्न ही न था। वे धीरे-धीरे जल की बूंदे उसके मुख और आंखों से टपकातीं रहीं, कुछ देर के उपचार के बाद उसने आंखें खोल दीं। अपने को स्त्रियों से घिरी देखकर वह मुस्कुराई पर तुरन्त ही वेदना ने उसकी मुखाकृति बिगाड़ दी। इसी समय एक सिपाही ने एक पुड़िया और कुछ गर्म दूध उसे लाकर दिया। दूध पीने से उसमें बल आया। पुड़िया में एक प्रकार का चूर्ण था। जिस कागज में पुड़िया बंधी थी उसमें लिखा था, ''हौंसला रखो,सहायता निकट है,चूर्ण जख्म पर छिड़क दो।''

ऐसा ही किया गया। उस दिन कैदियों को यह तसल्ली हुई कि बाहर से सहायता का उद्योग हो रहा है और वे निरे असहाय-निरीह नहीं हैं। वह रात कंचनलता को गोद में लिए रहकर स्त्री कैदियों ने व्यतीत की। इसी एक घटना से कैदियों में एक संगठन और सहयोग की भावना का उदय हुआ।

दूसरे दिन ही से सब स्त्री कैदियों ने भोजन करना त्याग दिया। उनकी सहानुभूति में पुरुष कैदियों ने भी ऐसा ही किया। तीन दिन तक इस विषय पर कोई विचार नहीं किया था। परन्तु इसके बाद मसऊद चिन्तित हो गया। उसने चाहा कि अमीर से

कुछ कहे, पर उसका साहस न हुआ। कैदियों के निकट जाने का भी अब उसे साहस न होता था। यद्यपि उसने कंचनलता पर कोड़े बरसवाए थे, पर सच पूछिए तो वे कोड़े उसी की पीठ पर पड़े थे। उसकी भूख-प्यास-नींद सब उड़ गई थी। पर उस कोमल कुसुम-कली के प्रति किए हुए अपने निर्मम व्यवहार के लिए अपने को धिक्कार दे रहा था। वह उसे देखना चाहता था, परन्तु निकट जाने का साहस नहीं करता था। जब उसने सुना कि कोड़े खाकर वह मरी नहीं, जीवित है, उसने मरहम-पट्टी और खाने-पीने की समुचित व्यवस्था कर दी। परन्तु कैदियों ने भोजन करना स्वीकार नहीं किया।

मसऊद इससे डर गया। पुरुष कैदियों में निर्भयता, उद्दंडता और क्रोध की भावना बढ़ती जाती थी। बहत यत्न करने पर भी कैदियों की भीतरी दशा बाहर अनेक रूप धारण करके फैलती जा रही थी, जिससे नगर में अशांति का वातावरण बढ़ रहा था। स्त्रियों ने अब एक जोरदार कदम उठाया। उन्होंने निर्णय लिया कि इस प्रकार की नंगी होकर कोड़े खाने मर जाना अधिक उत्तम है। कंचनलता अभी तक बहुत कमजोर थी। परन्तु अब स्त्रियों का नेतृत्व रुक्मिणी नामक एक सोरठ महिला कर रही थी। उसने कहा, ''बहिनों, कंचन बहिन की प्रतिष्ठा पर हमें बलि होना होगा। कहो, अपने प्राण देने को उद्यत है?'' तत्काल सैकड़ों हाथ उठ गए। उनमें से बीस स्त्रियों को चुना गया। उनके युक्तियों से बहुत सी अफीम मंगाई गई और बीसों स्त्रियां शान्तिपूर्वक अफीम खाकर चिरनिद्रा में सो गईं।

इस प्रकार बीस स्त्री कैदियों का एक ही रात में आत्मघात करने का समाचार सुनकर मसऊद की पिंडलियां कांप गईं। वह भागा हुआ बंदीगृह में आया। वह नहीं चाहता था कि बाहर यह बात फैले और अमीर तक पहुंचे। उसने उनके शवों को बंदीगृह में गाड़ दिये। तथा स्त्रियों को बहुत भांति तसल्ली दे भोजन करने का आग्रह किया परन्तु स्त्रियों ने स्वीकार नहीं किया।

अब इस आत्म-यज्ञ में स्त्रियों का साथ देना पुरुषों ने भी आवश्यक समझा। तत्काल ही स्वेच्छा से मरने वालों की सूची बनाई जाने लगी। सूची आवश्यकता से बहुत अधिक लंबी हो गई। परन्तु उनमें से केवल अस्सी व्यक्ति उस दिन मरने के लिए चुने गए। शेष लोगों ने उनके निकट बैठक कर भोजन न करने की ठान ली। इस बार भी बहुत सी अफीम मंगा ली गई। और अस्सी जनों ने धैर्यपूर्वक अफीम खा ली। वे चुपचाप बिस्तर पर लेट गए। बाकी लोग उन्हें घेरकर भजन-कीर्तन करने लगे। हजारों कंठों के सम्मिलित स्वरों ने बंदीगृह की दीवारों को कम्पायमान कर दिया। बन्दियों इस आत्मोसर्ग के उदाहरण से दूरे बन्दियों पर बड़ा भारी दबाव पड़ा। उनमें प्रेम, भक्ति और सहानुभूति तथा आत्मसम्मान का जोश हिलोरें मारने लगा। वे भी जोर-जोर से कीर्तन करने लगे। थोड़ी ही देर में जिन्होंने अफीम खाई थी, उनके सिर दर्द से फटने लगे। उस विकट वेदना को किसी भांति सहन न कर वे छटपटाने लगे। उनकी नसें खिंचने लगीं। देह अकड़ने लगी और आंखों की कौड़ियां बाहर निकल आईं।

सब लोग अपने साथियों का यह घोर उत्सर्ग पत्थर की छाती करके देख रहे थे। बहुत जन आंखों से चौधार आंसू बहाते जाते थे और भजन गाते जाते थे। इतना अधिक विष खा लेने पर भी उनमें से सत्रह व्यक्तियों के प्राण नहीं निकले, अतः उन्हें दुबारा अफीम दी गई। जो मृत्यु के निकट पहुंच जाते थे, उनका कष्ट कम हो जाता था। यह देख दूसरे कैदी हर्षित हो उनके कान के पास मुंह करके जोर-जोर से हरिनाम-कीर्तन करते थे।

अन्त में दो व्यक्ति अब भी न मरे। उन्हें तीसरी बार अफीम घोलकर पिला दी गई। रात टूट रही थी और वीरात्माओं के शव भूमि पर चुपचाप पड़े थे। उन्हें घेरकर सैकड़ों जन भगवान का बज्र कीर्तन कर रहे थे। जिन दो व्यक्तियों को तीसरी बार विष दिया गया था, उनमें से एक उठ बैठा। उसने अपने साथी के कंठ की घुरघुराहट सुनी। अपने साथी कि अन्तिम अवस्था निकट जाकन बड़े यत्न और कष्ट से खिसककर उसके पास पहुंचा, उसे अपनी छाती से लगाकर उसका ललाट चूमा, और इस बार बहुत सी अफीम खाकर अपने साथी के बगल में सदा के लिए सो गया।

लाल नजर

बहुत छिपाने पर भी बन्दीगृह का यह भीषण समाचार अनेक रूप धारण कर नगर और लश्कर में फैल गया। नगर में हाहाकार मच गया। लोगों ने कारोबार हाट-बाजार सब बन्द कर दिया। अमीर के कानों में भी यह समाचार इस ढंग पर पहुंचा दिया गया कि वह गुस्से से लाल चोट हो गया।

अमीर महमूद एक विजेता, साहसिक योद्धा और उच्च मन का बादशाह था। वह विद्या-व्यसनी और तेजस्वी भी था। अपनी महान आकांक्षाओं की पूर्ति करने में उसे बड़े-बड़े नरमेध करने पड़े, लाखों मनुष्यों का वध करना पड़ा। परन्तु ऐसे अत्याचार और निर्मम हत्याकांड का कलंक वह नहीं सह सका। उस काल में अभागे बन्दियों की सर्वत्र ऐसी ही दुर्दशा होती थी। इसलिए जो भयानक अवस्था इन कैदियों की थी, उसका दोष केवल सुल्तान पर ही नहीं लादा जा सकता था। एक बार जो बन्दी हुआ, उसे तो उन दिनो जीते जन्म नारकीय दुख भोगना ही पड़ता था। न करने योग्य काम करने पड़ते थे, और उन पर कोई दया की कोर करता भी न था।

महमूद के सलाहकारों ने कहा था कि इन कैदियों में जो भयानक अपराधी हों, हरीफ हों, जिन्होंने मुसलमानों पर तलवार उठाई हो, उन्हें कत्ल कर दिया जाए। शेष को बाजारों में ऊंचे दामों की बोली लगाकर बेच दिया जाए।

इस संबंध में महमूद के विचार कुछ और ही थे। वह जानता था कि इन कैदियों को गुलाम की भांति बेचने से अधिक दाम मिलते हैं, अतः मनुष्य को पशु की भांति बेचने में दोष है, इस पर उसने कभी विचार ही नहीं किया। अब तक कैदी भी उसकी आमदनी का एक जबर्दस्त जरिया बनते रहे थे। लोभी मनुष्य के हृदय में दया-माया कहां उस काल में बहुत लोग गुलामों को बेचने का धन्धा करते थे। उन्हें कोई अधर्म नहीं समझाता था। ऐसे मनुष्य टोली बांधकर, हथियारबंद हो, अरक्षित गांवों पर टूट पड़ते और जो सामना करता, उसे निर्दयता से मार-काटकर युवकों, युवतियों और रूपवती स्त्रियों को पकड़ चलते बनते और उन्हें विदेशों में बेचकर खूब धन कमाते थे। इस कुकर्म को करते उन्हें तनिक दया-माया नहीं उपजती थी।

महमूद भी इसका अभ्यस्त था। कैदियों पर के अत्याचार उसे अत्याचार नहीं प्रतीत होते थे। परन्तु इस बार जो घटना उसके कानों में पड़ी, उससे वह क्रोध से अधीर हो गया। उसने स्वयं बन्दीगृह जाकर अत्याचारों की जांच की। किस परिस्थिति में गिरकर इतने आदमी विष खाकर मर गए और दूसरे मरने को तैयार है, इस बात ने उसका ध्यान आकर्षित किया।

इस सामूहिक आत्मघात के भीतर मसऊद का अनौचित्य, अविचार और लम्पटता देख वह क्रोध से आगबबूला हो गया। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि

जैसे आज उसका वंश कलंकित हो गया। उसने खुला दरबार किया।

मसऊद अमीर का बहुत मुंहलगा,ढीठ और प्रधान सहचर था। वह साहसिक योद्धा और अमीर का सम्बन्धी भी था। उसकी मर्यादा राजकुमार के रुतबे की थी। फिर भी अमीर ने मसऊद को क्षमा नहीं किया। उसने सब सेनापतियों,मत्रियों, दरबारियों और सिपाहियों के सम्मुख उस पर अभियोग उपस्थित किया। अमीर ने पूछा-

''मसऊद, क्या यह सच है कि तूने उस औरत को बिना कसूर कोड़े लगवाए?''

''हुजूर,उसने मेरी हुक्म-उदूली की।''

''क्या तूने उसे छुआ? उस पर बदनजर डाली।''

''खुदाबन्द, वह एक काफिर कैदी औरत है।''

''क्या अस्मतफरोश? क्या तूने उसके खानदान का पता लगाया?''

''जी हां, वह खम्भात के बड़े सेठ की बेटी है।''

''क्या उसकी शादी हो चुकी थी?''

''जी।''

''और उसका शौहर?''

''वह शायद इसी पाटन का वाशिन्दा है।''

'' तो तूने यह जानकर भी कि वह दूसरे की औरत है, तूने उस पर बदनजर डाली और उस पर वह हददर्जे की बेरहमी की।''

मसऊद नीची नजर किए थर-थर कांपता रहा। अमीर ने कहा, ''जंग-जंग है-लेकिन बुग्ज की यहां गुजायश नहीं, न बदनीयती की। खासकर जब एक जिम्मेदार सिपहसालार,बुग्ज रखे, पराई औरत पर बदनीयत रखे,उस पर जालिमाना हमला करे, तो उसका कसूर बहुत बढ़ जाता है। पर, मैं अमीर महमूद,खुदा का बन्दा-वही कहूंगा, जो मुझे कहना चाहिए। और मैं हुक्म देता हूं कि वह औरत अपने हाथ से इस बदबख्त मसऊद को नंगा करके सब सिपाहियों से रूबरू पचास दुर्रे लगा और यह खोटा और बेईमान मसऊद अब से सिपहसालार नहीं,अदना सिपाही रहे।''

अब अमीर ने कैदियों के सम्बन्ध की और बातो पर विचार किया। इतने बड़े कैदियों के काफले को इस बार विदेश ले जाकर बेचना उसे संगत नहीं प्रतीत हो रहा था। इस बार लौटने में उसे एक अतर्किक भीति की भावना का भान हो रहा था। फिर कैदियों में विद्रोह की, सामना करने की जो भावना उत्पन्न हो रही थी, और नगर में जो असन्तोष उत्पन्न हो रहा था- इन सब बातों से उसके मस्तिष्क का सन्तुलन जाता रहा। इसी समय अवसर पाकर उसके वजीर अब्बास ने कहा कि हुजूर,खुदाबन्द,इसमें सन्देह नहीं कि विदेश ले जाकर कैदियों को बेचने में अधिक कीमत मिलेगी। परन्तु यह वक्त ऐसा नहीं है कि सवा लाख कैदियों को इतनी दूर ले जाने की जोखिम उठाई जाए। फिर कैदी बगावत करने पर आमाद हैं। शहर में भी हवा खराब हो रही है,इससे इन कमबख्त कैदियों में जो हरीफ हैं, उन्हें कत्ल कर दिया जाए- और बाकी सबकी उनके भाई-बन्दो में बेआबरू करके अपमानपूर्वक बेच डाला जाए।

इस पर महमूद ने कहा कि मैं महमूद खुदा का बन्दा वही कहूंगा जो मुझे कहना चाहिये। मैं हुक्म देता हूं कि वे सब बदबख्त कैदी, जो फसाद पर आमाद हैं, और जिन्होंने शाही हुक्म-उदूली की है, जिन्होंने इस्लाम के बन्दो पर तलवार उठाई, उनका कल सरेआम कत्ल कर डाला जाए। और बाकी सब गुलाम बोली की डाक पर बेच डाले जाएं। जो बिकने से बच रहें, उन्हें गजनी की ओर बेचने के लिए रवाना कर दिया जाए।

अमीर के इस हुक्म से लोगों के दिल दहल गए। चंड शर्मा ने आंखों-ही-आंखों में छदमवेशी महता को संकेत किया। और महता सिपाहियों की तरफ से हटकर एक ओर चल दिए। बहुत सी बातों पर विचार करके चंड शर्मा ने इस सम्बन्ध में अमीर से एक शब्द भी नहीं कहा। अमीर तख्त से उठकर महल में चला गया। आज उसका मुंह भरे बादलों के समान भारी हो रहा था।

स्वेच्छा बन्दी

बन्दीवाड़े में एक ओर सिमटकर, प्राणदंड पाए कैदी बैठे, अपने जीवन की घड़ियां गिन रहे थे। कोई रो रहा था, कोई हंस रहा था,कोई पागल की भांति अंट-संट बड़बड़ा रहा था। कोई गंभीर मुद्रा में गुमसुम बैठा था।

कंचनलता और देवचन्द्र सबसे पृथक एक कोने में बैठे अपने दुर्भाग्य का सामना करने को तैयार बैठे थे। ठंड काफी थी। कंचनलता कुछ कांपने लगी, उसके दांत कटकटाने लगे। देवचन्द्र ने कहा, ''ठंड लग रही है कंचनलता,परन्तु कोई वस्त्र तो है नहीं, आग भी नहीं जलाई जा सकती।'' वह खिसक कर अपने शरीर की गर्मी पहुंचाने को उससे सटकर बैठ गया। और कोई सहायता प्राप्त की जा सकती है या नहीं, इसके लिए वह इधर-उधर देखने लगा। इसी समय उसने झपटते हुए अपने बहनोई पूनमचन्द्र को अपनी ओर आते देखा। उसके मुंह से निकल गया, ''अरे, तो क्या तुम भी पकड़े गए। परन्तु यहां तो केवल प्राणदण्ड...।'' उसने संदेह और विषाद से भरी दृष्टि से बहनोई की तत्प कंचन जैसी मुखमुद्रा की ओर देखा। वह उठकर पूनमचन्द्र से लिपट गया। कंचनलता के अंग-अंग से पसीना आ गया। वह मूर्च्छित सी होकर धरती पर झुक गई।

दोनों ने यत्नपूर्वक उसे संभाला। फिर पूनमचन्द्र ने अपने कंधे का शाल उतारकर कंचन का लगभग अर्धनग्न शरीर अच्छी तरह से ढांप दिया।

फिर फीकी हंसी हंसकर कहा, ''देवचन्द्र, कैसा अद्भुत संयोग है। याद है, आज से प्रथम कब मिले थे? जब मैं तुम्हारी बहन को विदा कराने गया था, उस दिन की सुखद स्मृति आज भी कितना सुख देती है।''

देवचन्द्र ने विषाद भरे स्वर में कहा, ''भाई, किया क्या जाए। प्रारब्ध जो होता है, वह हो कर ही रहता है। तब यदि बहन को विदा कर दिया गया होता, तो आज उसे यह दिन नहीं देखना पड़ता। पर,तुम कैसे पकड़े गए? क्या यहां भी पकड़-धक शुरू हो गई?''

''नहीं वहां पाटन में चालीस गांव के महाजन एकत्र होकर सारे बन्दियों को छुड़ाने का प्रयत्न कर रहे हैं। मैं उसी खटपट में तुमसे अब तक न मिल सका। आज मैंने सुना कि तुम्हें आज ही प्राणदंड दिया जाने वाला है, सो फिर न रह सका,चला आया।''

''क्या स्वेच्छा से?'' देवचन्द्र ने भय से पीला पड़कर कहा।

''हां भाई,मुझे एक चीज मिल गई थी,उसी मदद से। यह देखो।'' उसने एक शाही मुद्रा दिखाई। ''अब सुनो,समय कम है,अधिक बातचीत का अवसर नहीं। यह मुद्रा लो और प्रहरी को दिखाकर बाहर चले आओ। मैं कंचनलता के साथ हूं।''यह कहकर मुद्रा उसने देवचन्द्र के हाथों में थमा दी।

देवचन्द्र ने कहा, ''यह कैसी बेवकूफी की बात है, तुम जान-बूझकर मृत्यु के मुख में घुस जाए। नहीं,नहीं हमारे भाग्य में जो हो सो हो,तुम अभी, इसी समय बाहर चले जाओ,जल्लादों के आने

में देर नहीं है।''

''फजूल की बात है। तुम्हें शायद अभी यह नहीं मालूम कि तुम्हारे पिता ने जीवित समाधि ले ली , और माता सब कुल स्त्रियां तथा परिवार के इक्कीस व्यक्तियों सहित जल मरीं। अब तुम एकमात्र जीवि चिन्ह हो। जाओ,जाओ इतना उत्सर्ग मत करो, खम्भात के नगर-सेठ का खानदान युग-युग तक अमर हो गया-उसके वंश को जीवित रहना होगा।''

''सुनकर सन्तोष हुआ। मेरे पूज्य पिता ने और माता ने जो कुछ किया, उनका धर्म था। अब उनकी चिन्ता मिटी। अब हमारी बारी है,हमें अपना कर्तव्य करने दो।भाई, तुम चले जाओ,विनती करता हूं। हा-हा खाता हूं, तुम चले जाओ-तुम अपने कुल के अकेले सूर्य हो,जाओ-जाओ।''

''यह असंभव है। कंचन के साथ मरने का तुम्हारा कोई हक नहीं है, मेरा है। मेरा उसका जीव-जीवन का सम्बन्ध है, वह मेरी पत्नी है,मेरे साथ वह,उसके साथ मैं मरने-जीने के साझीदार है। तुम पागलपन मत करो,भाई चले जाओ।''

''मैं ऐसा कायर नहीं हूं कि तुम्हें और कंचन को, जिन्हें सदैव मैने प्राण से भी प्यारा समझा है, मौत के मुंह में छोड़कर भाग जाऊं, ऐसा ही है तनों मरेंगे।''

पूनमचन्द्र और कंचनलता की ओर बढ़ा। कंचन चौधारे आंसू बहा रही थी और उसका मुंह एकदम सफेद हो गया था। पूनमचन्द्र ने उसके निकट पहुंचकर कहा,''कंचन प्रिये, लिहाज-शर्म का तो यह समय नहीं है, तुम देवचन्द्र को समझाओ, वह चला जाए''

कंचन ने अपना कंठ-स्वर संयत कया। उसने कहा,''भैया ये ठीक कहते हैं,तुम चले जाओ। पिताजी का वंश लोप नहीं होना चाहिये।''

देवचन्द्र ने उसके मस्तक पर हाथ रखा, फिर कहा,'' बहिन,बेसमझी की बात मत करो। तुम अच्छी तरह जानती हो कि संसार में मेरा तुम्हारे सिवा अब और कोई नहीं है।'' फिर उसने एकाएक सोचकर कहा,''पूनम भाई, एक काम क्यों न किया जाए। कंचन बाहर जाए।'' फिर उसने कंचन की ओर मुड़कर कहा,'' सुनो बहिन,तुम जाकर अपने वृद्ध और दुखी ससुर की सेवा करना,और... '' देवचन्द्र आगे न कह सके। उनका कंठ रुक गया।

कंचनलता ने कहा,''मेरा स्थान तो इनके चरणों में है भाई तुम जानते ही हो।म चले जाओ भाई। मैं पैर पड़ती हूं।''

परन्तु देवचन्द्र ने कहा,''तुम सब मुझे कायर बनाने पर तुले हो,पर यह नहीं हो सकता।''

उसका दृढ़ शब्द सुनकर कंचनलता सोच में पड़ गई। पूनमचन्द्र आंखों में आंसू भरे उसे ताकता रह गया। कचनलता ने अब प्रिय पति की ओर देखा, और संसार-भर की करुणा और अनुनय आंखों में भर कहा,'' तुम्हीं मान जाओ,जीवित रहोगे तो दोनों घरों का उजाला होगा। मैंने तुम्हारी कभी भी सेवा नहीं की, सिर्फ फेरों पर ही पल्ला पकड़ा था। तुम विवाह कर लेना। सुखी रहना।'' इतना कहकर वह सब लोक-लाज छोड़कर आगे बढ़ पूनमचन्द क वक्ष पर गिर कर फफक-फफक कर रोने लगी। पूनमचन्द्र ने कहा, '' यह समय तो साहस और दृढ़ता है, और तुम रोती हो?''

'' मैं पिताजी की बात सोच रहीं हूं,वे बूढ़े और रोगी हैं,यह घाव कैसे सहेंगे।''

'' मैं उनकी ही आज्ञा से आया हूं।''

तीनों ने एकदूसरे को पानी ढरते नेत्रों से देखा। प्रेम त्याग साहस और उत्सर्ग की वहां गंगा बह रही थी। फिर तीनों कंचनलता को बीच में करके, एकदूसरे से सटकर , जो कुछ आगे होने वाला था, उसका सामना करने को चुपचाप बैठ गए।

बहुत देर बाद देवचन्द्र ने कहा, ''एक मलाल मन में रह गया पूनम भाई।''

''क्या?''

''उस मसऊद कुत्ते को मैं अपने हाथ से न मार सका।''

''उसके सातों कर्म पूरे हो गए?''

''अरे, यह कैसे?''

पूनमचन्द्र ने वस्त्र हटाकर अपनी छाती दिखाई। छाती खून से भरी हुई थी। देखते ही कंचन के मुंह से चीख निकल गई। देवचन्द्र ने आकुल स्वर में कहा,''अरे, तुम तो घायल हो देखूं।''

पूनमचन्द्र ने घाव को वस्त्र से ढंकते हुए कहा, '' यानी मरते-मरते घाव दे गया। मुद्रा उसी के पास से तो मिली।'' फिर उसने सब हाल सुनाते हुए कहा,'' सरस्वती तीर पर उसकी लोथ पड़ी है, उस समय तो देखने वालों की भीड़ लग रही होगी।''

पूनम मुस्कुराया।

कंचन ने व्यग्र होकर साड़ी फाड़ डाली। वह घाव पर पट्टी बांधने उसकी ओर मुड़ी।

पूनम ने लापरवाही से कहा,''कुछ ऐसा भारी घाव नहीं है,रहने दो।''

परन्तु देवचन्द्र ने आग्रह किया, कहा,'' घाव गहरा है। छिपाते क्यों हो-पट्टी बांधने दो ।'' उसने बहिन का हाथ बंटाने को हाथ बढ़ाया।

उसके हाथ को नर्मी से अपने हाथ में लेकर पूनम ने कहा,''यार, यह सब खटपट कितनी देर के लिए? कुछ घड़ी की तो बात है, कि सब बेड़ा पार''

परन्तु कंचन का मूल आग्रह टाला नहीं जा सका। उसने हपने हाथ से वस्त्र हटा,घाव पर पट्टी बांध दी। पूनमचन्द्र ने और विरोध नहीं किया।

इसी समय द्वार पर कुछ शोर सुनाई दिया और कुछ देर बाद जल्लादों सहित बहुत से हथियारबन्द सिपाही वहां आ पहूंचे। उन्हें देखते ही बन्दीगृह हाहाकार और क्रन्दन से भर गया। केवल ये तीनों बन्दी मूक-निस्पन्द एक दूसरे का हाथ दृढ़ता से पकड़े पृथ्वी पर दृष्टि किए बैठे थे। उनकी आंखों में आंसू न थे।

जल्लादों के मुखिया ने कैदियों को गिनना प्रारम्भ किया । और कहा, '' सब तिरसठ।''

''तिरसठ? गलत, बासठ होने चाहिये। '' जल्लादों के मुखिया ने अपनी बुद्धिमत्ता दिखाते हुए कहा,''फिर गिनो।''

इस बार भी तिरसठ ही रहे। सहायक ने मुखिया जल्लाद से कहा कि अब तुम गिन लो।

उसने गिन कर देखा,तिरसठ थे। परन्तु उसने कहा,''मुझे बासठ बताए गए हैं। अरे भाई कैदियों, क्या तुममे कोई गलती से आ गया है?''

कईयों के होठ एक साथ ही खुले। परन्तु स्वर नहीं निकला। होंठ वहीं चिपक गए। मुखिया जल्लाद ने कहा, ''तब एक ज्यादा ही सही। क्या किया जाए। पर मेहनताना तो मिलेगा बासठ ही का। एक का सिर फोकट में काटना पड़ेगा।''

इसके बाद उसने अपने सहायकों की मदद से दो-न्दो के हाथ रस्सियों से पीठ पर बांधने प्रारम्भ किये।

सबको बांध चुकने पर जब वह इन तीनों के निकट आया तो,पूनमचन्द्र ने चुपचाप अपनी हीरे की अंगूठी उसके हाथ में थमाकर कहा,''दोस्त, हम तीनों को एक ही साथ बांधना।''

जल्लाद ने खुशी से स्वीकार कर लिया। वे तीनों एक साथ बांध दिए गए। अब कैदियों का यह जलूस पंक्तिबद्ध वध स्थल की ओर चला।

विनाश से अनभिज्ञ हिन्दू

डॉ कल्पना आचार्या

दुनिया भर में 2001 से लेकर अब तक लगभग 13500 से अधिक आतंकवादी हमले हो चुके हैं। इन हमलों में हजारों निर्दोष नागरिक लहूलुहान हो गए और न जाने कितनों की जान चली गई। कत्ले आम करने वाले दैत्य नहीं थे, बल्कि मुसलमान थे। इन पक्के मुसलमानों की तरह सोचने वाले दुनियां भर में लाखों लोग हैं और वे भी मजहब के नाम पर ऐसा ही नरसंहार करने के लिए तैयार हैं।

आश्चर्य होता है जब इस्लामिक जिहादी हमारे सैनिकों को बर्बरतापूर्वक मारते हैं, उनके मृत शरीर से भी दरिंदगी करते हैं लेकिन सामान्य जन, एवं सम्पूर्ण मीडिया तंत्र उनको मिलिटेंट , भटके हुए नौजवान आदि शब्दों से संबोधित करते हैं।

जबकि स्वयं आतंकवादी जोर शोर से चिल्लाकर सबको बता रहे हैं कि हम इस्लामिक जिहादी हैं। हम किसी देश के लिए लोगों को नही मार रहे हैं हम केवल अल्लाह के लिए ऐसा कर रहे हैं। 26/11/2008 में मुम्बई में आतंकी हमले हुए। जिसमे अजमल कसाब जिंदा पकड़ा गया। उसके द्वारा हमले के पीछे जो कारण बताए गए उनसे स्पष्ट है कि वह किसी देश के लिए नही बल्कि इस्लाम के लिए कुफ्र को समाप्त करने के लिए आया था। यहाँ आने से पहले वह अपनी माँ के पास गया था। उसने कहा था कि मै अल्लाह के कार्य के लिये जा रहा हूँ।

स्वयं को उदारवादी प्रदर्शित करने वाले मुस्लिम संगठन कभी इन गतिविधियों पर रोष व्यक्त नही करते हैं। बल्कि इन जिहादियों के जनाजे में लाखों लोग इकट्ठा होकर यह प्रदर्शित करते हैं कि हम सब इसके कार्यों का समर्थन करते हैं। इस्लाम की मूल अवधारणा ही यही है। कुरान सूरा तौबा आयत 120 में कहा कि ऐसे कर्म करो जिससे काफिरों (गैर इस्लामी)को मानसिक क्षति हो, ऐसे कार्य करो जिससे काफिरों क्रोध उत्पन्न हो, समस्त मुसलानों के लिए निर्देश है कि जो व्यक्ति काफिरों को पीड़ा दे उसकी रक्षा, उसका मान सम्मान अपने जान और माल से करो। इसी कारण 85% प्रतिशत इस्लामिक जगत 15% जिहादियों द्वारा गए अत्याचारों को मानसिक तथा जकात के रूप में धन से सम्बल प्रदान करता है।

इस्लाम मे गैर इस्लामी को जीने का अधिकार नही है यहाँ तक कि उसको हर प्रकार से समाप्त करने के लिए भी स्पष्ट आदेश हैं। मुशरिकों (मूर्तिपूजकों) को जहाँ कहीं पाओ कत्ल करो और उन्हें पकड़ो, और उन्हें घेरो, और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो। (सूरा तौबा, आयत- 5)

उनसे लड़ो! अल्लाह तुम्हारे हाथों उन्हें यातना देगा, और उन्हें रुसवा करेगा, और उनके मुकाबले में तुम्हारी सहायता करेगा। (तौबा, आयत- 14)

इतना ही नहीं इन कार्यों को करने के बाद कहीं जिहादी को मानव होने के नाते अपने कार्यों पर पश्चाताप न होने लगे उसके लिए कहा- तुमने उन्हें कत्ल नहीं किया, बल्कि अल्लाह ने उन्हें कत्ल किया है। (सूरा अनफाल, आयत- 17) इन सबको अनदेखा कर हम लोग हिन्दू मुस्लिम भाई भाई का नारा पूरी ऊर्जा के साथ बुलन्द करते

हैं। हिन्दू मुस्लिम एकता की चिंता केवल हिंदुओं को ही होती है। जहाँ कहीं हिन्दू नेतृत्व खड़ा होता है वह यही सोचता है कि कैसे उनको रिझाया जाए। लेकिन किसी मुस्लिम संस्था या व्यक्ति के द्वारा बड़े स्तर पर एकता का प्रयास नही देखा जाता। मात्र हिन्दू ही वसुधैव कुटुम्बकम् कहकर सबको गले लगाने की बात करता है, परन्तु इन वाक्यो को सम्पूर्णता से समझने का प्रयास नही करता। यह सम्पूर्ण श्लोक इस प्रकार है-

अयं निजः परो वेति गणना लघु चेतसाम्
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्

अर्थात : यह मेरा है, यह उसका है ; ऐसी सोच संकुचित चित्त वोले व्यक्तियों की होती है; इसके विपरीत उदारचरित वाले लोगों के लिए तो यह सम्पूर्ण धरती ही एक परिवार जैसी होती है।

स्पष्ट है वसुधा ही कटुम्ब है यह उदारचरित, सभ्य, संस्कारित, शीलवान मनुष्य/समाज के लिये है। दुष्ट, काफिर वाजिबुल कत्ल, किताल फी सबीलिल्लाह, जिहाद फी सबीलिल्लाह के हिंसक विचार को जीवन मानने वालों के लिये नहीं है।

अतः हमें समग्रता से शीघ्र ही चिंतन कर उचित कार्य करने का निर्णय लेना चाहिए अन्यथा जिन सुख सुविधाओं को जुटाने के लिए हम दिन रात एक कर रहे हैं उनको हम या हमारी पीढ़ी नही भोग पाएगी।

2000 साल पहले चीन में प्रसिद्ध एक सेनापति ने कहा था- यदि आप खुद को जानते हैं और अपने शत्रु को जानते हैं तो आप 100 लड़ाईयो में भी खतरे में नही होते हैं। लेकिन यदि आप खुद को जानते हैं और अपने शत्रु को नहीं जानते तो आपके जीतने और हारने की सम्भावनाएं बराबर होती हैं।

लेकिन हिन्दू समाज वर्तमान में स्वयं को भी अच्छे से नहीं जानता है ऐसे में क्या सम्भावनाएं हो सकती हैं इसका विचार किया जा सकता है।

अनुसूचित जाति जनजाति अत्याचार निरोधक अधिनियम का दुरुपयोग रोकने के लिए

कानून बनाए केन्द्र सरकार

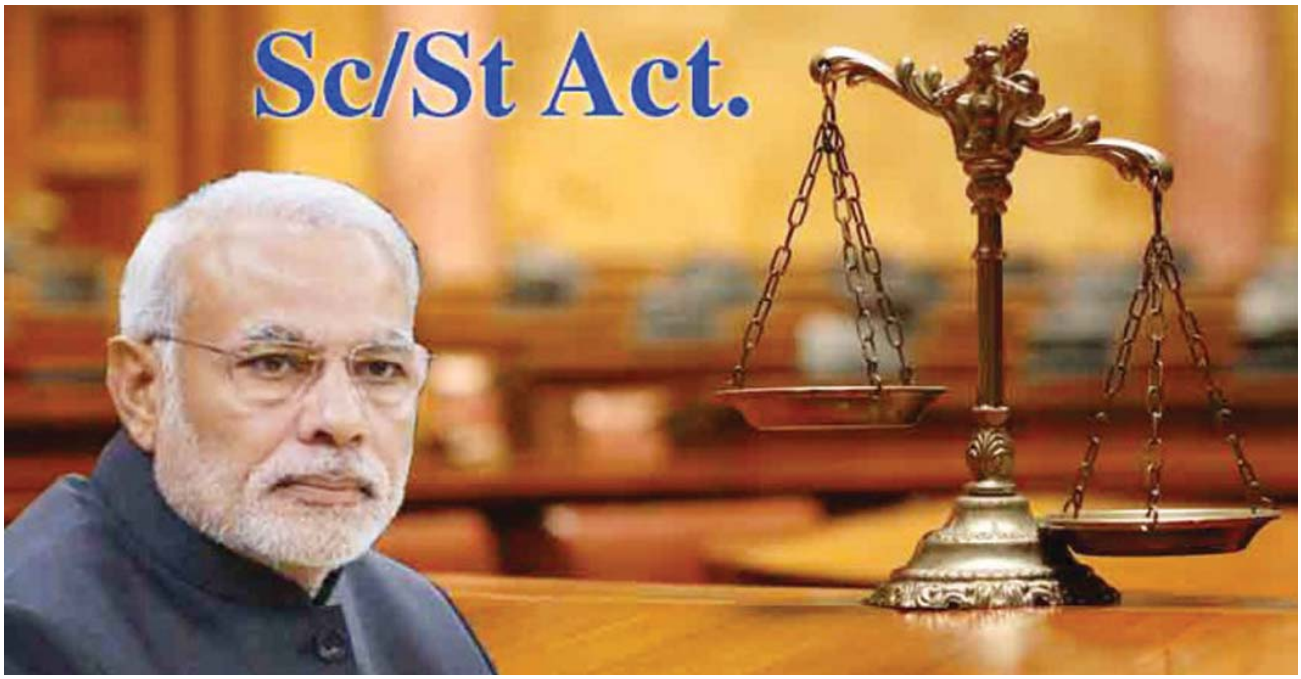

संजू चौधरी (रोरी)
राष्ट्रीय प्रचार मंत्री, धर्म रक्षक वीरांगना सेना

अनुसूचित जाति जनजाति अत्याचार निरोधक कानून 1989 में कांग्रेस की सरकार ने पारित किया था। ये कानून चुनाव से मात्र दो महीने पहले ही उस समय के प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने चुनाव में अनुसूचित जाति जनजाति के वोटरों को लुभाने के लिए बनाया था। मुस्लिम वोटरों को लुभाने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने सुप्रीम कोर्ट के शाहबानो केस में तीन तलाक पर दियेगये फैसले को कानून बनाकर पलट दिया था। इन दोनों कानूनों को बनाने के लिए तुष्टिकरण की हदें पार कर दी थी लेकिन फिर भी राजीव गांधी दोबारा प्रधानमंत्री नहीं बन पाये थे। आज फिर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एससी/एसटी वोटरों को रिझाने के लिए सुप्रीम कोर्ट के फैसले को पलट दिया है। चुनाव नजदीक आ रहें हैं और देश के प्रबुद्ध नागरिक व भाजपा का परम्परागत वोटर निराश उदास नोटा की तरफ टकटकी लगाए बैठे हैं।

आजकल चारों तरफ समाज में एससी एसटी एक्ट को लेकर चर्चा चल रही है। 20 मार्च 2018 को उच्चतम न्यायालय ने एक जनहित याचिका पर फैसला सुनाया था कि एससी एसटी एक्ट में रिपोर्ट दर्ज होने पर उसकी जांच उच्च अधिकारियों द्वारा की जाएगी और उनके ही आदेश पर गिरफ्तारी की जायेगी। क्योंकि दहेज उत्पीड़न के मुकदमों की तरह अनुसूचित जाति जनजाति अत्याचार निवारण

अधिनियम के अंतर्गत आने वाले मुकदमे भी अधिकतर झूठे व मनगढ़ंत पाये गये।

माननीय उच्चतम न्यायालय कानून के दुरुपयोग के मद्देनजर आरोपी की जांचोपरांत गिरफ्तारी का आदेश क्या दिया, आक्रोशित दलित समुदाय के समक्ष सत्ता ने घुटने टेक दिए।

न्यायिक भावना पर वर्गीय भावना हावी हो गई। आनन-फानन में संशोधन सर्वदलीय ध्वनि-मत से पास हो गया।एक बार फिर शाहबानो प्रकरण की पुनरावृत्ति हो गई।

वोट की राजनीति ने कानून को और सख्त कर दिया। अब आरोपी की गिरफ्तारी निश्चित है और उसकी अग्रिम जमानत भी संभव नहीं है।आरोपी को जेल जाना होगा, भले ही वह निर्दोष ही क्यों न हो। इस तरह के कानून से न्याय व्यवस्था कलंकित होती है जिसमें आरोपी को गिरफ्तारी के पूर्व कुछ कहने-सुनने के अधिकार से वंचित कर दिया जाता है।

- तो क्या अब कानूनी कवच पहन कर पूरा दलित समुदाय सुरक्षित हो गया ?
- क्या अब दलितों के सम्मान और शरीर आहत नहीं होंगे ?
- लेकिन कानून का दुरूपयोग नहीं होगा, इसकी गारंटी कौन लेगा ?
- इस देश में हरिश्चंद्र तो सब हैं, पर सत्य कौन है ?
- परीक्षण के पश्चात अगर आरोपी निर्दोष निकला, तो उसके द्वारा जेल में बिताए गए समय और उसके धूमिल हुए सामाजिक प्रतिष्ठा की भरपाई कैसे होगी ?

माना कि दलितों पर अत्याचार निरोध हेतु सख्त कानून होना चाहिए, परन्तु इतना भी नहीं कि कानून खुद कटघरे में खड़ा हो जाए। और समाज के इर्द-गिर्द खौफ का एक ऐसा वातावरण तैयार कर दे जिसमें जाति विशेष विषैले सर्प की तरह फुफकारने लगें।

एससी/एसटी एक्ट 2018 के अनुसार , एससी और एसटी के खिलाफ मामलों के लिए अलग से कोर्ट बनाने का भी प्रावधान है। इन अदालतों को मामले पर खुद से संज्ञान लेने की आजादी होगी। संशोधित एससी/एसटी एक्ट के तहत अब अनुसूचित जाति-जनजाति का कोई व्यक्ति अगर आप पर केवल इतना आरोप लगा दे कि इसने मुझे जातिसूचक शब्द कहे , जाति के आधार पर भेदभाव किया , सिंचाई के लिए पानी देने से मना

कर दिया वगैरह-वगैरह , भले ही वह झूठा ही क्यो न हो , बिना इन्वेस्टिगेशन , इस आधार पर ही आप पर एससी/एसटी एक्ट लगेगा और तत्काल गिरफ्तारी होगी और उससे भी ज्यादा खतरनाक बात यह है कि अपराध के मामले में आरोपी को ही साबित करना होगा कि वो दोषी नहीं है। संशोधित एक्ट के मुताबिक, कोर्ट यह मानकर चलेगा कि आरोपी अगर पीड़ित या उसके घरवालों का परिचित है तो उसे पीड़ित की जाति के बारे में जानकारी थी, जबतक कि इसका उलट साबित न हो जाए। इससे पहले तक शिकायतकर्ता पर ही सबूत देने की जिम्मेदारी थी। संशोधित एक्ट में 17 नए अपराधों को शामिल किया गया है, जिसके आधार पर छह महीने से लेकर पांच साल तक की कैद हो सकती है। चार्जशीट दाखिल करने के दो महीने के अंदर ये कोर्ट सुनवाई पूरी करनी होगी ।

- गिरफ्तारी के लिये किसी इजाजत की जरूरत नहीं होगी ।
- और अग्रिम जमानत का कोई प्रावधान नहीं होगा ।

मैं यह समझती हूं कि यह मौलिक अधिकारों का क्रूरतम दमन है । रोलेट एक्ट से भी ज्यादा खतरनाक है यह कानून । कभी मिले उन लोगो से जिन्होंने इस पीड़ा को झेला है , आज नही तो कल लोग विरोध अवश्य करेंगे, ऐसे तुष्टिकरण कानूनों का। किसी पर एक बार यह एक्ट लग जाय तो पूरा कैरियर बर्बाद हो जाएगा। यदि इस कानून का दुरुपयोग करने वालो के लिए 10 साल की जेल व 5 लाख का जुर्माना लगाने के लिए कानून नहीं बना तो देश में जातीय संघर्ष बढ़ेगा । देश की एकता अखंडता व सामाजिक सद्भाव एवं समरसता के लिए संशोधित अधिनियम पुनर्विचार का बड़ा प्रश्न है। 14 अगस्त 2018 को नोएडा में एक अपर जिलाधिकारी हरीश चंद्रा की पत्नी ने एससी /एसटी एक्ट का दुरुपयोग करते हुए सेवानिवृत्त कर्नल वीरेंद्र सिंह चौहान पर झूठा मुकदमा दर्ज करवाकर जेल भिजवा दिया था। इस पूरे प्रकरण की सी सी टीवी फुटेज सामने आने पर पता चला कि ये पूरा मामला झूठा है । इसके उलट अपर जिलाधिकारी के परिवार वालों व गनर और नौकरो ने कर्नल पर जानलेवा हमला किया था। इस कारण कर्नल वीरेंद्र सिंह चौहान को 7 दिन बाद जेल से जमानत मिल पायी नहीं तो कर्नल वीरेंद्र सिंह चौहान पता नहीं कब तक जेल में बंद रहते। सभी के यहां तो सी सी टीवी केमरे लगें नहीं है इस कारण इस एससी/एसटी एक्ट का दुरूपयोग होने की पूरी सम्भावना है ।

कुछ अनुसूचित जाति-जनजाति के लोग सरकार से मुआवजा लेने के लिए व अपनी चुनावी रंजिश के चलते इस एक्ट का दुरुपयोग करते पाए गए हैं। समाचार पत्रों में भी कभी कभी पढ़ने को मिलता है कि पहले एससी/एसटी एक्ट में केस दर्ज कर दिया बाद में मोटी रकम लेकर फैसला कर लिया। यदि ऐसा ही चलता रहा तो एक दिन रामविलास पासवान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व अमित शाह पर और मायावती योगी आदित्यनाथ महाराज पर एससी एसटी एक्ट के तहत झूठा मामला दर्ज करवा दे शायद तब इस कानून का दुरूपयोग करने वालो के खिलाफ कोई सख्त कानून बनजाये लेकिन तक बहुत निरापराध लोग जेल जा चुके होंगे।

देश में बढ़ती जनसंख्या के खिलाफ एक और आजादी की लड़ाई की आवश्यकता: केंद्रीय मंत्री गिरीराज सिंह

धर्म और राष्ट्र के लिये बलिदान होना किसी भी व्यक्ति के लिये सम्मान की बात है और ऐसे अमर बलिदानियों को याद रखना हम सबका नैतिक दायित्व है। जो कौम, जो राष्ट्र अपने अमर बलिदानियों को उचित सम्मान नही देते वो बहुत जल्दी दुनिया के नक्शे से मिटा दिये जाते हैं।' ये विचार आज शहीद मेजर आशाराम त्यागी सेवा संस्थान के तत्वाधान में आयोजित 'तर्पण-एक महाश्राद्ध' कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री श्री गिरिराज सिंह ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा की आज देश मे एक और आजादी की लड़ाई की जरूरत है और यह लड़ाई इस देश मे बढ़ती हुई जनसँख्या से होनी है। यह देश अब और जनसँख्या के बोझ को संभाल नही सकता। बढ़ती हुई जनसँख्या अब देश मे महामारी का रूप ले चुकी है।

शहीद मेजर आशाराम त्यागी सेवा संस्थान हर वर्ष पिछले 1300 साल में इस्लाम के जिहादियो से लड़कर अपने प्राण न्यौछावर करने वाले अमर बलिदानियों को श्रद्धांजलि समर्पित करने के लिये श्राद्ध पक्ष में यह आयोजन करता है।गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी कार्यक्रम का शुभारंभ 1008 दीपक प्रज्वलित करके किया गया।दीप यज्ञ के उपरांत देश के कोने कोने से आये वीर रस के कवियो ने जिनमे फिरोजाबाद से आये पूर्व सांसद श्री ओमपाल सिंह निडर, अहमदाबाद से आये हरेंद्र कुशवाहा, गोण्डा से आये चन्दन तिवारी, बुन्देलखण्ड के कवि चेतन नितिन खरे, डॉ अर्जुन सिसोदिया, मनोज मिश्रा, मनवीर मधुर, संदीप वशिष्ठ, शुभम मंगला, प्रमोद शर्मा तथा अन्य कवि थे, उन्होंने काव्य पाठ के माध्यम से अमर बलिदानियों को श्रद्धासुमन सनर्पित किये।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री श्री अतुल गर्ग ने कहा की भारतवर्ष जैसा अतुलनीय इतिहास किसी भी और देश का नही है। अब ये इतिहास अपनी आने वाली पीढ़ियों को समझाना ये हमारी जिम्मेदारी है।अगर हमने

अपनी जिम्मेदारी पूरी नही की तो आने वाली पीढियां हमे क्षमा नही करेगी। उन्होंने ऐसा कार्यक्रम प्रतिवर्ष आयोजित करने के लिये शहीद मेजर आशाराम त्यागी सेवा संस्थान के कार्यकताओं को साधुवाद दिया। कार्यक्रम में राज्यसभा सदस्य श्री अनिल अग्रवाल ने कहा की सनातन धर्म के इतिहास पर व्यापक शोध की आवश्यकता है। इस क्षेत्र में अभी बहुत काम किया जाना बाकी है। हम अपने धर्म के शाश्वत सिद्धांतो पर चलकर ही इस राष्ट्र को विश्वगुरु बना सकते हैं। सनातन धर्म के शाश्वत सिद्धांतो स हटकर तो हम अपने अस्तित्व को खो देंगे। कार्यक्रम में मुरादनगर विधायक श्री अजीत पाल त्यागी जी विधायक श्री सुनील शर्मा जी अमरीश त्यागी जी व दीपक कुमार आई पी एस बालेश्वर त्यागी जी पूर्व विधायक कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री आएँज त्यागी जी ने की संचालन संसथान के अध्यक्ष नीरज त्यागी जी व स्वागत महामंत्री श्री अक्षय त्यागी जी ने किया व संसथान के सभी सम्मानित सदस्य विशाल त्यागी मुकेश गलैहता संजय बहेडी नरेन्द्र काकडा एडवोकेट लोकेश त्यागी अजय त्यागी राजीव त्यागी प्रमोद त्यागी पूर्व पार्षद एडवोकेट रविन्द्र त्यागी कोषाध्यक्ष पकंज त्यागी आदि उपस्तिथ रहे।

अम्मा तेरे लाड़ले ने प्राण त्यागने से पहले दुश्मन का आखिरी भी टैंक तोड़ दिया है

गत रविवार शहीद मेजर आशाराम त्यागी सेवा संस्थान के तत्वावधान में हिंदी भवन, गाजियाबाद में द्वितीय 'तर्पण' कवि सम्मेलन सम्पन्न हुआ । विगत 1300 वर्षों में सनातन धर्म एवं राष्ट्र की रक्षा में प्राणों की आहुति देने वाले योद्धाओं को समर्पित इस कार्यक्रम में सर्वप्रथम उनके नाम पर दीप जलाकर; दीपदान के साथ इसकी शुरूआत हुई । तत्पश्चात अखिल भारतीय सन्त महापरिषद के संयोजक धर्मगुरु यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज, यति चेतनानन्द सरस्वती, संस्था के अध्यक्ष....., वरिष्ठ ओज कवि ओमपाल सिंह निडर आदि ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की ।

मां शारदे की वंदना के पश्चात कवि सम्मेलन का संचालन करते हुए कवि सन्दीप वशिष्ठ ने कहा-

'बिना खून का तिलक किये किसने आजादी पाई है,'
'नागों को मारे बिन किसने मणि यहां हथियाई है,'
'हमने प्रातः के सूरज को लहूलुहान होते देखा है,'
'अंधियारों से लड़कर ही तो भोर यहां पर आई है,'

युवा कवि चन्दन तिवारी 'रुद्र' के ओजस्वी काव्य पाठ से शुरू हुए कवि सम्मेलन को लगभग 6 घण्टे तक सुना गया । कवि मनोज मिश्रा (नांगलोई) ने भगवान राम पर शानदार गीत पढ़कर श्रोताओं का दिल जीत लिया ।

साइबर सिपाही के संस्थापक कवि शुभम मंगला ने कहा -

'धर्म बदलकर जीना तो मर जाने से बदतर है।'
'शायद भूल रहे हो तुम कि हम गुरु गोविंद के पुत्तर हैं।।'

कवि प्रमोद शर्मा (गाजियाबाद) ने कहा-

'न आती वो मुगल सल्तनत न झूठी प्रेम कहानी होती,'
'ताजमहल में शिवमंदिर की अपनी याद पुरानी होती'

कवि सन्दीप वशिष्ठ (दिल्ली) ने बलिदानियों को अपने काव्य पाठ से श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि-

'महान हटा देंगे अकबर से राणा को लिखवाएंगे'

कवि 'चेतन' नितिन खरे (महोबा, बुन्देलखण्ड) ने महासती महारानी पद्मिनी पर कविता पढ़कर श्रोताओं का हृदय जीता ।

कवि 'चेतन' नितिन ने कहा-

''सौम्य रूप में राधा जैसी सरल सर्जना लगती थी ।'
'रौद्र रूप में कुरुक्षेत्र की कृष्ण गर्जना लगती थी ।।'

मथुरा से आये कवि मनवीर मधुर ने अपने काव्य पाठ से सभागार में उपस्थित प्रत्येक श्रोता में रोमांच पैदा कर दिया । कवि मनवीर मधुर की पंक्तियां-

शत्रु हो समक्ष युद्ध कौशल में दक्ष तब,
सैनिकों के पक्ष में भवानी जाग जाती है,

सुनकर देर तक तालियों गड़गड़ाहट होती रही।

कवि अर्जुन सिसौदिया ने जैसे ही बलिदानी आशाराम त्यागी जी को याद करते हुए एक छंद के माध्यम से कहा-

'भारती के लाड़लों ने मातृभूमि रक्षा हेतु,'
'मौत के मुहानों का मुंह मोड़ दिया है,'
'अम्मा तेरे लाड़ले ने प्राण त्यागने से पहले,'
'दुश्मन का आखिरी भी टैंक तोड़ दिया है,'

अध्यक्षीय काव्यपाठ करते हुए वरिष्ठ कवि पूर्व सांसद ओमपाल सिंह 'निडर' ने लगभग सवा घण्टे तक अपनी बातों और कविताओं से धर्म एवं राष्ट्र जागरण का संदेश दिया । मुख्य अतिथि के रूप में आये केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने सनातन धर्म की रक्षा पर बल देते हुए एक समान नागरिक संहिता कानून बनाया जाना आवश्यक बताया । उन्होंने कहा कि यह अभियान डासना मन्दिर से निकलकर पूरे देश में फैल चुका है । इसके लिए उन्होंने धर्मगुरु यति नरसिंहा सरस्वती जी महाराज की सराहना करते हुए कहा कि महाराज श्री का यह उद्देश्य जल्दी पूरा हो ।

कार्यक्रम के अंत में अपना उद्बोधन देते हुए यति नरसिंहा सरस्वती जी महाराज ने कहा कि अपने धर्म की रक्षा हेतु बलिदान हुए बलिदानियों को याद रखना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है । उन्होंने ने देश के कवियों से उन सभी बलिदानियों के विषय में भी कवियों लिखने को कहा जिनके विषय मे वर्तमान पीढ़ी नहीं जानती । कार्यक्रम में हिन्दू स्वाभिमान की राष्ट्रीय अध्यक्षा चेतनानन्द सरस्वती जी, बाबा परमिंदर आर्य, सूर्या बुलेटिन के सम्पादक अनिल यादव, हिन्दू रक्षा दल के अध्यक्ष पिंकी चौधरी सहित सैकड़ों लोग सम्मिलित हुए ।

'यारों समझो देर नही है पुनः गुलामी आने में'

संदीप वशिष्ठ
एक कदम गौ रक्षा और मानवता के लिए

जब खुद रोटी देने वाला रोटी को मोहताज हो,
दर–दर ठोकर खाती यारों भारत माँ की लाज हो ।
बच्चे तक भी बिलख रहे हों सडकों पर भूखे नंगे,
बहला फुसला यहाँ सियासी करवा देते हों दंगे।
हर कुर्सी जब प्यास बुझाने जाती हों मयखाने में,
यारों समझो देर नही है पुनः गुलामी आने में।।

जहाँ कबीरा के भी घर में रोटी की हो लाचारी,
वाणी के जयचंद यहाँ जब कमा रहे हों धन भारी।
जब विद्वानों को भी युग में पड जाये बस विष पीना,
असुरों के हिस्से में अमृत देवों का मुश्किल जीना।
सरस्वती जब जुट जाये लक्ष्मीं के कदम दबाने में,
यारों समझो देर नही है पुनः गुलामी आने में।।

तुष्टीकरण सियासत की जब परिभाषा बन बेठी हो,
खूनी डायन तक भी अपनी भारत माँ पर ऐंठी हो।
गीदड यहाँ सवारी करते मिलते हो जब सिंहो पर,
नित्य गुलेलें दागी जाती जब निर्दोष बिहंगों पर।
बगुले सारे मछली खाकर जुटते शोक मनाने में,
यारो समझो देर नहीं है पुनः गुलामी आने में।।

जब बासंती चोले वाले भूल भगत सिंह को जायें,
मातृभूमि की रक्षा खातिर हाथ नहीं जब उठ पायें,
जब वीरों की धरती पर ना पीने को पानी हो,
कितने ही बच्चों को यारों आती नहीं जवानी हो,
जब दुश्मन का झंडा ले गद्दार जुटें फहराने में,
यारों समझो देर नही है पुनः गुलामी आने में।

जब सरकारें भूखों को सपने सुखद दिखाती हों,
काले धन या काश्मीर पर न्याय नहीं कर पाती हों।
गरीब यहाँ जब पेट भींचकर बस भूखे सो जाते हों,
नेता जी के नाती पोते छप्पन भोग उडाते हों।
रोज सियासी लगे हुए हों जनता को बहकाने में,
यारों समझो देर नही है पुनः गुलामी आने में।।

जब काशी के बाजारों में अबला बेची जाती हों,
अब तक यहाँ दुशासन द्वारा साडी खींची जाती हों।
जब भारत के न्यायालय भी न्याय नही कर पाते हों,
काश्मीर में सिर्फ जिहादी तेवर देखे जाते हों,
सभी मंत्री डरे हुए हों गोली तक चलवाने में,
यारो समझो देर नही है पुनः गुलामी आने में।

बनी लीक पर चलना ही जब सबकी मजबूरी हो,
कथनी करनी की भारत से मिट ना पाती दूरी हो,
पाखंडी का वंदन करना बन जाये जब लाचारी,
पग–पग पर लालच की खातिर पुजते हों व्याभिचारी।
ब्रह्मचारी भी आ जायें जब योवन के बहकाने में,
यारो समझो देर नही है पुनः गुलामी आने में

जब मंचों के पीछे जाकर के अय्याशी होती हो,
माँ वाणी जब आसूं भरकर फूट फूटकर रोती हो।
आजाद,भगत सिंह गाने वाले अपना मोल बताते हों,
जब लालच के ताले सबके होठों पर लग जाते हों।
कलमकार भयभीत मिले जब सच्ची कलम चलाने में,
यारो समझो देर नही है पुनः गुलामी आने में।

जब गद्दारों को नेता जी कहकर के बोला जाये,
और गरीबों के पैसों से जब उनको तोला जाये।
शैतान यहाँ जब जमें हुएं हों बस कुर्सी हथियाने को,
सदा यहाँ आतुर दिखते हो खुलकर छुरी चलाने को।
नैतिकता और राष्ट्र का रिश्ता रहता नहीं जमाने में,
यारो समझो देर नहीं है पुनः गुलामी आने में।

एससी/एसटी संशोधित कानून :

छद्म हिंदूवादियों द्वारा हिन्दुओं के साथ इतिहास का सबसे बड़ा छल

लेखक पृथ्वी राज चौहान : परिचय

सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता, हिन्दू राइट एक्टिविस्ट, नेशनल फोरम फॉर इक्वल डेमोक्रेटिक राइट्स के अध्यक्ष तथा इस पत्रिका के उप संपादक हैं।

सन् 2014 में जब भारतीय जनता पार्टी की सरकार प्रचंड बहुमत के साथ सत्ता में आई तो इस जीत में दिन रात निस्वार्थ भाव से काम करने वाले भाजपा के आम कार्यकताओं को यही विश्वास था कि अब हिन्दुओं के हितों की रक्षा होगी, वोट बैंक की घटिया राजनीति के लिए किसी का भी तुष्टिकरण नहीं किया जाएगा तथा कॉमन सिविल कॉड लागू करके सभी के लिए एक समान

कानून बनाया जाएगा परन्तु शीघ्र ही सभी का भ्रम टूट गया और परिणाम आज जातियों में विखंडित हिन्दू सभी के सामने है।

सत्ता प्राप्ति के बाद लगातार मोदी जी ने खुद को विश्व के सबसे महान सनातन धरम का सिपाही बताने की जगह हमेशा खुद को पिछड़ी जाति का व्यक्ति साबित करने की कोशिश की, चाहे राष्ट्रपति पद का चुनाव हो, पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा देने की बात हो उनकी हमेशा कोशिश यही रही वोट बैंक के लालच में धरम को बांटा जाए। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए भाजपा सरकार ने 17 अगस्त 2018 को वाजपेई जी के निधन के बाद घोषित राष्ट्रीय शोक के दिन एस सी/एस टी संशोधित कानून को राष्ट्रपति से पास करवाकर हिन्दुओं के साथ इतिहास का सबसे बड़ा छल किया। आज भले ही भाजपा हर बुरी बात के लिए विपक्ष को जिम्मेदार बताए परन्तु सच्चाई ये है कि सामान्य वर्ग के कड़े विरोध के बाद (जिसका सरकार को किंचित मात्र भी अंदाजा नहीं था) खुद के पैदा किए हुए दलदल में फस गई है।

जो सामान्य वर्ग पिछले दो दशक से इस देत्यकरी कानून की साल दर साल लगातार बढ़ती झूठी शिकायतो का शिकार हो रहा था उसे सुप्रीम कोर्ट ने संज्ञान में लेते हुए 20 मार्च 2018 को एक निर्णय दिया। सुप्रीम कोर्ट ने एससी/एसटी एक्ट के बदलाव करते हुए कहा था कि मामलों में तुरंत गिरफ्तारी नहीं की जाएगी। कोर्ट ने कहा था कि शिकायत मिलने पर तुरंत मुकदमा भी दर्ज नहीं किया जाएगा। शीर्ष न्यायालय ने कहा था कि शिकायत मिलने के बाद डीएसपी स्तर के पुलिस अफसर द्वारा शुरूआती जांच की जाएगी और जांच किसी भी सूरत में 7 दिन से ज्यादा समय तक नहीं होगी। डीएसपी शुरूआती जांच कर नतीजा निकालेंगे कि शिकायत के मुताबिक क्या कोई मामला बनता है या फिर किसी तरीके से झूठे आरोप लगाकर फंसाया जा रहा है? सुप्रीम कोर्ट ने इस एक्ट के बड़े पैमाने पर गलत इस्तेमाल की बात को मानते हुए कहा था कि इस एक्ट के तहत दर्ज होने वाली कुल शिकायतो में लगभग 75 प्रतिशत झूठी होती हैं इसके आलावा एक महत्वपूर्ण टिपपणी भी माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने की कि यदि किसी व्यक्ति को बिना जांच के झूठी शिकायत पर जेल भेजा जाता है तो इसका मतलब हम सभ्य समाज में नहीं रह रहे है। परन्तु केंद्र की भाजपा सरकार ने तुष्टिकरण की राजनीति के सारे पैमानों को तोड़ते हुए और हिन्दू समाज को बाटने की नीयत से सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले के खिलाफ पुनर्विचार याचिका दायर की जिसमे सरकार एससी-एसटी के कथित उत्पीड़न को लेकर तुरंत होने वाली गिरफ्तारी और मामले दर्ज किए जाने पर रोक लगाने वाले आदेश को चुनौती भी दी. लेकिन इस याचिका पर फैसला आने से पहले ही भाजपा सरकार ने एक नया षडयंत्र रचते हुए सुप्रीम कोर्ट के फैसले को पलटने के लिए एससी-एसटी एक्ट पर संशोधन बिल पास कर दिया तथा इस पर संसद में कोई चर्चा भी नहीं होने दी।

आज देश के हालात कुछ ऐसे हैं कि जो वर्ग आठ सौ सालों तक मुसलमानों से और दो सौ सालो तक अंग्रेजो से अपने धर्म को बचाने के लिए लड़ा आज उसी वर्ग को अत्याचारी घोषित करके अपने ही भाइयों के खिलाफ खड़ा कर दिया गया है। आपसी छोटे मोटे झगड़ों को जातीय हिंसा का रूप देने की कोशिश हो रही है तथा इस कानून के अंदर पैसों का प्रावधान करके इसके दुरपयोग के लिए उकसाया जा रहा है, जिस हिन्दू को एक होकर मुसलमानों से धर्म की रक्षा करनी थी वो अब आपस में लड़मर रहे है। इन चुनौतियों और आगामी भविष्य के खतरों को ध्यान में रखते हुए मैंने अपने गुरु यती नरसिंहानन्द सरस्वती जी के आशीर्वाद से इस विघटनकारी कानून को माननीय सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी है तथा मेरे पक्ष पर गंभीरता से विचार करते हुए माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने केंद्र सरकार को नोटिस जारी करते हुए पूछा है कि क्यों ना इस कानून को रद्द कर दिया जाए। अब देखना ये होगा कि केंद्र सरकार क्या जवाब लेकर सुप्रीम कोर्ट में आती है, मै ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि इनके कार्यकाल के आखिरी वर्ष में भगवान इन्हे सद्बुद्धि दे और सरकार कुतर्क करने की जगह सकारात्मक पहल के साथ सुप्रीम कोर्ट आए।

मुस्लिम और हिन्दू का भविष्य

मैं एक धार्मिक व्यक्ति हूं। सनातन धर्म में मेरी बहुत गहरी आस्था है। माता-पिता के दिये हुए संस्कार और सनातन धर्म की आस्थाएं और मान्यताएं मुझे ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के मौलिक सित्रान्त को मानने के लिए विवश करतीं हैं। मैं अपने बचपन के दिनों से ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का स्वयंसेवक रहा हूं। जब मैं दिल्ली आया तो मेरा सम्पर्क पूर्व सांसद श्री बैकुण्ठ लाला शर्मा 'प्रेम सिंह शेर' जी से हो गया। धीरे-धीरे वो मेरे लिए पितृवत् गुरु समान हो गए। उनके सानिध्य ने मुझे धर्म को समझने की एक अलग दृष्टि और दृष्टिकोण दिया। मेरे पूर्वजों के रक्त और संस्कारों ने मुझे समय के साथ मौलिक सिद्धान्तों को बदलना नहीं सिखाया। इसीलिए आज जब मोहन भागवतजी ने अपने अमूल्य विचार सारे विश्व के सामने रखते हुए कहा कि इस्लाम के बिना हिन्दुत्व का अस्तिव नहीं रहेगा तो मुझे अफगानिस्तान के हिन्दुओं और सिक्खों की याद

पं. हरि नारायण सारस्वत
(महामंत्री, इन्द्रप्रस्थ सारस्वत ब्राह्मण महासभा)

आ गयी। कहते हैं कि जब भारत आजाद हुआ था तब अफगानिस्तान के व्यापार में तीन चौथाई हिस्सा सिक्खों और हिन्दुओं का था। आज वहां के हिन्दुओं और सिक्खों के साथ इस्लाम ने क्या किया है, ये आपको एक छोटी सी कहानी से समझ मे आ जायेगा। ये कहानी एक बुजुर्ग सिक्ख करतार सिंह की है।

जरा ध्यान दीजिये....

अगर आप यहां मुसलमान नहीं हैं तो आप यहां के आवाम की नजरों में इंसान नहीं है और यहां जिन्दा रहने के लायक नहीं है'

उपरोक्त पंक्तियों को कहते हुए हिन्दू - सिख समुदाय अफगानिस्तान के अध्यक्ष रो पड़ते हैं। आज सुबह जब करतार सिंह नामक सिख बुजुर्ग अपनी मसालों की दुकान खोल ग्राहकों का इंतजार कर रहे थे तब उन पर एक सिरफिरे मजहबी ने चाकू से हमला कर घायल कर दिया लेकिन दुकान के उनके साथ कार्यरत सहयोगियों ने उन्हें बचा लिया!' 'जनूनी मजहबी हमलावर ने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा है कि उन पर इस तरह के हमले होते रहेंगे क्योंकि वह काफिर है और उनकी सलामती

इसी में है कि वह इस्लाम स्वीकार कर लें !'

'बुजुर्ग करतार सिंह के लिए यह हमला कोई नई बात नहीं है ! इसी वर्ष के अंदर में वह अपने संगठन के 48 युवा हिन्दुओं और सिख युवाओं की अर्थी के साक्षी रह चुके हैं ! अपनी बूढ़ी कमजोर हो चुकी आंखों से बहती अश्रुधारा पोंछतें हुए वह बताते हैं कि तालिबान के आगमन के पूर्व हुई जनसंख्या गणना में अफगानिस्तान में ढाई लाख हिन्दू और सिख परिवार थे और अब मात्र 200 हिन्दू सिख समुदाय के परिवार अफगानिस्तान में शेष रह गया है बाकी या तो मार दिये गये या पलायान कर हिन्दुस्तान या कनाडा में शरणार्थी बन कर रह रहे हैं।' 'इन शेष बचे 200 हिन्दू और सिखों के परिवारों के लिए नफरतें इतनी है कि इनके लिए सिर्फ जिंदा रहना ही चुनौती नहीं वरन अपने मृतकों तक को श्मशान तक ले जाना एक बहुत बड़ी चुनौती बन चुका है क्योंकि इनकी मैय्यत तक को जाते देख हमेशा पथराव होता है। शहर में स्थित सारे शमशान को सरकार खुद इनके दबाव में आ कर बंद करा चुकी। शमशानों को बंद करने के पिछे यह कारण दिया गया है की शहर में इनके दाह संस्कार से बदबू फैलती है।'

'हिंदू और सिखों के बच्चे वहां के स्कूल छोड़ चुके हैं क्योंकि वहां के स्कुल तक के बच्चे उन पर निरंतर काफिर कह कर हमला कर घायल करते रहे हैं । अब वहां दोनों कौमों के बच्चों को गुरुद्वारे में ही शिक्षित किया जा रहा है ! हालमंड नामक शहर में हिंदू- सिख कम्युनिटी को बीस लाख रुपए का जजिया भरने का वहां के कट्टरपंथी संगठन ने आदेश जारी किया, जिसके कारण 24 परिवारों ने वहां से पलायन कर अन्य शहर में शरण ले ली है और अब उनकी जमीन जायदाद पर उन्हीं संगठनों का कब्जा है जो उन्हें धमका रहे थे।'

'1992 के पहले अफगानिस्तान में आज विलुप्त हो चुके बौद्ध और बुद्ध की मूर्तियों को भी जगह थी, सिखों हिंदूओं की फलती फूलती आबादी और आतंक रहित वतन था।' 'पाकिस्तान ने युवाओं को कट्टर वहाबी विचारधारा में धकेल दिया और फिर तब से हिन्दुओं सिखों पर अत्त्याचार बहुत तेजी से बढ़ गया।'

इस्लाम के अत्याचारों से पीड़ित गैर मुस्लिमों को पलायन करना पड़ता है या धर्मपरिवर्तन करो या दर्दनाक अत्याचारों से मृत्यु को गले लगाओ....'जहां जहां और जब जब हिंदुओं की जनसंख्या घटी और मुसलमानों की संख्या बढ़ी वहां वहां तब तब हिंदुओं पर इस्लाम का अत्याचार हुआ।' 'हिंदुओं की यही दशा पाकिस्तान, बांग्लादेश, कश्मीर व देश में बनें हजारों मिनी पाकिस्तान में होती जा रही है।'

हिन्दू ये न सोचें कि जो अफगानिस्तान में हुआ है वो यहां नहीं होगा। जैसे-जैसे हिन्दू जनसंख्या का अनुपात घटेगा । सारे राजनैतिक दल तथा वो लोग जो राजनीति पर निर्भर हैं, मुस्लिम परस्त होते चले जायेंगे और धीरे-धीरे भारतवर्ष अपना अस्तित्व खो देगा। अब हिन्दू को निर्णय करना है कि वो क्या करेगा? हिनदू संगठनों ने तो अपना मंतव्य स्पष्ट कर दिया है।

विनोद कुमार सर्वोदय
(राष्ट्रवादी लेखक व चिंतक)

बाहें पसारता हिन्दू समाज

बाहें पसारता हिन्दू समाज कब तक सैकड़ों वर्षों से आत्मसमर्पण की पराजित भावनाओं से घिरा रहेगा । राष्ट्र के प्रति सर्वाधिक प्रतिबद्ध 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' के प्रमुख श्री मोहन भागवत जी ने पिछले दिनों एक तीन दिवसीय कार्यक्रम में अनेक बिंदुओं पर अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करके सम्पूर्ण भारतीय समाज को अपने मानवतावादी विचारों से अवगत करवाया।। मुख्यतः उनका लक्ष्य अनेक सम्प्रदायों में विखरे हुए समाज को संगठित करके देश के सशक्त निर्माण में उनकी भागेदारी सुनिश्चित करने का सकारात्मक प्रयास है ?

लेकिन उनके वक्तव्य के कुछ मुख्य बिंदू अवश्य विचारणीय है, जैसे... 'जिस दिन हम कहेंगे कि मुसलमान नही चाहिये... उस दिन हिंदुत्व भी नही रहेगा , जिस दिन कहेंगे कि यहां केवल वेद चलेंगे, दूसरे ग्रंथ नही चलेंगे ... उसी दिन हिंदुत्व का भाव नष्ट हो जायेगा, क्योंकि हिंदुत्व में वसुधैव कुटुम्बकम की भावना समाहित है ... जितने भी सम्प्रदाय जन्में है सबकी मान्यतायें है, हिंदुत्व के दर्शन में किसी भी सम्प्रदाय से अलगाव नही है।'

इतिहास में भी प्रायः मुसलमानों का गुणगान करते हुए यह पढ़ाया जाता है कि वे बाहर से आये और हमारे ऊपर 600-700 वर्षो तक राज किया और उनमें से एक अकबर को महान बना दिया गया। लेकिन उन्होंने हमारे मठ-मंदिरों का विंध्वंस किया, हमारे लाखों - करोड़ों पूर्वजों का बलात धर्मांतरण व भयानक नरसंहार करने के अतिरिक्त हमारी बहन-बेटियों पर अमानवीय अत्याचार किये आदि के इतिहास को साम्प्रदायिक सौहार्द बनाये रखने के लिये हमारे नीतिनियन्ताओं ने अधिक महत्व नही दिया।

यहां एक अत्यंत कष्टकारी बिंदु सोचने को विवश करता है कि जब अन्य सम्प्रदाय 'हिंदुत्व' के प्रति सौहार्द के स्थान पर वैमनस्यपूर्ण व्यवहार करते आ रहे थे, है और भविष्य में भी उसमें कोई परिवर्तन होने की संभावना शिथिल हो तो ऐसे में क्या किया जाय? क्या उन सम्प्रदायों की भारत के मूल निवासियों के बलात धर्मांतरण की अनाधिकार चेष्टा उचित है ? क्या उनको अपने-अपने सम्प्रदाय को श्रेष्ठ स्थापित करने की दूषित महत्वाकांक्षा के वशीभूत 'हिंदुत्व' पर अत्याचार करते रहने का

मौलिक अधिकार मिला हुआ है? जबकि हमारा इतिहास साक्षी है कि आक्रांताओं और धर्मांधों की हमारी संस्कृति और धर्म को नष्ट करने के लिये किये गये अत्याचारों की कोई सीमा नहीं थी।

वर्तमान में भी ऐसे कट्टरपंथी साम्प्रदायिकता को भड़का कर हिन्दू समाज को शांतिपूर्वक जीवन निर्वाह करते रहने में बाधक बनें हुए है। विभिन्न गावों व नगरों में प्रायः होने वाले साम्प्रदायिक दंगे व आतंकवादियों के द्वारा निर्दोष और मासूमों को बम विस्फोटो से उड़ाना आदि कट्टरपंथियों के घिनौने प्रदर्शन अभी भी अनियंत्रित है। ऐसे में हम सबकी मान्यताओं का सम्मान करते हुए एक तरफा सहिष्णु बनकर कब तक अपने आप को आहत होते देखते रहें? अपने अस्तित्व की रक्षार्थ कर्तव्यविमुख होकर केवल उदारता व अहिंसा के गुणगान करने से क्या हम आत्महत्या के पाप का भागी नही बन जाएंगे? हम कब तक बाहें पसारें सभी को गले लगाने को आतुर होते रहेंगे?

जब 90 वर्षो से 'हिंदुत्व ही राष्ट्रीयत्व है' की प्रेरणा से करोड़ों देशभक्तों का निर्माण करने वाला 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' अपने ही सिद्धान्तों और आदर्शो पर प्रश्नचिन्ह लगायेगा तो 1300 वर्षो से चल रहे जिहादियों के अत्याचारों पर अंकुश लगा कर मानवता की रक्षार्थ कौन सतर्क होगा? क्या अपने को समयानुसार परिवर्तनशील ,उदारवादी व सामाजिक समरसता में ढलने का ज्ञान बाटनें वाला हिन्दू समाज जिहादी दर्शन में भी परिवर्तन करवाने का प्रयास करेगा? हिंदुओं से ही सदैव यह आशा क्यों की जाती है कि वे ही अपने आप को इस्लाम व ईसाईयत के अनुरूप ढाल लें और एक तरफा उदार व सहिष्णु बनें रहें...क्या यह दृष्टिकोण हिंदुओं की सनातन आस्थाओं और श्रद्धाओं को आहत नही करेगा? हमारी व हमारे नेताओं की भावनावश हिन्दू-मुस्लिम सांझी परंपराओं व सांझे पूर्वजों का गुणगान करने से भी मुसलमानों की जिहादी मनोवृति को प्रभावित नही किया जा सकता। लेकिन ऐसे सद्भावनापूर्ण प्रयासो से हिन्दू अवश्य भ्रमित होता आ रहा है। इसलिये आज भी हमारे अनेक महापुरुषों का विचार कि 'सहनशील व सहिष्णु होना अच्छा गुण है, परन्तु अन्याय का विरोध उससे कई गुणा उत्तम है' प्रसांगिक है। धमार्नुसार न्याय के साथ सहिष्णुता का व्यवहार व अन्याय के साथ असहिष्णुता का मार्ग ही स्वधर्म रक्षार्थ आवश्यक

होता है।

सामान्यतः विश्वबंधुत्व की भावना के कारण ही हम हिन्दू मित्र व शत्रु में भेद नही कर पाते जिससे वर्तमान व भविष्य के संकटो से अनभिज्ञ रहते है। परिणामस्वरूप धर्म व देश की रक्षार्थ उदासीन हो जाते है। स्वातंत्र्यवीर सावरकर जी का दूरदर्शी संदेश आज भी प्रसांगिक है, उन्होंने कहा था कि 'जिस राष्ट्र की जनता शत्रु और मित्र को पहचानने में भूल करती है, उस राष्ट्र को उस भूल का भयंकर परिणाम भुगतना पड़ता है'। हमारे ग्रंथों में भी यह स्पष्ट आदेश है कि 'मित्र के साथ मित्रवत व शत्रु के साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार ही उचित रहता है'।

धमार्धारित देश के विभाजन के उपरांत भी पाकिस्तान, बांग्लादेश व कश्मीर आदि मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में ही अब तक लगभग एक करोड़ से ऊपर हिंदुओं का धर्म के नाम पर बलिदान हुआ हो तो कोई आश्चर्य नही होगा। परंतु जब हमारे धमार्चार्यों व नेताओं को सर्वधर्म समभाव, सहिष्णुता, उदारता व अहिंसा के उपदेश देने में ही परम आनन्द आता हो तो धर्मांधों व जिहादियों का दुःसाहस बढ़ना स्वाभाविक ही है।

हिंदुओं में तेजस्विता का अभाव और उनकी समझौतावादी मनोवृत्ति ने भी हिन्दू विरोधी षड्यंत्रकारियों को उत्साहित किया है। बाहें पसारता हिन्दू समाज कब तक सैकड़ों वर्षों से आत्मसमर्पण की पराजित भावनाओं से घिरा रहेगा? हम कब तक यह सोचने को विवश होते रहेंगे कि भारत में राष्ट्रभक्ति रहित राजनीति के वर्चस्व से कब छुटकारा मिलेगा ? विशेषतौर पर आज की लोकतांत्रिक व्यवस्था में जब मुख्य रूप से धार्मिक अल्पसंख्यकों के साथ पक्षपातपूर्ण व्यवहार की प्रमुखता से धर्मनिरपेक्षता जर्जर हो रही हो और सुरक्षित, सुदृढ़ व गौरवशाली भारत के निर्माण की योजनाओं की प्राथमिकता का अभाव हो रहा हो।

ध्यान रहें 'वसुधैव कुटुम्बकम' के मंत्र से संस्कारित 'हिंदुत्व' अपने शास्त्रों के ज्ञान के आधार पर मानवता की रक्षा करके उसको ऊजार्वान व प्रकाशवान करना चाहता है। ऐसे में जो दर्शन मानव समाज को विभक्त करते हो तो उसमें संशोधन करवाने का (सम्पूर्ण समाज को अपना परिवार मानने वाली) भारतीय संस्कृति भी दायित्व निभाये तो अनुचित नहीं होगा।वैसे भी हिंदुत्व में अलगाववाद का कोई स्थान नही तो उसे अलगाववादी दर्शन का विरोध तो करना ही चाहिये।

आज जब संघ के द्वितीय प्रमुख गुरु गोलवरकर जी की पुस्तक 'द बंच ऑफ थॉट्स' की समीक्षा करके हिन्दू समाज बाहें पसारने को आतुर है, तो अन्य सम्प्रदायों को भी अपने अपने रूढ़िवादी ग्रंथो की समीक्षा करनी चाहिये। अतः सभी सम्प्रदायों के धार्मिक विद्वानों का भी यह दयित्व है कि वे अपने धर्म ग्रंथों और विद्याओं में आवश्यक संशोधन करके भारत सहित सम्पूर्ण विश्व को सकारात्मक संदेश देकर सभ्यताओं में हो रहे टकरावों को दूर करें।

लंगड़ा-लूला लोकतंत्र

यदि जन प्रतिनिधि उत्तर विधि द्वारा चुने जाते हैं तो शासन की जनतंत्र अथवा प्रजातंत्र पद्धति सर्वोत्तम है। भारत के लिए यह पद्धति कोई नवीन पद्धति नहीं है जिसे 26 जनवरी सन् 1950 से लागू किया गया था अपितु इसकी झलक रामायण काल से भी मिलती है। महाराज दशरथ ने जब राजसभा में भगवान श्रीराम को राजा बनाने का प्रस्ताव रखा तो वहां उपस्थित सभी राजाओं ने प्रजाजनों ने, वशिष्ठ आदि ब्राह्मणों ने तथा नगर के सभी प्रतिष्ठित लोगों ने इस प्रस्ताव का जोरदार समर्थन किया। वह समर्थन इतना उच्च स्वर में था कि राजसभा भव कांपता सा प्रतीत हुआ। इसीलिए तो रामराज्य की आजतक प्रशंसा करते हैं। उनके राज्य में चोरों, डाकुओं और लुटेरों का कहीं भी नामोनिशान तक नहीं था। दूसरे के धन को लेने की बात तो दूर कोई छूता तक नहीं था। गोस्वामी तुलसीदार जी ने लिखा है-

दैहिक, दैविक भौतिक तापा।
रामराज्य नांहि काहुहि व्यापा।।
सब नर करहिं परस्पर प्रीति।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति।।

लेकिन आज के युग में विशेषकर भारत में क्या हो रहा है? यत्र-तत्र-सर्वत्र अराजकता, लूटपाट और भ्रष्टाचार का नग्न ताण्डव नृत्य दिखाई देता है।

नीता सिंह

ग्राम सभा से लेकर संसद तक प्रायः अयोग्य, बेईमान, भ्रष्ट व दुश्चरित्रवान लोगों के सत्ता पर काबिज होने के कारण यह सब हो रहा है। कुछ अच्छे निष्ठावान लोग भी हैं जिनके कारण थोड़ा बहुत नियंत्रण है और देश में कुछ प्रगति दिखाई देती है। प्रश्न उठता है कि अयोग्य और भ्रष्ट लोग हम चुनते ही क्यों हैं? इसके लिए कुछ तो हम भी दोषी हैं तथा काफी हद तक चुनाव प्रक्रिया दोषी है। निम्नलिखित पहलुओं पर विचार विमर्श करके आवश्यक संशोधन के द्वारा हम अपनी लोकतंत्र प्रणाली में सुधार ला सकते हैं तथा देश जनहित के लिए अधिक प्रभावी बना सकते हैं:-

जन प्रतिनिधि बनने हेतु योग्यताएं

प्रत्येक स्तर पर सरकारी कर्मचारी बनने के लिए शैक्षणिक योग्यता, शारीरिक योग्यता, कार्य निष्पादन की क्षमता, न्यूनतम आयु तथा अवकाश देने की आयु निर्धारित होती है लेकिन कितनी आश्चर्यजनक बात है कि ग्राम सभा, नगर पालिका, नगर निगम, विधानसभा, विधान परिषद, लोकसभा तथा राज्य सभा का सदस्य बनने के लिए केवल आयु को छोड़कर और किसी प्रकार की शैक्षणिक या शारीरिक योग्यता की आवश्यकता नहीं है। आयु में भी केवल न्यूनतम आयु की शर्त है। उच्चतम आयु या अवकाश प्राप्त करने की आयु की कोई सीमा निर्धारित नहीं है। इन्हीं कमियों के कारण अयोग्य व्यक्ति चुन लिए जाते हैं तो आगे चलकर पूरे तंत्र को अक्षम और भ्रष्ट करते हैं या बिगाड़ने में सहायक हो सकते हैं। ये बहुत बड़ी कमियां हैं जिन्हें निम्नलिखित नियम बनाकर यथाशीघ्र दूर करने की आवश्यकता है:-

1.न्यूनतम आयु के साथ ही साथ अधिकतम आयु भी 70 वर्ष होनी चाहिये।

2.न्यूनतम शिक्षा का स्तार निर्धारित करना चाहिए।

3.विधानसभा/विधानपरिषद, लोकसभा तथा राज्यसभा के सदस्य हेतु भारतीय संविधान,इतिहास तथा भूगोल का अच्छा ज्ञान होना चाहिये तथा इसकी परीक्षा देकर उसका पास होने का प्रमाणपत्र भी प्राप्त होना चाहिये।

4.देशभक्त,सेवाभावी,ईर्ष्या से रहित,निष्पक्ष, ईमानदार,कर्तव्यनिष्ठ,शीलयुक्त,निर्भीक किन्तु ईश्वर से डरने वाला,चरित्रवान,सत्य बोलने वाला, जितेन्द्रिय, दुखियों को सान्त्वना देने वाल, मधुर भाषी,आसानी से उपलब्ध तथा विपत्ति में सहायता करने वाला होना चाहिए।व्यसनी नहीं होना चाहिए।

5. आजकल राजनीति को कुछ लोगों ने व्यवसाय बना लिया है तथा इसके माध्यम से अपने प्रभाव का प्रयोग करके अपने रिश्तेदार व मित्रों को अनुचित लाभ पहुंचाते हैं।ऐसे लोगों का राजनीति में प्रवेश निषिद्ध होना चाहिये।

मतदाता बनने हेतु योग्यताएं

वैसे तो मतदाता आज काफी जागरुक हो गया है फिर भी कुछ मतदाता अभी भी ऐसे हैं जो छोटे-छोटे शराब, चंदे व रुपयों के लालच में आकर गलत उम्मीदवार को अपना बहुमूल्य मतदान कर देते हैं।इसके

परिणाम स्वरूप अयोग्य और भ्रष्ठ उम्मीदवार सफल हो जाता है।कुछ मतदाता अशिक्षित और मंदबुद्धि होने के कारण अपने मत का ठीक से उपयोग भी नहीं कर पाते।अतः जन सम्पर्क कर मतदाता को भी जागरुक करना चाहिए।मतदान के महत्व से परिचित कराना चाहिए।प्रजातंत्र में प्रजा से तात्पर्य एक सभ्य और सुसंस्कारित नागरिकों के समूह से है,भीड़ से नहीं जिसमें सोचने तथा समझने की क्षमता या शक्ति होती ही नहीं।

संविधान विशेषज्ञों की स्थायी समिति

हमारे संविधान निर्माताओं ने भारतीय संविधान को लचीला बनाया है तथा आवश्यकतानुसार इसमें संशोधन हेतु इसके अनुच्छेद 368 में प्रावधान किया गया है।इसके अनुसार अभी तक संविधान में अनेकों संशोधन हो भी चुके हैं।इसके अनुसार अभी तक संविधान में अनेकों संशोधन हो चुके हैं। चुनाव प्रक्रिया में निरंतर सुधार की आवश्यकता हे। इतः इसके लिए संविधान विशेषज्ञों की एक स्थायी समिति के गठन की आवश्यकता है जो योग्य उम्मीदवार के चयन में उचित सहयोग दे व मार्गदर्शन प्रदान करे और आवश्यक संविधान संशोधन हेतु संसद को अपनी सिफारिश भेजे।

कोई भी प्रबंध समिति चाहे वह सरकारी हो या प्राइवेट,विधायिका आदि, यदि उसके सदस्य अयोग्य होंगे या बेईमान होंगे तो वह कभी भी जनता की भलाई के कार्य सफलतापूर्वक नहीं कर सकती। अथर्ववेद में कहा गया है-

सभ्यं सभा मे पाति ये व सभ्याः सभासदः।।

अथर्ववेद 19/55/6

राजा अथवा सभाध्यक्ष सभी सभासदों को आज्ञा दें कि हे सभा के मुख्य सभासद! तू मेरी सभी की धर्मयुक्त (उचित) व्यवस्था का पालन कर और सभा के जो अन्य सभी सभासद हैं वे भी सभा की व्यवस्था का पालन किया करें।इसका भावार्थ यह है कि किसी भी एक को स्वतंत्र राज्य का अधिकार नहीं देना चाहिए।किन्तु राजा जो सभापति है (आज के समय राष्ट्रपति व राज्यों के राज्यपाल हैं) उसके अधीन सभा (संसद आदि) के अधीन सभापति और राजा और सभा प्रजा के आधीन और प्रजा राजसभा के आधीन रहे।यही वेदकालीन लोकतंत्र की व्यवस्था है तथा वर्तमान शासन व्यवस्था लगभग उसी के अनुसार है।किन्तु योग्य सदस्यों (सांसद, विधायकों आदि) का स्थान अधिकतर अयोग्य व भ्रष्ट लोगों ने ले लिया है जिसे ठीक करने की बहुत आवश्यकता है, तभी सच्चे अर्थ में स्वस्थ व हृष्ट-पुष्ट लोकतंत्र स्थापित हो सकेगा।

A Home for Every one

Golden Wave Infratech Pvt. Ltd.

Visavi CO. PVT. LTD.

103, PANCSHEEL ENCLAVE, LAL KUAN, G.T. ROAD, GHAZIABAD Phone Office : +91-9871303060
E-mail : info@visavi.in | Web : www.visavi.in
Sanjay Yadav Director

Products List

SHIVORINE
Blood Purifire Syrup

SHIVOREX
Cough Syrup

SHIVOLIV 59
Syrup

SHIV-SUDHA
Uterine Tonic

SHIVONIGHT
Power Capsule

SHIV AYURVEDIC
Hair Oil

- कुर्मायासव
- अमृतारिष्ट
- अर्जुनारिष्ट
- पूर्नवारिष्ट
- दाक्षासव
- अशोकारिष्ट
- अश्वगंधारिष्ट
- खादिरिष्ट
- चंदनाआसव
- शिवारिष्ट
- दशमूलारिष्ट
- अभियारिष्ट
- वासारिष्ट
- कुर्टजारिष्ट

SHIV AYURVEDIC AUSHDHALAYA

Shiv Ayurvedic Aushdhalaya

Head Office : Sec-8/113, Chiranjeev Vihar, Ghaziabad
Branch Office : H. No.57, Nehru Chowk, Bhokerheri, Muzaffarnagar
B-5, Rkpuram, Govindpuram, Ghaziabad
Website : www.shivayurvedicaushdhalaya.com

सूर्या इन्क्लेव

सूर्या नगर

निकट बांके बिहारी डेन्टल कॉलेज
मसूरी, गाजियाबाद

- एन-24 से पैदल दूरी पर
- पानी-बिजली की समूचित व्यवस्था
- पक्की नाली व काली सड़कें
- स्कूल, अस्पताल, पार्क की भी व्यवस्था

हेड ऑफिस :- RDC राजनगर, गाजियाबाद

सम्पर्क सूत्र : 9654652505

माँ जगदम्बा महाकाली डासना वाली का परिवार

हिन्दू स्वाभिमान

शिव शक्ति धाम में

1 नवम्बर 2018 से

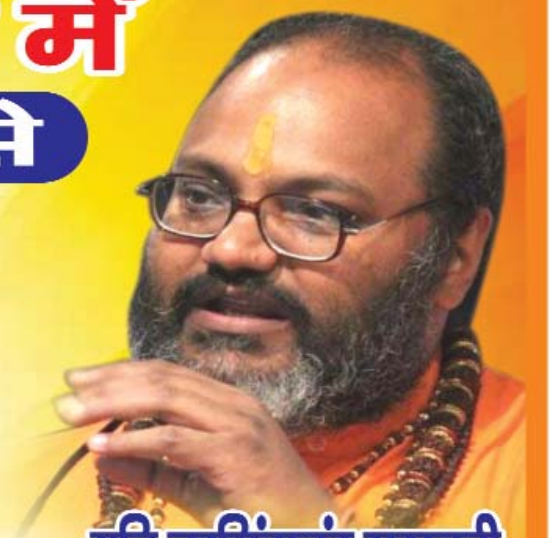

यति नरसिंहानंद सरस्वती

चीन जैसे कठोर जनसंख्या नियंत्रण कानून

की माँग को लेकर

यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी का

आमरण अनशन

प्रत्येक जीवित भारतवासी से अनुरोध है कि यथा सम्भव सहयोग व समर्थन करें

धन्यवाद

यति माँ चेतनानंद सरस्वती | ठा. विक्रम सिंह | नीरज त्यागी | राजेश पहलवान | विक्रम यादव | अक्षय त्यागी | अधीर कौशिक | विजय यादव | अनिल यादव

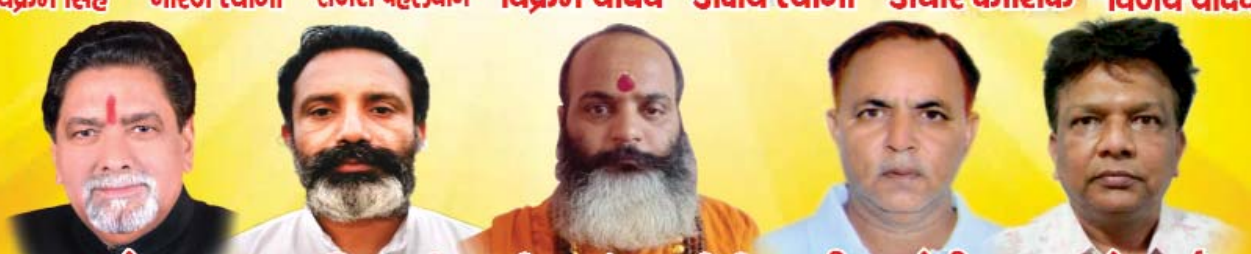

डा. तोमर | बाबा परविन्द्र आर्य | श्रीकृष्णानंद सरस्वती जी | धीरज फौजी | सुबोध गर्ग

निवेदक : माँ जगदम्बा महाकाली डासना वाली का परिवार